Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

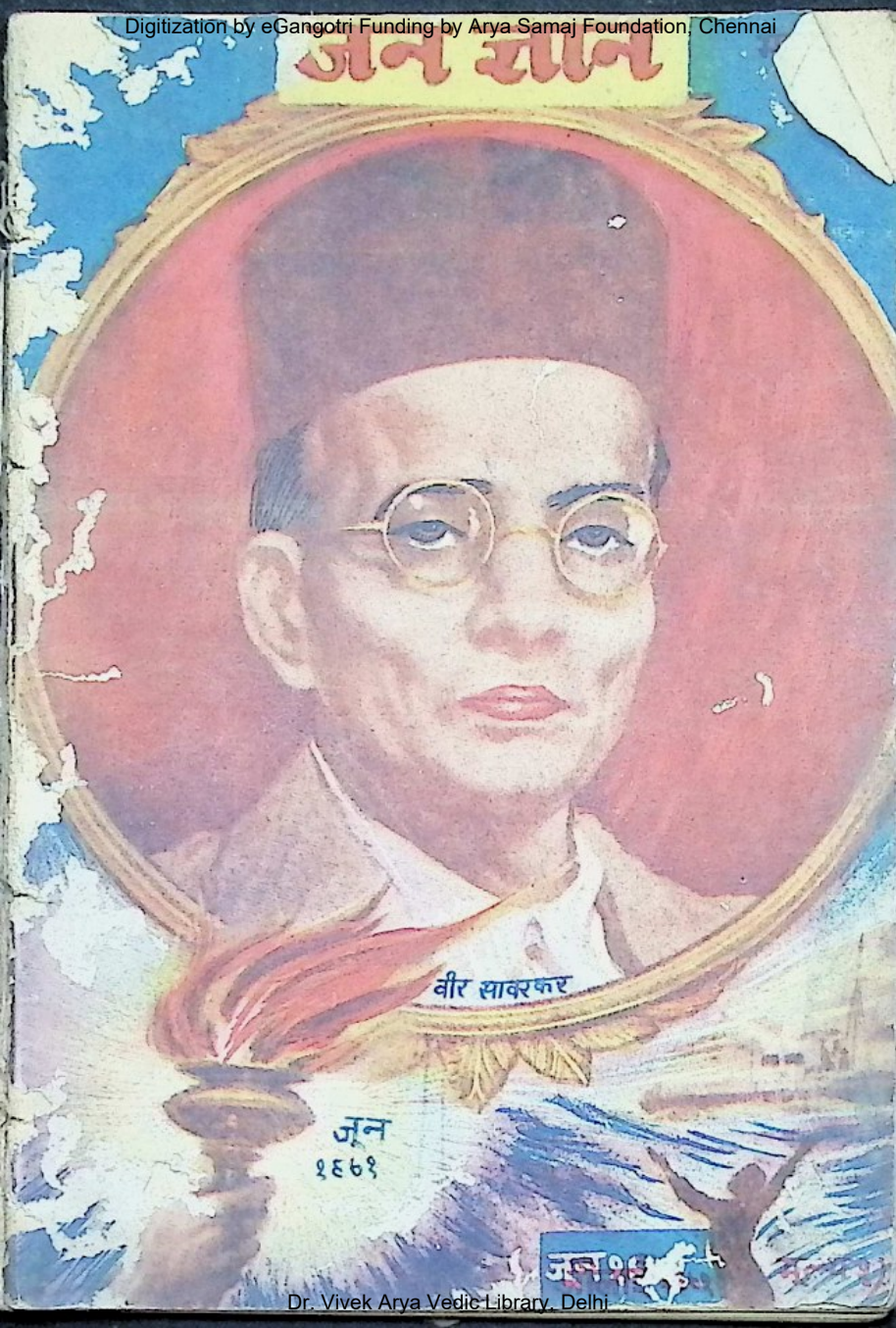

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में प्रस्तुत है

१—मैं हृदय मंदिर से लिख रहा हूं	... ...	३
२—संपादकीय	... ...	७
३—अंग्रेजी जीवन चरित्र उद्घाटन समारोह	... ...	८
४—आप ही के पत्र	... ...	१७
५—छोड़ो मधुमय देश हमारा (कविता)	...	२७
६—सत्य साईं बनाम उभरते मगमरच्छे (वियोगी)	...	२८
७—एक उपदेश : अनेक अर्थ—डा० रामचरण	...	३६
८—राम राज्य में—कृष्णकान्त चरला	...	४१
९—नयी धरती : नया सवेरा—पृथ्वी चन्द्र	...	५०
१०—ईसानुयायियों के अत्याचार का इतिहास—अनूपसिंह		५३
११—गजनी की सेना—दीनानाथ सिद्धांतालंकार		५९
१२—सत्य का उपासक : दयानन्द—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार		६१
१३—आनन्द मार्ग क्या है ?—आचार्य रामानन्द		६७
१४—भोज कालीन यांत्रिक कला—विजय मिश्र शास्त्री		७५
१५—सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो —कविता		८०
१६—वेद माता का विवाह के अवसर पर उपदेश —सत्यभूषण योगी		८२
१७—पहाड़ पर यीशू का उपदेश	... ...	९४
१८—ज्योति जीवन की जगाओ (कविता)	...	९७
१९—दान सूची	... ...	९९
२०—वीर सावरकर —बनारसी सिंह	...	१०५
२१—आओ अब कुछ करें (कविता)	...	१११
२२—देवता स्वरूप भाई परमानन्द	... ...	११२
२३—शिशु संसार	... ...	११४
२४—पुस्तक सूची	... ...	११९

अगला अंक

आपको ३१ जुलाई तक पहुंचेगा, कृपया अंकित कर[illegible]—सं०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान का अगला अंक

जुलाई-अगस्त का संयुक्तांक आप के पास ३१ जुलाई तक पहुंच जाएगा

★★

यह लगभग २५०-३०० पृष्ठ का होगा, बढ़िया काग़ज :
आकर्षक आवरण : दर्जनों चित्र व महर्षि के
प्रति समस्त श्रद्धांजलियाँ उनके कार्य :
सिद्धान्त और संपूर्ण जीवन-चरित्र

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आचार्य जगदीश विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत
स्वामी सत्यानन्द जी, पं घासीराम
और पं० लेखराम जी के जीवन
चरित्रों के आधार पर

श्रद्धा, उत्साह और प्रचार के लिए अधिक-से-अधिक मंगाइए

मूल्य :: १००) सैकड़ा

—दूसरी ओर का फ़ार्म भरकर भेजिए—

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

: इसे भरकर भेजें :

ऋषि जीवन फैलाने का संकल्प

सेवा में,

श्री संचालक महोदय,
जन-ज्ञान-प्रकाशन,
नई दिल्ली-५

मैं आगामी ४८ मास में कम-से-कम ऋषि जीवन की.....प्रतियां अपने आस-पास के क्षेत्र में पहुँचाने का व्रत लेता हूँ।

कृपया पहली किश्त की ..... प्रतियां भेज दें। इनका मूल्य ..... रु० भेज रहा हूँ। शेष प्रतियां भी मैं धीरे-धीरे मंगाता रहूंगा—

भवदीय
हस्ताक्षर

नाम.....

पूरा पता .....

.....

रेलवे स्टेशन .....

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

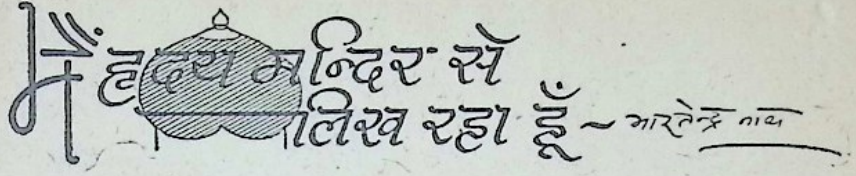

मैं आप के मन में ऋषि दयानन्द के प्रति "श्रद्धा" उत्पन्न करना चाहता हूं

मेरा मन प्रत्येक उस व्यक्ति के हृदय में (जो देव दयानन्द को अपना गुरु मानता है, "ऋषि दयानन्द की जय" बोलता है) ऋषि के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करना चाहता है। सचमुच अगर दयानन्द के सारे अनुयायी अपने गुरु पर श्रद्धा करने लग जाएं तो दयानन्द का काम अपने आप पूरा हो जाए।

आज हमारे हजारों मंदिर हैं, सैकड़ों नेता हैं; उपदेशक हैं, विद्यालय हैं, गुरुकुल हैं, संस्थाएं हैं, सबकुछ है हमारे पास, अगर नहीं है तो ऋषि के प्रति हमारे मन में श्रद्धा नहीं है। वह 'श्रद्धा' जो जीवन में प्रेरणा देती है, जो लक्ष्य के लिए जीने और मरने की कामना उत्पन्न करती है, हम में नहीं है। आप मेरी बात का बुरा न मान कर सच्चे हृदय से विचार कीजिए, चिन्तन कीजिए, ध्यान से सोचेंगे तो आप अनुभव करेंगे कि मैं सत्य कह रहा हूँ।

आप "श्रद्धा" विहीन होकर लकीर पीट रहे हैं। शब्दों से दयानन्द की जय बोल रहे हैं, पर आप के अपने व्यवहार में दयानन्द की आत्मा नहीं है। आप के पास सब कामों के लिए सब कुछ है, यदि नहीं है तो गुरु दयानन्द के लिए।

हम सभी को यह भली भांति हृदयंगम कर लेना चाहिए कि श्रद्धाआस्था ही हमारे आदर्श की बाह्य रेखा है। बिना श्रद्धा के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
सफलता या लक्ष्य हम से बहुत दूर चला जाता है। क्योंकि मनो-वांछित पदार्थ का मूल श्रद्धा द्वारा ही प्राप्त होना संभव है। "श्रद्धा" नाम है पूर्ण समर्पण का। जिस के प्रति प्रेम हो तो फिर सबकुछ उस का हो जाता है। जीवन की हर सांस तब उसी के गीत गाने लगती है और हमारा सीधा प्रश्न है कि क्या हमारा सब कुछ ऋषि के प्रति अर्पित है ?

ऋषि दयानन्द ने जो दिव्य स्वप्न देखे थे क्या उनकी पूर्ति के लिए हम अपनी सामर्थ्य का शतांश भी न्योछावर करने को तैयार हैं ?

यदि नहीं तो फिर हमें सोचना होगा कि गाड़ी कैसे चले ? श्रद्धा बिना काम नहीं चलेगा, न लक्ष्य पास आएगा। हमारी दृष्टि में तो आर्य समाज की समस्त उलझनों का कारण यह "श्रद्धा" का अभाव ही है।

इसलिए मेरी सभी ऋषि भक्तों से प्रार्थना है कि वह अपने हृदय मंदिर में श्रद्धा का दीप जलाएं। सत्य के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करें। और इसी श्रद्धा अग्नि से ज्योतिर्मय हो धरती का अंधकार दूर करने का व्रत लें। हमारे आस पास चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश हो इस के लिये मुझे प्रकाश फैलाना होगा—

प्रकाश फैलेगा गुरुदेव दयानन्द के जीवन से, ऋषि दयानन्द का आदर्श जीवन ही हमारी श्रद्धा अग्नि को ज्योतित करने की सामर्थ्य रखता है। इसीलिए आर्य समाज स्थापना शताब्दी पर हम पहली श्रद्धांजलि "ऋषि-जीवन" की आप द्वारा अर्पित कराना चाहते हैं।

आप अपनी चार वर्षीय योजना बनाएं, अभी ४८ महीने हैं। इन अड़तालीस महीनों में आप कितने ऋषि जीवन बांट सकेंगे..... बताइये, सोचिये.....निर्णय कीजिए !

प्रति मास २ भी बांटें तो भारत का प्रत्येक आर्य, दयानन्द का भक्त १०० ऋषि जीवन शताब्दी तक बांट सकता है। छोटी से छोटी आर्य समाज १० प्रतियां भी प्रति मास बांटे तो ५०० प्रतियां अगले ४ वर्ष में बांट सकती है।

ऋषि दयानन्द के भक्तो ! आप की परीक्षा की घड़ी आ गई... देखनी है आप की श्रद्धा, प्यार, आदर अपने गुरु के प्रति.....जय बोलने का निमंत्रण व्यवहारिक रूप से दे रहा हूँ, क्या आप मेरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रार्थना ठुकरा सकेंगे ?

महर्षि का महान् जीवन चरित्र श्रावणी-रक्षा बंधन से पहले पहले आप के हाथ में होगा—पहला संस्करण २५ हज़ार छप रहा है—कुल पांच लाख छापना है—अगले ४ वर्षों में—आपने ही यह काय करना है, निर्णय कीजिए कि अगले ४ वर्षों में आप कितनी प्रतियां बांटेंगे बांटते रहिए···मंगाते रहिए और दयानन्द का जीवन प्रकाश फैलाते रहिए—

मेरा मन भारत के हर घर में दयानन्द के गीत गुंजाने को उत्सुक है। भारत के प्रत्येक नागरिक तक ऋषि का दिव्य प्रकाश फैलाने के लिए मैं आप के द्वार पर आकर आप को जगा रहा हूं। दयानन्द के अनुयायियो! आप के द्वार पर ऋषि जीवन घर-घर पहुँचाने की याचना लेकर उपस्थित हूँ···आग्रह स्वीकार कर श्रद्धा से सर्वत्र दयानन्द की जय का स्वर सुनने के लिए मेरा मन मचल रहा है—

काश, कि आप का हृदय भी मेरे साथ-साथ ऋषि दयानन्द की दिव्य ज्योति फैलाने हेतु उत्सुक हो सकता—

संवरती मिट्टी : बिगड़ती आत्मा

कहते हैं जिस की मिट्टी संवर जाए वह बड़ा भाग्यशाली है। मिट्टी संवरी तो जीवन सफल हो गया। नाते रिश्तेदार, धन और परिचय सब मिलकर मिट्टी संवार देते हैं।

किन्तु आत्मा की गति व्यक्ति के कर्मों पर ही निर्भर है। उसे संवारना केवल व्यक्ति पर निर्भर रहता है। संसार के सारे भोग पदार्थ भी आत्मा को संवार नहीं सकते·····

यह तो हुयी अध्यात्म की बात पर इसी संदर्भ में आप अपने देश भारत को देखेंगे तो अनुभव होगा कि गत २४ वर्षों में उसकी मिट्टी संवरी है। उस की देह चमकी है। बांध, सड़कें, भवन, कारखाने सब ने नया जगमग रूप पाकर भारत को चमकाया है। इस की मिट्टी में चमक-दमक बढ़ी है। पर—

इस की आत्मा का धीरे-धीरे जो ह्रास हुआ। जो बिगाड़ हुआ उसने सब कुछ हिलादिया है। देश की आत्मा उस से भी अधिक बिगड़ी है, जितनी की मिट्टी संवरी है। देश की आत्मा उस देश के नागरिक हैं। नागरिकों के वह विचार हैं जिन के आधार पर वे कर्म करते हैं। ज्ञान-चिन्तन-कर्म का गहरा संबंध है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गत २४ वर्षों की धारा में "ज्ञान" अज्ञान के रूप में प्रगट हो रहा है चिन्तन में पशुता उभरी है और कर्म में राक्षसी प्रवृत्तियाँ। शिक्षा का अर्थ हो गया है उन्मुक्त उच्छृंखलता। नयी पीढ़ी में अधिकांश तत्व गुंडागर्दी से ओतप्रोत हैं। शराब-मांस-व्यभिचार आज के तीर्थ हैं। सिनेमाघर साधनास्थली और सड़कें प्रदर्शन केन्द्र।

पिछले २४ वर्ष में मेरे भारत की आत्मा की हत्या हुयी है और हो रही है। हमारा मत है कि मिट्टी के साथ यदि आत्मा नहीं सवरती तो सब कुछ व्यर्थ है। इस लिए देह के साथ आत्मा का भी शृंगार करो। देह को सजाओ वैर उसके प्राण "आत्म-तत्व" को न बिसराओ। बस यही, एक यही बात दिक विचारधारा का मूल है। 'ज्ञान' का कार्य आत्मा को सजाना और कर्म का हृदय को। ज्ञान विहीन कर्म पशुता का प्रतीक है। मन की प्रेरणा ज्ञान दे तो जीवन स्वर्ग बन जाए। धरती पर स्वर्ग लाना ही 'ज्ञान' का चरम लक्ष्य है। पुस्तकें और डिग्रियाँ हमारे प्राण को नहीं मस्तिष्क को विकसित करती हैं। मस्तिष्क खोजता है मार्ग—पर उसे जो प्रेरणा मिलती है उसी के अनुसार —उचित अनुचित का निर्णय बुद्धि करती है—बुद्धि बनती है ज्ञान से —ज्ञान के अभाव में बुद्धि निष्क्रिय हो जाती है। मन को प्रेरणा तबै मस्तिष्क देता है और वह प्रेरणा इन्द्रियों के स्वार्थ की होती है।

मनुष्य को पशु से मनुष्य बनाने के लिए ज्ञान चाहिए। ज्ञान और कर्म। का मिश्रण, सतुलन ही राष्ट्र निर्माण की स्वर्णिम आधार शिला बन सकता है

आन्दोलन नहीं: काम कीजिए

आर्य समाज के प्रत्येक शुभ चिन्तक से मेरा सानुरोध निवेदन है कि वह आन्दोलन की भावना छोड़ रचनात्मक कार्यक्रम में सीध भाग आरम्भ करे। हम अपनी शक्ति अपने आस पास के क्षेत्र में लगाएं और यत्न करें कि लोगों के सोचने का ढग बदला जाए।

युग के प्रवाह में न बहते हुए, सब से अलग, अकेले अपनी अनुपम विशेषताओं के साथ हम खड़े हों। जहाँ भी हम हैं वहाँ ही अपने विचारों का प्रचार करें। घर में दिया जलाए बिना बाहर उजाला करते फिरना उचित नहीं।

दिल्ली में आर्य समाज शकूरबस्ती के कार्य-कर्ताओं में इस रचनात्मक भावना को देख हमें प्रसन्नता हुयी। यदि सर्वत्र, बच्चों में, आस पास के रहने वालों में प्रचार की भावना, आर्य समाज के अधिकारियों के मन में जाग जाए तो सफलता बहुत समीप दीखने लगेगी।

हम जो भी करें दूसरों को दिखाने के लिए नहीं, अपितु आत्म संतोष के लिए—कहें कम, करें अधिक और निरंतर कर्म करें, तो दिव्य दयानन्द का भव्य स्वप्न साकार हो सकता है—

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

आत्मचिन्तन यज्ञ

वेद का उपदेश है— यज्ञं नयताग्रे

(यज्ञम्) यज्ञ को (अग्रे) आगे (नयत) ले चले

"यज्ञ" का अर्थ है श्रेष्ठतम कर्म और वेद का आदेश है कि हम श्रेष्ठतम कर्मों को आगे ले जायें, बढ़ायें और उनका विस्तार करें।

श्रेष्ठ क्या है ? जो "आनन्द" का मूल बन सके। जिस कार्य से दुःख मिले वह श्रेष्ठ नहीं। हमारे विचार, चिन्तन, कर्म प्रत्येक में एक ही भाव हो कि आनन्द कैसे मिले ? आनन्द और सुख में अन्तर है। दुःख और कष्ट में जो अन्तर है वह हम समझें और ऐसे कर्म करते जाएँ कि कष्ट में भी आनन्द अनुभव कर निरन्तर पवित्र यज्ञ होता रहे।

धरती पर अधर्म का साम्राज्य स्थापित है। संघर्ष और किसी भी वाद का हो ही नहीं सकता। मार्ग केवल दो हैं धर्म का या अधर्म का। 'धर्म' का नाम लेने वाले भी धर्म को छोड़ चुके हैं क्योंकि यज्ञ का भाव उनमें नहीं है।

जीवन कब तक रहेगा, कौन जानता है, इसलिए इस जीवन का उपयोग—हम गति के लिए करें। हम ऊपर उठें, मनुष्य और देव बनें। धर्म का रथ ऊपर-ऊपर उठता जाता है, यह सत्य हम समझें और अपने मन-मस्तिष्क को ईर्ष्या, द्वेष, क्लेश एवं आलस्य से मुक्त करें।

राष्ट्र का प्रत्येक अंग धर्ममय हो, जीवन का क्षण-क्षण धर्म के स्वर का गीत गाए, यह कामना अंकुरित हो जाए तो फिर विजय मार्ग प्रशस्त हो, सफलता निकट आए। निर्माण करना है मनुष्य का, व्यक्ति का, समष्टि का उद्धार स्वयं हो जाएगा। जीवन अपना बन गया तो प्रकाश स्वयं फैलेगा।

हम 'आर्य' हैं तो अधर्म के विरुद्ध युद्ध हमारा स्वाभाविक धर्म है। धर्म पर चलने का आग्रह तो हम कर सकते हैं पर आपको बाध्य तो नहीं किया जा सकता।

आप यज्ञमय बनें, यज्ञ की भावना आपके स्वांस-स्वांस में रम जाए, इसके लिए आप ही कोई मार्ग सोचिए···कैसे आपको बदला जाए ?

हम सब कुछ बदल डालना चाहते हैं जो भी काला-काला है—अंधेरा है, मन को उलझाता है—जलाता है वह सब यज्ञाग्नि में स्वाहा हो जाना चाहिए।

अपने हृदय में आत्मचिन्तन की अग्नि प्रज्वलित करो। आत्मचिन्तन के पवित्र यज्ञ को आरम्भ करो, मनुष्य और देव बनने का यह सर्वोत्तम एकमात्र मार्ग है—

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द के अंग्रेज़ी जीवन चरित्र

Life & Teachings of Swami Dayanand

का

उद्घाटन—समारोह

—सचित्र विवरण—

उद्घाटन—द्वारा श्री मोरारजी देसाई
भेंटकर्ता—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
स्वागत कर्ता—ला० रामगोपाल शालवाले
संयोजक—श्री ओम्प्रकाश त्यागी

प्रभु की कृपा से जो संकल्प महर्षि के महान् ग्रंथ अंग्रेज़ी सत्यार्थ प्रकाश व अंग्रेज़ी जीवन चरित्र के प्रकाशन का हम ने लिया था वह पूरा हुआ। जब निश्चय किया था तब साधनों के अभाव में ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सिर पर पहाड़ आ पड़ा हो·····किन्तु प्रभु ने लाज रखी, जन-ज्ञान' के मान्य सदस्यों का स्नेह आशीर्वाद मिला, और कार्य पूरा हुआ।

अंग्रेज़ी सत्यार्थ प्रकाश का उद्घाटन जहाँ श्रद्धेय महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा सम्पन्न हुआ था वहां अंग्रेज़ी ऋषि जीवन का उद्घाटन भारत की आशाओं के प्रतीक, सत्य के सजग प्रहरी, राष्ट्र के भूतपूर्व उप-प्रधान मंत्री माननीय श्री मोरारजी देसाई के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

४ मई को सांय ६ बजे आर्य समाज हनुमान रोड में यज्ञ के साथ उद्घाटन समारोह आरंभ हुआ। 'जन-ज्ञान' की संपादक श्रीमती राकेश रानी यजमान बनीं और आचार्य वीरसेन वेदश्रमी, आचार्य जगदीश विद्यार्थी, पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण ने वेद की ऋचाओं से यज्ञ संपन्न कराया (चित्र सामने के पृष्ठ पर देखें) इसके पश्चात् आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री ला०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

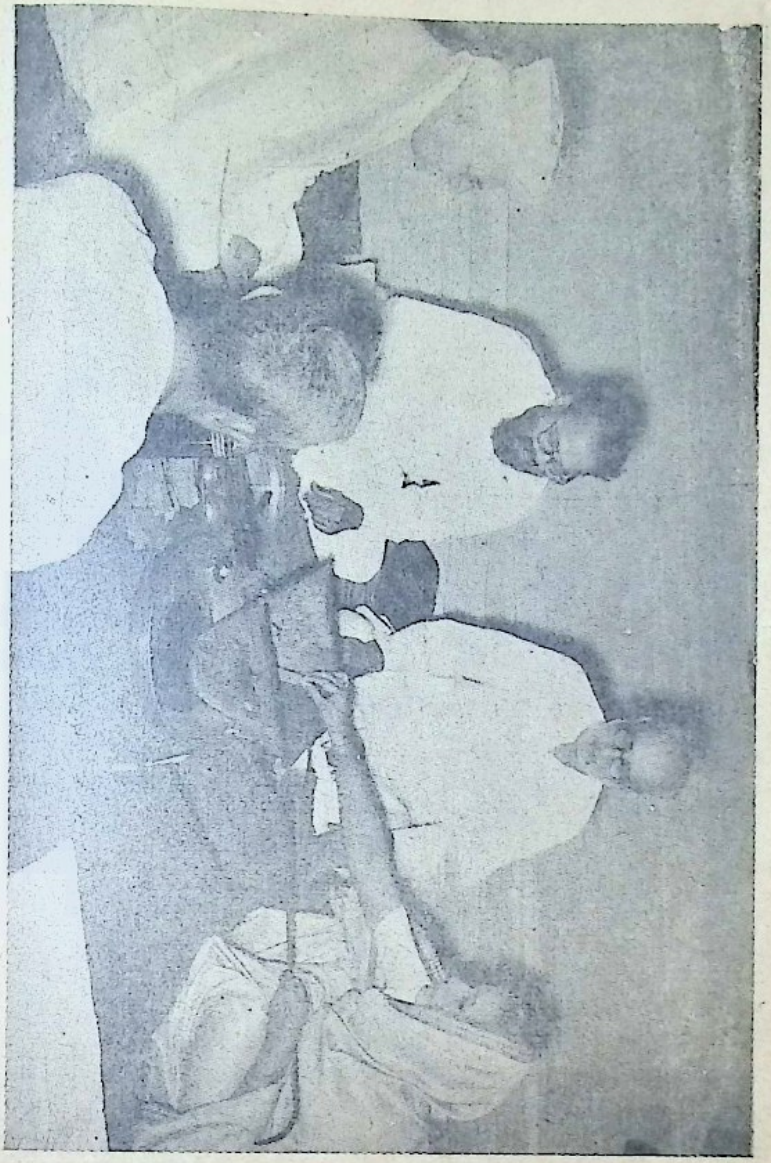

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामगोपाल जी ने पुष्प हार से श्री मोरार जी देसायी का स्वागत किया। उपस्थित जन मानस की ओर से पुष्पांजलि अर्पण का चित्र सामने के पृष्ठ पर देखिये।

सार्वदेशिक सभा के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने Life & Teaching की प्रथम प्रति माननीय अतिथि को भेंट की। श्रद्धा, उत्साह और आशा के मनहर वातावरण में संपूर्ण उपस्थित जन मानस गौरव अनुभव कर रहा था कि हम अब अपने गुरुदेव का जीवन आलोक धरती के दूर पार के क्षेत्र में भी प्रसारित कर सकेंगे।

जन-ज्ञान प्रकाशन की ओर से रा० सा० चौ० प्रतापसिंह जी ने, टंकारा ट्रस्ट की ओर से ला० दीवानचन्द जी ने, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की ओर से श्री सोमनाथ जी मरवाह ने, आर्य विद्वानों की ओर से प्रो० रत्नसिंह जी ने, ग्रंथ के संपादक मंडल की ओर से आचार्य जगदीश विद्यार्थी ने श्री देसाई का स्वागत किया।

श्री मोरारजी देसायी ने ऋषि को श्रद्धा सुमन अर्पित कर जहाँ उन्हें सत्य का प्रतीक बताया वहाँ श्री रामगोपाल जी शालवाले ने सत्य की ज्योति को सर्वत्र प्रसारित करने का आवाहन किया। श्री के० नरेन्द्र ने व्यापक रूप में आदर्शों को व्यावहारिक रूप देने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने ऋषि दयानन्द के सच्चे रूप से सभी को परिचित कराने की आवश्यकता पर बल दिया और सब से अन्त में आर्य समाज के गौरव आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने आशीर्वाद देते हुए ऋषि का संदेश भू मंडल पर फैलाने के जन-ज्ञान-प्रकाशन के प्रयत्नों की सराहना की।

नन्हीं बालिका "ऋचा" ने भावी का प्रतीक बन ला० रामगोपाल जी के भाषण के मध्य श्री मोरार जी को पुष्प माला पहनायी तो तालियाँ अपने आप बज उठीं चित्र में लाला जी देख रहे हैं कि यह क्या हुआ, और मोरार जी बच्ची को दुलार रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

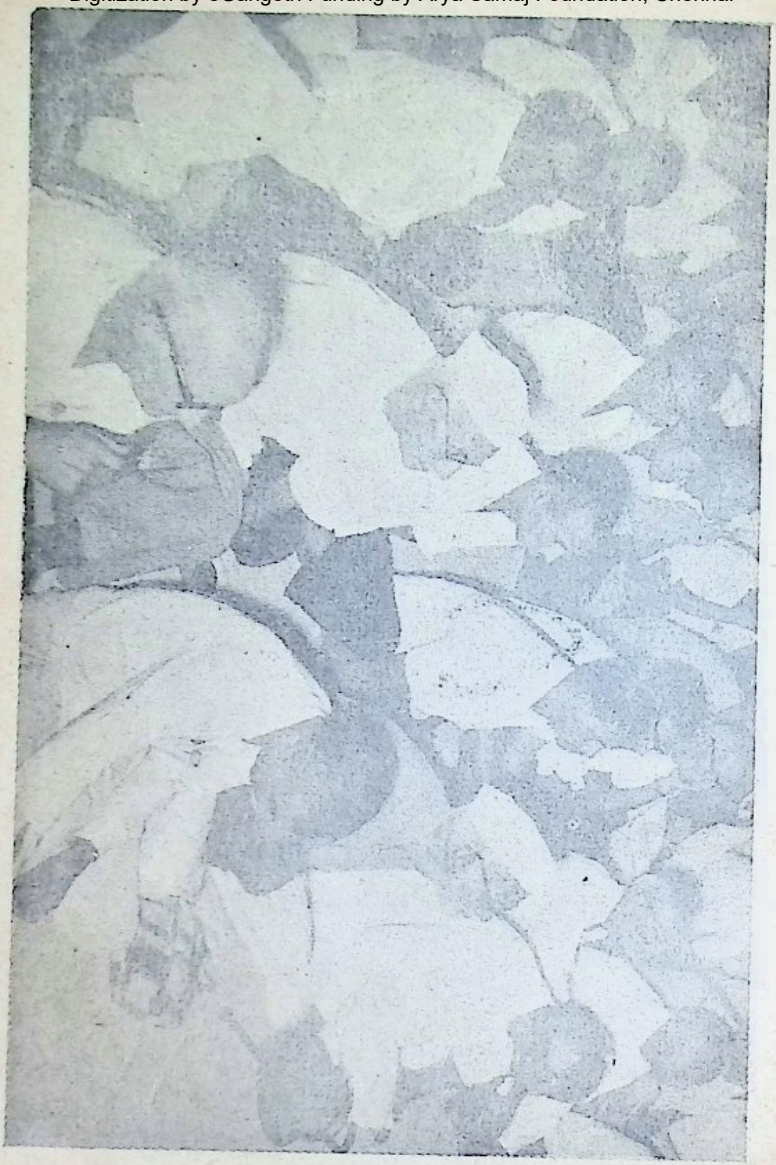

उद्घाटन समारोह में उपस्थित जन समूह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Life & Teachings of Swami Dayanand

की प्रथम प्रति सार्वदेशिक सभा के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने श्री मोरार जी देसाई को भेंट की। बीच में जन-ज्ञान के संचालक पं. भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार खड़े हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

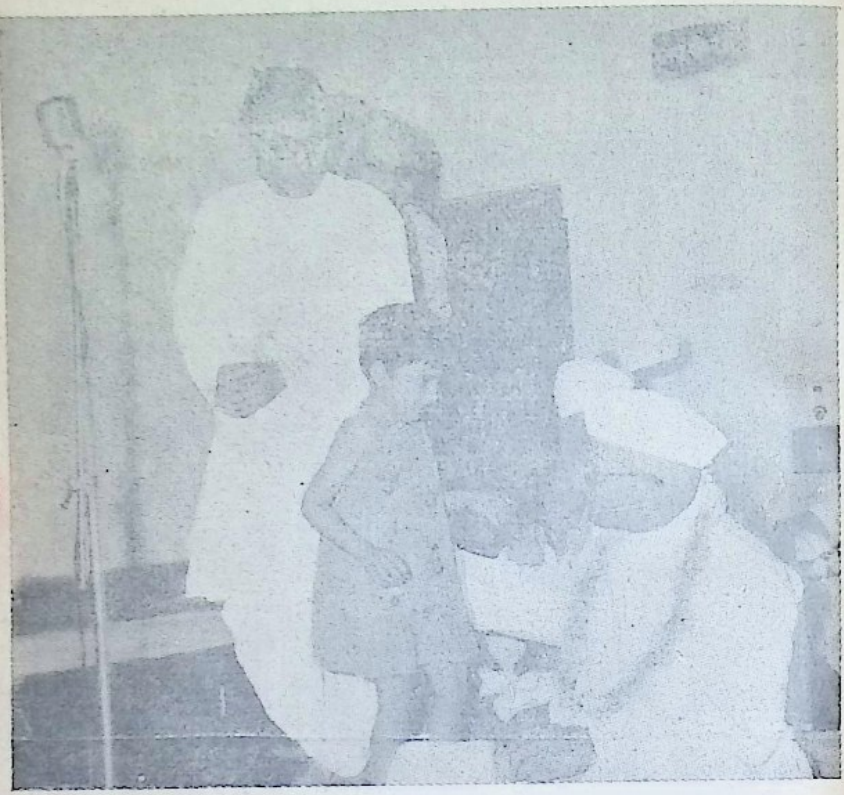

नन्हीं बालिका ऋचा ने श्री मोरार जी को पुष्पहार पहनाया। श्री मोरार जी बच्ची को दुलार रहे हैं और लाला रामगोपाल जी भाषण देते हुए एक क्षण को रुक गए हैं।

सामने के पृष्ठ पर हैं समारोह के अवसर पर उपस्थित नेतागण आचार्य श्री वैद्यनाथ जी, लाला रामगोपाल जी, लाला दीवानचन्द जी, ब्र. जगदीश विद्यार्थी, श्री के. नरेन्द्र, श्री मोरार जी देसाई, श्री ओम्प्रकाश त्यागी व प्रकाशन विवरण बताते हुए श्री पं. भारतेन्द्रनाथ जी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

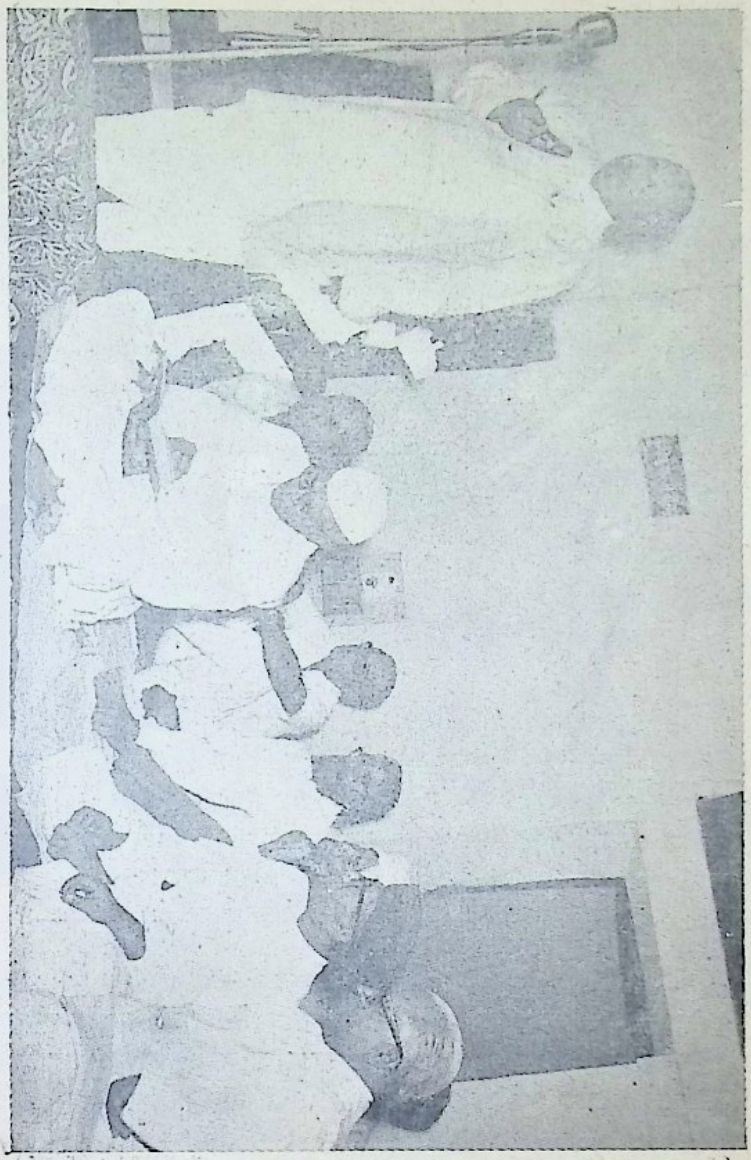

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अवसर पर नगर के सैकड़ों मान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री पं० क्षितीशकुमार वेदालंकार, पं० सत्यदेव विद्यालकार, प्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल, श्री बनारसी सिंह, शाश्वत वाणी के संपादक श्री अशोक कौशिक आदि महानुभावों ने उपस्थित हो आयोजन की सराहना की।

बिना साधनों के प्रभु विश्वास से क्या हो सकता है, इस का साक्षात प्रमाण देख कर सभी में नया उत्साह अंकित हो रहा था। और मैं हंस भी रहा था, रो भी रहा था, धन्यवाद भी दे रहा था अपने प्रभु को!

प्रभु तू ही भक्तों की लाज रखता है। तेरा सहारा लेकर कौन कभी हारा है, मैं प्रार्थना कर रहा था, ओ मेरे प्रभु! अपना प्यार भरा हाथ सदा मेरे सिर पर रखना सचमुच मेरा भगवान ही यह सब कुछ कर रहा है, नहीं तो मेरी क्या सामर्थ्य.....

आर्य समाज हनुमान रोड के सभी अधिकारी वर्ग ने, विशेषतया श्री सरदारी लाल जी और भाई सुभाष जी ने जिस अपनत्व से संपूर्ण आयोजन का भार संभाला, धन्यवाद देकर मैं उसका महत्व घटाना नहीं चाहता।

बढ़ते हुए चरण कहाँ तक बढ़ सकेंगे। जो सोचा है वह पूरा कब, कैसे होगा, यह सब प्रभु पर छोड़ मैं निश्चिन्त हूँ।

बहुत कुछ करना है। जो हो रहा है उसे देखिए और देखते जाइए क्या मेरा प्रभु कराता है। बस आशीर्वाद सभी से यही मांगता हूँ मेरे जीवन की हर सांस केवल ऋषि दयानन्द के गीत गाए और यत्न करता रहूँ कि सारी धरती मेरे गुरु के चरणों पर झुकजाए—

शुभ कामनाओं सहित —भारतेन्द्र नाथ

★ **सामने के पृष्ठ का रंगीन चित्र है** आर्य समाज के लौह पुरुष स्व० स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज का। आपकी स्मृति आगे बढ़ने की प्रेरक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

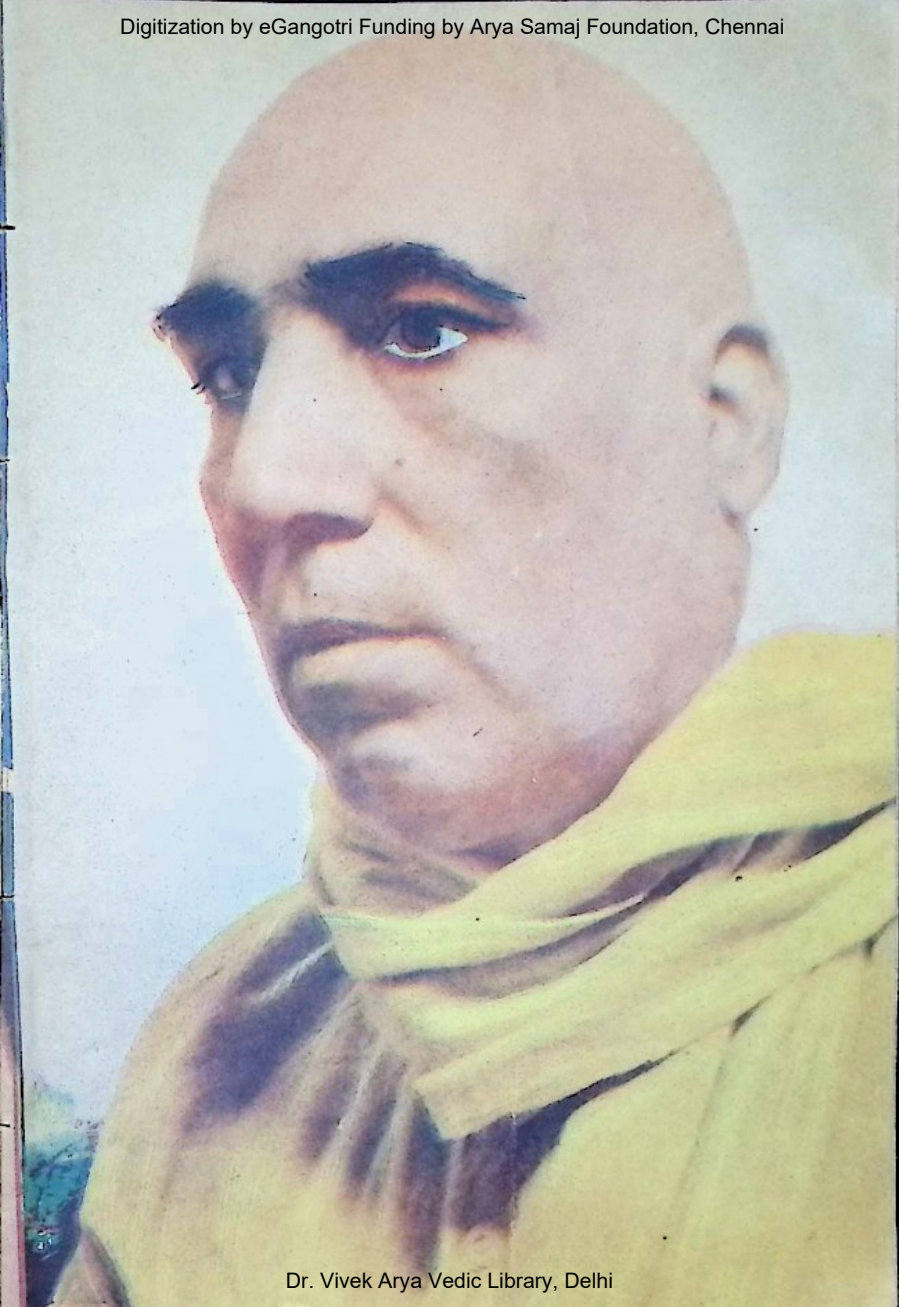

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

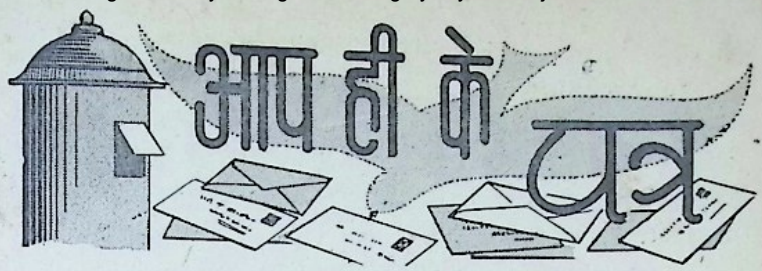

सराहनीय

श्रीमान् भारतेन्द्र नाथ जी, नमस्ते !

"जनज्ञान" के द्वारा आप जो सेवा कर रहे हैं, वह स्तुत्य है। इस थोड़े से समय में जनज्ञान ने आर्य समाजियों में जो जागृति और कर्तव्यनिष्ठा का भाव जागृत किया है वह सराहनीय है।

प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा —नरेन्द्र

हैदराबाद

जन जागरण में सहयोग

प्रिय बहन जी, सादर नमस्ते !

मैं "जन-ज्ञान" का नियमित पाठक हूं। समय-समय पर आपकी पत्रिका में बहुत सुन्दर लेख प्रकाशित होते रहते हैं। इस बार के फरवरी अंक में पुनर्जन्म-सम्बन्धी प्रमाण बहुत सुन्दर था तथा लेखक के विशाल अध्ययन का सुपरिणाम था। विद्वान् लेखक ने पृष्ठ-१२६ पर हिरोडोटस का और पृष्ठ १३० पर ग्रीक दार्शनिक प्लेटो का उदाहरण दिये हैं। क्या, आप कृपा करके यह बता सकेंगी कि हिरोडोटस का व प्लेटो का उक्त उद्धरण किस किस-पुस्तक से लिए गये हैं ? जिस प्रकार आपने वेदों के उद्धरण अध्याय व मन्त्रों के नम्बर सहित दिये हैं, यदि उसी प्रकार विदेशी लेखकों के उद्-धरण देते हुए उनके संकेत दें, तो बहुत अच्छा रहेगा।

आपकी पत्रिका जन-जागरण में सफल सहयोग दे रही है। यह सब आपकी योग्यता और अथक परिश्रम का ही परिणाम है। मुझे पूरा विश्वास है कि इसी प्रकार के लेख पत्रिका के आगामी अंकों में भी प्रकाशित होते रहेंगे।

दिल्ली —कृष्णकान्त चरला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सदैव सफल करें

स्वदेश यात्रा से आने के उपरान्त इधर 'जनज्ञान' के जो अंक मुझे अवलोकनार्थ प्राप्त हुए हैं उससे हृदय में जो प्रसन्नता हुई है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। आप एक महान् उद्देश्य से साधना रत तपस्वी जीवन व्यतीत कर यह सुकार्य कर रहे हैं। परमेश्वर आप को सदैव सफल रखे।

आर्य समाज, सिंगापुर —श्रीधर त्रिपाठी

कभी मुरझाए नहीं

बहन जी,

वैदिक भावनाओं के प्रचार, वैदिक पुस्तकों का प्रकाशन और गुरुदेव दयानन्द का सन्देश धरती पर फैलाने का जो बीड़ा आपने उठाया है इसे तो शब्दों द्वारा प्रकट करना मेरे वश से बाहर की बात है। मैं ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करता हूँ कि मेरी बहन को ऐसे फूल के समान उगाये रखें, जो कभी मुरझाएं नहीं।

आपका भाई

मारीशस —सोनालाल नेमधारी

शुभ कामना

पत्र उत्तम है, इसे मैं प्यार से पढ़ता हूं और अपने पुस्तकालय के लिए संग्रह भी करता हूँ। इसे अच्छा से अच्छा बनाने का प्रयत्न करें। कोई सेवा हो लिखें।

—पद्मदेव

वन मन्त्री, हिमांचल प्रदेश

मेरा विचार

प्रिय बहन राकेश रानी !

"जन-ज्ञान" हमारा सच्चा साथी राह बताने वाला है।
भटकते आर्य जनों का यह भी एक सहारा है।
बहन राकेश रानी के कर से बहता श्रोत् जो पावन है।
विधर्मी का पोल खोलता आर्यों का मन भावन है।
देता है यह ज्ञान हमें जो क्या उसे भुला हम पायेंगे।
हे बहन हमें वरदान तू दो ऊँ ध्वज विश्व में फहरायेंगे।
विद्वद् सागर से ले इसमें जल जन-ज्ञान गगन में भरती हो।
आर्य जगत् को सिंच सिंच कर सबको उज्ज्वल करती हो।

(सहन पुरा) —कृष्णजी पाण्डेय शिक्षक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रिय सुपुत्री सौ० राकेशरानी जी

सप्रेम नमस्ते,

आपको परमात्मा सदा सौभाग्यवती तथा सकुशल रखें, आपका सौभाग्य अटल रहे, मंगलवार २९-१२-७० को आपकी भेजी हुई वी० पी० घर पर ही मिल गई थी २ रु० ७० पैसे देने पड़े थे। सत्यार्थप्रकाश को देखकर मन बहुत प्रसन्न हुआ, बहुत सुन्दर है। धन्य हो पुत्री, सचमुच आप देवी हो। भगवान् मेरी इस युगल जोड़ी को दीर्घायु प्रदान करें। मेरी शुभ कामनायें सदैव आपके साथ रहें। इस नूतन वर्ष पर भी मैं आपको शुभ कामनायें भेज रही हूं। आपका 'जन ज्ञान' प्रकाशन दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति करे। घर में सभी सकुशल रहें, गृहस्थ में रह कर इतना तपस्वी, त्यागी जीवन कोई विरला ही कर पाता है। मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करती हूँ।

मंत्राणी, — आपकी शुभचिन्तिका, माता

केन्द्रीय सभा, अमृतसर —आज्ञावती

हमें गर्व है !

श्रीमान पूज्य भारतेन्द्र नाथ जी !

मैंने आर्य समाज शिमला से आप द्वारा सम्पादित तथा छपवाया मास्टर दुर्गाप्रसाद द्वारा अनुदित सत्यार्थ प्रकाश खरीदा। यह बहुत अच्छा सुन्दर छपा है। आप वैदिक धर्म एवं आर्यावर्त की बहुत सेवा कर रहे हैं। आर्य समाज को आप जैसे निष्काम तथा निस्वार्थ सेवक पाने में बहुत सौभाग्य है। हमें आप और श्री जगदीश विद्यार्थी पर गौरव है। स्वर्गीय स्वामी ध्रुवानन्द जी कहा करते थे कि यदि आर्य समाज है तो ही हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान है। यदि आर्य समाज मर गया तो भारत और भारतीयता मर गई। आप और जगदीश विद्यार्थी जी दोनों हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान के रक्षक हैं।

शिमला भवदीय,

—परमानन्द भक्त

वेद प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र बनाएं

आदरणीय बहन !

माह जनवरी अंक पढ़ कर बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ जिसके लिए जन-ज्ञान प्रकाशन, सम्पादक, संचालक का मैं हृदय से आभारी हूँ। अंग्रेजी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थ प्रकाश का उद्घाटन समारोह का सचित्र विवरण पढ़ कर मैंने स्वयं अपने को उस समारोह में उपस्थित सा अनुभव किया। माननीय दिलीप जी वेदालंकार की विदेश प्रचार यात्रा का संक्षिप्त विवरण पढ़कर अत्यन्त हर्ष मग्न एवं चिन्तित हुआ जिसका मूल कारण यह है कि बाहर विदेश में भी वेदामृत पान की पिपासा है, किन्तु कौन उस प्यास को बुझाये। प्रश्न बहुत ही विचारणीय है इसकी सारी जिम्मेदारी आर्य जन के कन्धे पर है और वह केवल जन-ज्ञान प्रकाशन द्वारा ही संभव है ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। बहन जी जन-ज्ञान के माध्यम से 'वेद प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र' की व्यवस्था अगर संभव हो सके तो विश्व में वेद पताका फहराना कठिन न होगा। क्योंकि आर्य समाजें भी कुछ चन्द कार्यक्रम तक अथवा झगड़ों तक सीमित सी प्रतीत हो रही हैं ऐसा मुझे अनुभव होता है।

सुल्तानपुर

=सत्यनारायण यादव

आशीर्वाद

शुचि व्रता, मधु वाचा, दिव्या पुत्री राकेश जी !

सप्रेम नमस्ते !

मुझे आपके सत्य आत्म संकल्प में विश्वास और निष्ठा है। मुझे आपके अथक श्रम में श्रद्धा है। मुझे आप दोनों पति-पत्नी की योग्यता पर गर्व है। आपका उत्साह प्रशंसनीय है। आपका पुनीत साहस निःसन्देह हम सबके हार्दिक सहयोग का पात्र है। मैं आत्मा से आपकी संकल्प सिद्धि की कामना और प्रार्थना करता हूँ।

मे मनसा आकूति सत्या सन्तु
"सत्या नः सन्तु आशिष"
"साधय धियः"
कामान् अस्माकं पूरणं
प्रति गृहणाहि लेऽछवि

दिल्ली

आपका सर्वदा मंगलाकांक्षी,
पितृवत स्नेही,
स्वा० सत्यव्रत

आषाढ़ संवत् २०२८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुभकामनाएं

आर्यविदुषी बहन,

'ओ३म् पताका को सम्पूर्ण धरती के मानव समाज के मन मन्दिर पर लहराने के आपके व्रत को ईश्वर शीघ्र क्रियान्वित करे—यही प्रार्थना है और इस पवित्र कार्य में आपके इस भाई का हर सम्भव प्रयास एवं यथासाध्य सहयोग सहर्ष अर्पित है।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका आर्य भ्राता,

डुमरी — सुरेन्द्र

विद्यार्थी का प्रण

पूज्यनीय संपादक जी,

जब से मैं अपनी प्रिय मासिक पत्रिका "जनज्ञान" का ग्राहक बना हूँ तब से मुझे वेद के बारे में काफी ज्ञान प्राप्त हुआ। परन्तु फिर भी इतना नहीं जितना गुरु अपने शिष्य को दे सकता है। फिर भी आप काफी सफल हो रहे हैं। और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आप सब को वेद प्रचार के अभियान में सफलता प्रदान करें।

मैं एक तकनीकी विद्यार्थी हूँ। इस समय चतुर्थ वर्षीय यांत्रिकी बी. ई. में पढ़ रहा हूँ। आशा है कि आगामी वर्ष में इस कोर्स में सफलता प्राप्त कर लूँगा। इस शिक्षा से ज्यादा जो ज्ञान वेद माता ने दिया है और जो मुझे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने में ज्ञान प्राप्त होता है उसका कहना ही क्या ? मैं शुरू से ही दयानन्द एंग्लो वैदिक संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त करता रहा हूँ। उस समय तो मैं वेद के बारे में कुछ खास ज्ञान प्राप्त नहीं कर सका। परन्तु जब से इस महाविद्यालय में आया हूँ तो मुझ में वेद के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की लालसा बढ़ती ही गई है।

फरवरी का अंक तो मैंने बहुत जल्दी पढ़ लिया। बार-बार पढ़ने को दिल करता रहता है। जितनी बार पढ़ता हूँ उतना ही ज्यादा ज्ञान बढ़ता रहता हैं। आज से ही अगले अंक की प्रतीक्षा शुरू हो गई है।

यदि हो सके तो विद्यार्थियों के लिये लेख जरूर छापा करें। इस समय तो ज्यादा प्रचार विद्यार्थियों में ही होना चाहिये। अधिकतर विद्यार्थी अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शास्त्रों विशेषकर वेद के बारे में तो बिलकुल शून्य हैं। साथ विचार विमर्श के लिये गोष्ठी रखा करें।

मैं आपको पत्र मित्रता स्तंम्भ के लिये सुझाव देना चाहता हूँ जिसमें सिर्फ आर्य के लिये ही स्थान हो। मैं ऐसा मित्र चाहता हूँ जो आर्य समाज का सदस्य हो। जिससे मैं "वेद" के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकूँ। आशा है कि आप मुझे सहयोग देंगें।

आप और महानुभाव भारतेन्द्र नाथ जी के लेखों ने मुझे काफी ज्ञान दिया है। इसलिये आप सब मेरे गुरु हैं। क्योंकि इस समय मुझे आप सब से बेहतर कोई गुरु नहीं मिला।

इस समय विदेशों में वेद के प्रचार की काफी आवश्यकता है। मैं विद्यार्थी के नाते धन का दान तो मुश्किल ही कर सकता हूँ। परन्तु किसी और प्रकार का सहयोग जरूर दे सकता हूँ। हां मैं अपने बचत में से धन जरूर पहुँचाता रहूँगा। आज से प्रण करता हूँ कि व्यर्थ धन नहीं गंवाऊंगा। इस प्रण को निभाने के लिये आप का आशीर्वाद और परमात्मा की कृपा की बहुत जरूरत है।

इस पत्र को यदि मैं अपने महाविद्यालय के किसी विद्यार्थी को पढ़ने के लिये दे दूँ तो जरूर मुझे सिर फिरा कहेगा। क्योंकि वह इस क्षेत्र में बिलकुल शून्य है। आज तो आधुनिक माता-पिता भी अपने पुत्रों के प्रति ज्ञान दान कर्तव्य नहीं निभाते।

मैं अपने गुरु स्वामी दयानन्द जी के चरणों में सिर झुका कर प्रार्थना करता हूँ कि हम सब उनके बताते हुए रास्ते पर चलते रहें। और दूसरों को भी इस रास्ते के बारे में प्रकाश दें।

भोपाल

—रमेश आनंद

प्रत्येक शुभ अवसर पर
दान के समय
"जन-ज्ञान" को स्मरण रखिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बधाई-पत्र

सम्पादिका जन-ज्ञान की बन लेखनी तुमने उठाई।
मातृ शक्ति बहिन जी है आपको शत्-शत् बधाई ॥

आज भौतिकवाद के घन घोर घन छाये हुए हैं,
देश में नास्तिकपने के भाव भी आए हुए हैं।
धर्म ग्रन्थों की उपेक्षा अब निरन्तर हो रही है,
आर्य हिन्दू जाति अपनी संस्कृति को खो रही है ॥

आप के जन-ज्ञान से कुछ पंथ है पड़ता दिखाई।
मातृ शक्ति बहिन जी है आपको शत्-शत् बधाई ॥

आज वेद प्रचार में महती शिथिलता आ रही है,
आर्य जगती में निराशा की निशा अब छा रही है।
थामना तुम ओ३म की पावन पताका झुक न जाये,
ऋषि मिशन के सैनिकों की गति कहीं अब रुक न जाये ॥

धर्म निष्ठा के लिए है आप से आशा लगाई।
मातृ शक्ति बहिन जी है आपको शत-शत बधाई ॥

पत्र आर्य समाज में "जन-ज्ञान" सर्वोत्तम बना है,
आपका राकेश रानी त्याग तप इसमें घना है।
आप से जो मिल रहा है वेद का संदेश हमको,
शब्द श्रद्धा के सुमन करते समर्पित आज तुमको ॥

ज्योति है जन-ज्ञान से फिर "वेद" की तुमने जगाई।
मातृ शक्ति बहिन जी है आपको शत-शत बधाई ॥

बा० सत्यरामसिंह यादव एडवोकेट ★ प्रो० महेशचन्द्र शास्त्री एम.ए.

प्रधान मंत्री

आर्य-समाज हथमऊ, मैनपुरी, (उ० प्र०)

आषाढ़ संवत् २०२८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपमा नहीं

जन-ज्ञान वास्तव में जन-ज्ञान ही है। इसकी उपमा नहीं मिल सकती। अब भी यदि मनुष्यता नहीं आई तो इसमें जगाने वालों का कसूर नहीं। मेरे विचार में राकेश रानी नहीं गार्गी ने फिर वेद प्रचार के लिए—जनम ले रखा है। ईश्वर इन के साहस तथा धैर्य,को प्रोत्साहित करता रहे।

इसमायला जिला रोहतक ● **बलवीर सिंह "आर्य"**

परमादरणीय पूज्य श्रद्धेय बहन जी

परम पावनमयी वेला जन-जन के मानस विमल हृदय में, आप की स्नेहासिक्त वाणी, महर्षि की आभा की तरह, कल्याण के स्रोत में, भागीरथी के तुल्य जन-जन के सन्तप्त हृदयों को सुधा की तरह आप्लावित कर रही है। वेद वाणी को संसार के कोने-कौने में फैलाने वाली शुभ चंद्रिका की तरह शीतल करने वाली, इस भू पर ही स्वर्ग की छाया करने वाली है। इस अदम्य उत्साह और साहस को कोटिश: धन्यवाद है।

चिन्नोद ● **—भगीरथ प्रसाद**

जन-ज्ञान के अंक बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं प्रभावकारी सिद्ध हुए हैं। इस क्षेत्र में इन पुस्तकों के द्वारा एक प्रकार की वैचारिक क्रांति पैदा हो गयी है। वास्तव में जनज्ञान प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बहुत ही उपयोगी सस्ती तथा वैदिक धर्म प्रचार की ठोस सामग्री प्रस्तुत करने वाली हैं। हमने अंग्रेजी भाषा की भी पुस्तकें मँगाई हैं जो बहुत ही सरल तथा ज्ञानवर्धक हैं। वास्तव में आप लोग एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं इससे आर्य जगत गौरव से मंडित हो रहा है।

गोंडा (यू. पी.) **सत्य नारायण द्विवेदी,**

ग्रामों की ओर

आदरणीय भारतेन्द्रनाथ जी,

सप्रेम नमस्ते।

जन-ज्ञान में आपके लेख पढ़ कर कई बार लिखने का विचार आया फिर मन के भाव दब जाते। आज भाव फूट निकले वा लिखने की धृष्टता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर रहा हूं। हिन्दी लिखने का अभ्यास न होने के कारण कई भूलें होंगी फिर यह तो हवाई दुर्ग है। बदलता भी रहेगा। वायु कहाँ स्थिर रह सके नहीं तो दूषित हो जायेगी।

सारा संसार प्रायः दूसरों के दोष निकालने में लगा हुआ है। सत्य को जानते वा देखते ही हरेक की जीवन यात्रा असत्य मार्ग पर तीव्र वेग से हो रही है। सुख की इच्छा दुख का कारण बन रही है। दबे संस्कारों के वश इस मनुष्य जाति का वातावरण सत्य को अनदेखा (अदृष्ट) कर रहा है सत्य जीवन लोप होता जा रहा है। अपनी-अपनी ख्याति के लिये नेतागण भ्रमण करते आश्वासन दे आते हैं पूरे नहीं कर पाते जिससे कार्य रत प्रकृति वाले कार्य कर्त्ता का उत्साह भंग हो जाता है। और वह डांवाडोल हो प्रायः "किम् कर्त्तव्य विमूढ़" से बन जाते हैं वा निर उत्साही बन सब के साथ वह जाते हैं।

आर्य समाज का प्रचार, मन मन्दिर की ध्वनि चार दीवारं में सीमित रह जाती है।

प्रायः भारतवर्ष के किसी ग्राम में चले जावें आर्य समाज का नाम तक लोग नहीं जानते। श्रद्धा के वश "अनपढ़ आचार हीन" साधू वा देवी देवता मन्दिर-टूना जादू-इत्यादि भ्रम में फंसे रहे हैं यद्यपि उनकी "आत्मा वा मन" नागरिक वर्ग से ऊँचा है। विश्वास वा श्रद्धा सराहनीय है। वेद का तो नाम भी भूल चुके हैं।

भारतवर्ष के कई प्रान्तों में आर्य समाज आटे में नमक के बराबर भी नहीं है। आर्य समाज की संख्या न के बराबर है। उनकी स्थिति वा आर्य समाज का नाम भी मालूम करना कठिन है।

आर्य कहलाने वाली जनता वा नेता नगरों तक ही सीमित हैं वा प्रचार की स्थिति भी ऐसी ही है। नाम के लिए, पद के लिए लड़ाई झगड़ा हो रहा है प्रचार की और आत्म निर्माण की ओर ध्यान नहीं है। आप के मन मन्दिर की ध्वनि भी 'जन-ज्ञान' तक सीमित है वा उन ग्राहकों तक जो 'जन-ज्ञान' पढ़ते हैं।

आप का प्रकाशन कार्य कितना भी सराहनीय हो कितने भी अच्छे-अच्छे फोटो हों परन्तु प्रचार का कार्य न के बराबर है। जीवन अज्ञान वा अन्धकार नगरों में ज्यादा है यद्यपि पढ़े लिखे हैं अच्छी बुद्धि है परन्तु मन मलीन है रुपया पैसा ही सर्वस्व है। तर्क अच्छा करेंगे जीवन से अनभिज्ञ हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ग्राम वासी की "जीवन" भूमिका दृढ़ है जितना-जितना बालकों में विद्या का प्रचार हो रहा है उनका वातावरण नगरों जैसा होता जा रहा है, फिर भी ग्राम भूमि बीज के लिए उपयुक्त है हाँ परिश्रम ज्यादा करना पड़ेगा। परन्तु वेद प्रकाश की उपज अधिक होगी।

ज्यादा धन वा प्रचार नगरों में है जहाँ भूमि उपजाऊ नहीं अतः धन तो मिल जाता है परन्तु जीवन की कमी है।

नगरों में सुविधा है धन है, प्रकाश है, प्रचार है, उपदेशकगण हैं नेता जन हैं चुनावादि लड़ने को धन है जीवन नहीं है।

जीवन जीवन से बनता है।

आओ इस समस्या पर गम्भीरता से विचार करें और विचार को कर्म द्वारा सार्थक करें।

ग्राम की उपजाऊ भूमि में ज्ञान और कर्म का बीज डालें परिश्रम द्वारा भूमि तैयार करें जिससे यत्न निरर्थक न हो उपज इतनी हो कि वह अगला बीज बन कर खूब फैले वा आर्य समाज का नाम सार्थक बने।

आपके मन मन्दिर की दूरदर्शिता साकार हो। प्रकाश फैले। मानव-मानव बने। महर्षि का उपदेश कोने-कोने में फैले अज्ञान का नाश, ज्ञान की वृद्धि हो। मनुष्य ईश्वर का यथार्थ अमृत पुत्र बने, यह वसुधा स्वर्ग बने। सत्य, प्रेम, अहिंसा, ईश्वर विख्यात, यत्न शीलता से जीवन पवित्र हो। अपनी उन्नति हो दूसरों की उन्नति से वसुधा कुटुम्ब बने। ऋषि मुनि उतरें। जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त हो।

जब तक हम अपना जीवन स्तर ऊँचा नहीं करेंगे दूसरों को आश्रय नहीं दे सकेंगे हमारा अपना जीवन आनन्दमय कैसे हो ? हमें देख कर दूसरों में उन्नति भावना जागृत हो। हम मिल कर एक दूसरे की सहायता से सद्भावना से इस जगत् को स्वर्ग बनाएं। तभी हवाई दुर्ग की रचना भूमि पर सुदृढ़ बन पायेगी।

आपका,

जी. आर. सेठी

कुण्डली (रोहतक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"छोड़ो मधुमय देश हमारा"

भारत की पावन संस्कृति को, जड़ से अरे मिटाने वालो !
दिव्य देश की गौरव गरिमा महती अरे घटाने वालो !
झूठे तर्क हीन तत्वों को सत्यम् पूर्ण बताने वालो !
भ्रष्ट पथों के अनुगामी तुम ईसा शिष्य कहाने वालो !

तुम क्या जानो ? भारत की संस्कृति है कितनी दिव्य महान्,
जिस पर चल कर सदा निखरते मानव जीवन के प्रतिमान,
अपौरुषेय आवृत्त जिस पर हैं वेदों के मंगलमय गान,
उपनिषदें आधार शिला हैं जिसकी शुचिर समन्वित शान ।

मानवता का जहाँ सदा से होता आया है नर्तन,
देवों का होता आया है जहाँ सदा ही अभिनन्दन,
आदि काल से सत्य शक्ति का होता जहाँ मधुर वन्दन,
वहीं मचा रखा है तूने ! हाय महा यह कटु क्रन्दन ।

भोले भाले दीन जनों में लोभ-मोह क्यों फैलाते ?
तोड़ एकता सूत्र हमारे दम्भ द्वेष क्यों बिखराते ?
वेदों की पावन धरती पर झूठी बाइबिल की बातें,
गलत गपोड़े बता मनुजता पर करते हो प्रतिघातें ।

स्वार्थ साधना के साधक ! तुमको अब भगना ही होगा,
ऋषि मुनियों की संतानों को निश्चय अब जगना होगा,
आर्य सपूतो ! देश धर्म पर तुमको अब मरना होगा,
दानवता के बढ़ते कदमों को छोटा करना होगा ।

दयानन्द के वंशज जागें, जागा राम-कृष्ण का वंश,
वीर शिवा संतानें जागीं, जाग उठा राणा का अंश,
भारत संस्कृति का कण कण है हमको प्राणों से प्यारा ।
ईसा के शिष्यो ! छोड़ो अब यह मधुमय देश हमारा ।।

—राधेश्याम आर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आइए ! आधुनिक भगवान से मिलें

—वियोगी

सत्य साईं ! बनाम उभरते 'मगरमच्छ'

आज देश में नकली ढोंगी भगवान पैदा होकर धर्म के नाम पर अधर्म फैला जन मानस को बहका रहे हैं। अध्यात्म की भूख मिटाने के लिए जन मानस इनके जाल में फंसता है और इनका रूप देखकर धर्म से दूर चला जाता है। क्या हम जाग कर नकली और असली का भेद सबको बता सकेंगे ?

—सम्पादक

भारत भगवानों का देश है। यह तो आप जानते ही हैं। यहाँ प्रतिदिन एक नये भगवान का जन्म होता है। यह भी बताने की जरूरत नहीं। कुछ लोगों के ख्याल में ये भारत की किस्मत है। लेकिन किसी के ख्याल में ये बदकिस्मती भी तो हो सकती है। खैर यह तो अपना-अपना दिल···।

अभी कुछ समय से एक और नये भगवान अपना जोर मारने लगे हैं। मतलब ये जन्म लेकर हमारी-आपकी नजरों में बसने की चेष्टा में संलग्न हैं। नाम सुनेंगे ?

यदि हाँ···! तो सुनिये—ये हैं "भगवान श्री सत्य साईं बाबा।"

प्रत्यक्ष तो मैंने अभी तक देखा नहीं, और न ही अभी कानपुर आये ही हैं। सुनने में आता है—वे दक्षिण भारत में किसी स्थान पर निवास करते हैं। उनकी वेश-भूषा और आकृति के बारे में, नगर में बाँटे जा रहे परचों पर छपे चित्रों से कुछ अनुमान लगा है। ये महोदय रेशमी चोंगा पहनते हैं, शरीर से हट्टे-कट्टे हैं, और जुल्फों की शोभा तो निराली ही है।

(चित्र पृष्ठ २९ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

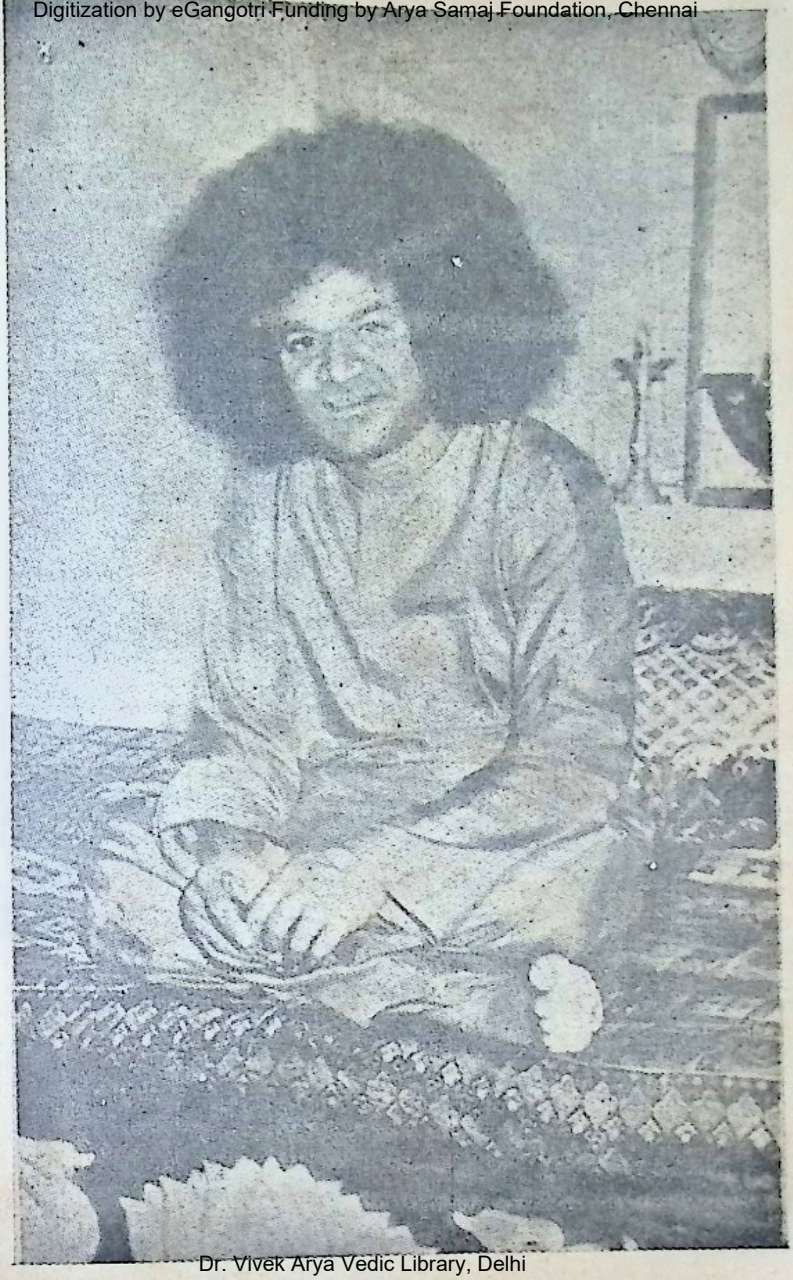

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वितरित किये जा रहे परचों में से एक परचे में 'उक्त भगवान' को एक सुन्दर सिंहासन पर बैठे दिखाया गया है। जिस पर वो हाथ उठाकर आशीर्वाद देने की मुद्रा में विराजमान हैं। इस सिंहासन के पृष्ठ में एक बड़े फूल सी आकृति भी है; जिसकी पंखुरियों पर 'चांद सितारा', 'क्रूस', 'ॐ', और 'धर्म चक्र' अंकित किये गये हैं। जो क्रमशः मुस्लिम, क्राइस्ट, हिन्दू और बौद्ध धर्म के प्रतीक हैं। अर्थात यह सिद्ध करने की चेष्टा की गयी है, कि विश्व के समस्त धर्म और सम्प्रदाय तथा सम्पूर्ण विश्व 'श्री सत्य साईं बाबा' में सन्निहित है। इसी प्रकार के अनेक चित्र विभिन्न 'अभिनय' मुद्राओं में छापे गये हैं।

परचों द्वारा प्रचार की विधि तो प्रयोग में लायी ही जा रही है; साथ ही सम्पूर्ण नगर में आजकल 'सत्य साईं बाबा' के सत्संगों की भी बाढ़ सी आ गयी है। हो न हो यह स्थिति सम्पूर्ण देश में हो, मुझे इसका ज्ञान नहीं।

लेकिन यह इतना बवाल क्यों? यह समझना आवश्यक हो गया है। प्रतिदिन एक नये भगवान का जन्म भगवानों के परिवार को बढ़ाकर एक समस्या खड़ी कर सकता है। और फिर ऐसे समय जब पहले ही से भगवानों का एक बड़ा परिवार देश में अपना अड्डा जमाये हो। अतः इन भगवानों के नियोजन की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी जनसंख्या को रोकने हेतु नियोजन 'अभियान' की।

अब मैं आपको 'सत्य साईं बाबा' के शिष्यों द्वारा किये जाने वाले एक सत्संग की झलकी देने के लिए 'सत्संग' की यात्रा कराना चाहूँगा, ताकि आप उनके कार्यकलाप समझ सकें। आइये चलें—

सुबह-सुबह उठा, और पत्र-पात्र के छिद्रों से झाँका, क्योंकि पिछली शाम को मैं देखना भूल गया था। अन्दर किसी कागज का आभास पाकर ताला खोला। अन्दर सम्पादक सरिता का एक पत्र, जिस पर, दिल्ली प्रेस की मुहर थी, और साथ था एक गुलाबी रंग का पंफलेट। लिफाफा बन्द था, अतः उसे पहले पढ़ने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। पहले साथ के गुलाबी पेंफलेट को पढ़ गया। जिस पर मुद्रित विवरण का सारांश था—"आज शाम को तिलक व्यायाम शाला के सभा-भवन में उपस्थित होकर सत्संग का लाभ उठायें। समय ५-३० बजे।"

मैं ठहरा कुछ सनकी! शाम को निश्चित समय पर पहुँच गया। पहुँचते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हा मैंने देखा—सामने ही मध्य में एक चौकी पर एक डरावनी अमानुषी आकृति का चित्र रखा है। और उसके इधर-उधर अन्य 'पूर्व भगवानों' (जिन्हें सत्य साईं बाबा के कारण गद्दी छोड़नी पड़ी) के चित्र। सभा भवन में लगभग चालीस-पचास व्यक्ति उपस्थित थे! इन्हीं व्यक्तियों में से छह सात व्यक्ति सबसे आगे ढोलक, मंजीरा, करताल आदि बजाते हुए कुछ चीखने में संलग्न थे। आया था सत्संग के लिए, अतः सत्संग मंडली के मध्य ही बैठना उचित समझ कर घुस कर बीच में बैठ गया।

बैठा तो शांति से। लेकिन चंचल मस्तिष्क भला क्यों शांति से बैठता? मैंने पड़ोस के एक व्यक्ति (जो मेरे दाहिने हाथ की ओर थे) से पूछ बैठा—"श्रीमान जी! यह क्रूर आकृति का चित्र किसका है?"

"जरा सम्हल कर बोलिये। भगवान को आप ऐसे कह रहे हैं।" मुझे तीखा उत्तर मिला! लेकिन मेरे मूल प्रश्न का उत्तर नहीं।

मैं शांत हो गया। लेकिन फिर किसी अन्य से पूछने की तमन्ना उठी। इस बार बाईं ओर बैठे एक सज्जन से पूछा—"श्रीमान जी! सामने यह चित्र किसका है?"

इस बार मुझे बड़े ही मधुर शब्दों में उत्तर मिला—"भाई साहब ये 'भगवान श्री सत्य साईं बाबा' हैं।" मधुर उत्तर का कारण मेरा मधुर प्रश्न था।

मधुर प्रश्न का मधुर उत्तर पाकर कुछ शांति मिली। और अब मैं गाये जा रहे गीतों को ध्यान मग्न हो सुनने लगा। जिन्हें भक्त वर्ग भजन के नाम से पुकारता है! सभी गीतों में 'सत्य साईं' के गुणगान के अलावा मुझे कुछ न मिला और आखिर होता भी क्या? 'साईं' भगवान जो ठहरा।

भजनों का अन्त आ गया। अब 'आरती' होनी थी। एक व्यक्ति ने थाली में कपूर जलाया। सभा-भवन की सभी बत्तियां बन्द कर दी गयीं। (बत्ती बन्द करने का कारण मेरी समझ में नहीं आया) सभी व्यक्ति अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गये। मुझे भी खड़ा होना पड़ा। नीरवता छा गयी। बिल्कुल मरघट सी, अन्तर बस इतना था, यहां धड़कनें सुनाई पड़ रही थीं। अकस्मात आरती की थाली लिए हाथों ने ऊपर नीचे होना शुरू किया, और एक व्यक्ति गा पड़ा—

"सत्य साईं, जय बाबा, जगदीश हरे"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

.....

गाने वाले को भाव विभोर देख सभी मस्त थे, और मैं आरती सुनने में। पूरी की पूरी 'आरती' प्रचलित 'आरती' की पैरोडी थी। 'सत्य साईं' 'पैरोडी' की प्रत्येक पंक्ति की शोभा बढ़ा रहे थे। 'आरती' रूपी 'पैरोडी' समाप्त होते ही बत्तियां जल गयीं। जैसे सिनेमा घर में शो 'END' होते ही बत्तियाँ जल उठती हैं। लेकिन सिनेमा हाल से एक बात यहां विपरीत हुई, वहां सभी खड़े हो जाते हैं, यहाँ सभी बैठ गये। सभी बैठे तो भला मैं क्यों न बैठता?

सभी के बैठते ही एक व्यक्ति पुनः खड़ा हो गया; और बड़े ही मधुर शब्दों में बोला—"आप लोग कुछ मिनट और बैठें। प्रसाद प्राप्त करके ही यहां से जायें।" (थोड़ा सुस्ताया) "आप लोगों को बाबा की भुभूत दी जायेगी। इसे खाइये, माथे से लगाइये। यह भुभूत बड़ी लाभदायक है। हर रोग ठीक हो जाता है। हम लोगों के यहां जब भी कोई बीमार होता है हम लोग, रोगी को भुभूत खिलाते हैं। और फिर देखते हैं रोगी ठीक···हो···।

हर मर्ज की एक दवा 'भुभूत'। सुन कर आश्चर्य हो ही रहा था। बात काटते हुए बोला—"क्या आप लोग 'भुभूत' नाम की कोई जड़ी देते हैं?"

"नहीं! नहीं! जड़ी नहीं। 'भगवान सत्य साईं बाबा' की 'भुभूत' है 'राख'। जिसमें उनकी शक्ति का अंश होता है।" स्पष्टीकरण मिला।

मैंने 'भुभूत' का नाम कभी भी नहीं सुना था। क्योंकि मैं कभी भी इस प्रकार के पचड़ों में नहीं पड़ा था। 'राख' सुनकर कुछ शंका हुई। पूछ बैठा—"बाबा जी का शरीरान्त हुए कितने दिन हो गये?"

"शरीरान्त? बाबा जी तो अभी हैं।" कहकर वह मुस्कराया।

मेरे प्रश्नों का उत्तर देने वाला कुछ परेशान प्रतीत हो रहा था। क्योंकि इस प्रकार के प्रश्नों को पूछने वाला शायद उसे अभी तक कोई मिला नहीं था। मैं उसकी स्थिति को समझ कर और अपने उलझे प्रश्न का हल पा जाने के कारण बैठ गया।

मेरे उलझे प्रश्न का हल अन्तिम प्रश्न के उत्तर से मिल गया था। क्योंकि 'राख' शब्द को सुनकर मैं शंका कर बैठा था, कि हो न हो यह राख 'सत्य साईं बाबा' के पार्थिव शरीर की राख हो, जिसे 'भुभूत' के नाम से पुकारा जा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब मैं देख रहा था। एक व्यक्ति कागज लिए सभी व्यक्तियों को चुटकी द्वारा कागज से उठाकर कुछ दे रहा है और सभी व्यक्ति कुछ चाट लेते हैं, कुछ माथे पर लगा लेते हैं, और कुछ पुड़िया बाँधकर रख लेते हैं। धीरे-धीरे वह चुटकी मेरे पास आयी और मेरी ओर बढ़ी। एक कागज निकाला और चुटकी की वस्तु उसमें से स्वीकार ली मैंने। मेरी आँखों ने कागज की ओर देखा और मस्तिष्क से बोलीं 'राख' है, वही राख जिसे भुभूत कहा जा रहा था। लेकिन न तो मेरी इच्छा चाटने की हुई, न माथे पर लगाने की और न पुड़िया बाँधकर रखने की।

मैंने उंगली में राख को पिचकाया। राख हल्के सलेटी रंग की थी। दूसरी उंगली से मला चिकनी थी, मुझे प्रतीत हुआ लकड़ी के कोयले की राख है। सूंघा भी ! खुशबू खस की थी। खुशबू पहचानना मेरे लिए कठिन नहीं, क्योंकि कन्नौज का निवासी हूँ।

मैं यह सब प्रयोग कर ही रहा था कि पीछे से आवाज आयी—'भाई साहब ! अभी हमको नहीं मिली।

मुड़ कर देखा। एक महानुभाव मुंह खोले सिर उचकाये हुए थे। मैंनें उनकी ओर अपने हाथ की वह 'भुभूत' (राख) बढ़ाते हुए कहा—'भाई साहब ! यह लीजिये कंडे की राख ! मेरे किसी मतलब की नहीं !

उस व्यक्ति ने उसे मुस्कराते हुए स्वीकार किया और श्रद्धा से अभिभूत हो राख के कागज को मस्तक के पास ले आया। तभी एक अन्य सज्जन को न जाने क्या सूझा ; बोल पड़े—'साहब जरा तमीज की बात करिये, आप तो पढ़े-लिखे समझदार व्यक्ति लगते हैं। भगवान् के प्रसाद की इज्जत करना सीखिए।'

तमीज की बात करना मुझे इसलिए सिखाया जा रहा था, क्योंकि मैंने 'भगवान की भुभूत' को कंडे की 'राख' कह दिया था। मैं चुप रहा। केवल मुस्करा दिया।

तभी मुझे कुछ चित्र प्राप्त हुए जिनके नीचे 'सत्य साईं बाबा' के उपदेश अंकित थे। मैंने सबको गौर से देखा। छपाई अच्छी लगी। धीरे-धीरे 'असली प्रसाद' (पेड़े, बताशे) का वितरण प्रारम्भ हुआ। मैंने इसे बिना कोई टीका-टिप्पणी किये उदर के हवाले किया। क्योंकि अब मुझे पुनः शक्ति की आवश्यकता थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कार्यक्रम भी समाप्त हुआ। सत्संग की कड़ियाँ टूटने लगीं। तभी एक सरस आवाज ने मेरे बहके हुए कदमों को रोक लिया, क्योंकि मैं दरवाजे की ओर चल पड़ा था।

भाई साहब जरा सुनिये !.....

मुड़कर देखा एक नाटे कद के सज्जन मुस्करा रहे थे। मेरे रुकने से लगभग सभी व्यक्ति रुक गये थे, क्योंकि मैं नवागन्तुक था।

"आप आये। बहुत-बहुत धन्यवाद ! 'वैरी-वैरी थैन्क्स' अगर आपको कष्ट न हो तो अपना परिचय तो.....।" सज्जन कह कर मेरी ओर उत्तर की प्रतीक्षा में मुस्कराये !

"अपना परिचय देना तो मेरा पुराना व्यवसाय कहिये या बुरी आदत कहिये, जो मैं आप लोगों को पहले ही दे चुका हूँ।" थोड़ा मुस्कराया।

तत्पश्चात अपना नाम, पता बताने के साथ ही अपने सस्ते 'निम्न कोटि' के विजिटिंग कार्ड सब को बाँट कर चलने की आज्ञा ली। यहाँ पर आपसे भी एक बात छिपाना पसंद नहीं करूंगा और निःसंकोच कहना चाहूँगा कि मैं तीन तरह के—'विजिटिंग-कार्ड' रखता हूं जो मूल्य के हिसाब से 'निम्न' 'मध्यम' व 'उच्च' कोटि के होते हैं।

मैं झटके से बाहर आ गया। राह में सोचता रहा—"लो भगवानों की भीड़ में एक भगवान् और बढ़ा।"

यह तो हुई 'सत्य साईं बाबा' के सत्संग की सैर, जो आपने बिना कोई कष्ट उठाये मौज से कर ली। गतिविधि भी समझ ही गये होंगे। ऐसे ही सत्संग आजकल लगभग प्रतिदिन होते सुनता हूँ। आश्चर्य की बात तो यह है कि पढ़े-लिखे व्यक्ति ही प्रायः इनमें भाग लेते हैं, कर्त्ताधर्त्ता हैं। लेकिन इतना आकर्षण क्यों ? यह समझ में नहीं आता।

और फिर समझने की जरूरत भी नहीं है। लेकिन इतना जरूर है कि यदि पढ़े-लिखे व्यक्ति भगवानों के परिवार की अभिवृद्धि में सहयोग देंगे, तो देश को तो गड्ढे में गिरायेंगे ही, स्वयं को पढ़े-लिखे मूढ़ से अधिक कुछ भी कहलाने के काबिल नहीं रखेंगे।

आवश्यकता है, समाज रूपी स्वच्छ सरिता (जिससे बहुत से मगरमच्छ पल रहे हैं। समाज को गंदा कर रहे हैं) को मगरमच्छों से होने वाले आतंक और गंदगी से बचाने की, न कि उनके पोषण की। लेकिन यह करेगा कौन ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह काम सरकार नहीं कर सकती। सरकार इन मगरमच्छों का नियोजन नहीं कर सकती। उसे जनसंख्या नियोजन करने दीजिये। आप और हम ही इन्हें सहयोग रूपी भोजन और श्रद्धा रूपी जल न देकर इनका दम तोड़ने में सक्षम हैं। तो फिर देर किस बात की·····! —वियोगी

स्व० श्री चिरंजीत राय साहनी

आर्य समाज के अनथक कार्यकर्त्ता श्री चिरंजीत राय साहनी (जन्म १९०१—निधन १९६४) को हम से वियुक्त हुए सात वर्ष बीत गये। विभाजन के बाद वह रावलपिंडी से दिल्ली आ बसे थे। यहां वर्षों आर्य समाज करौल बाग के उपप्रधान रहे। आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री भी रहे। वह एक धर्मपरायण सज्जन थे और उन्होंने धर्म के मूल दया को अपने जीवन में उतारा हुआ था। महात्मा आनन्द स्वामीजी उन्हें चलता-फिरता आर्य समाज कहा करते थे। उन्हें आर्य समाज का मिशन आगे ले जाने की धुन थी। इसकी प्रेरणा उन्हें तपोधन आर्य संन्यासी स्वर्गीय स्वामी आत्मानन्द जी से मिली थी।

उनके विचार ही धार्मिक न थे, आचरण भी धार्मिक था। पीड़ितों की सेवा में वह जी-जान से जुटे रहते थे।

उनका जीवन कर्मनिष्ठ था। अपने निधन से कुछ क्षण पूर्व तक वह सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त रहे। सार्वजनिक कार्यों के लिए झोली पसारने में उन्होंने कभी संकोच अनुभव न किया।

उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके गुणों को अपने अन्दर लाने का प्रयत्न करें। —संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक उपदेश : अनेक अर्थ

—डा० रामचरण महेन्द्र एम० ए०, पी-एच० डी०

देव, मानव और दानव एक बार प्रजापति के पास जीवन में उपयोगी उपदेश लेने की इच्छा से गये। "हमें जीवन का कोई उपयोगी सूत्र दीजिये।" उन्होंने प्रार्थना की।

ऋषि चिन्तन की गम्भीर मुद्रा में बैठे थे। तीनों यह प्रतीक्षा करते रहे कि वे तीनों को जीवन-कला का कौन-सा लाभदायक सूत्र प्रदान करेंगे। उन्हें हमेशा कुछ-न-कुछ उपयोगी तत्त्व मिले थे।

उनका अनुमान था कि वे तीनों को अलग-अलग कोई छोटा-सा भाषण देंगे, क्योंकि तीनों वर्गों की जिन्दगी, दृष्टिकोण और तौर-तरीकों में भारी विभिन्नता थी। जो बात देवताओं के लिए उपयोगी हो सकती थी, वह मानवों के लिए उतनी हितकारी नहीं हो सकती थी और दानवों की तो दुनिया बिलकुल ही अलग है।

देवता लोग स्वर्ग में बड़े आराम से जिन्दगी गुजारते थे। उन्हें सभी भोग-विलास, आमोद-प्रमोद, सुख-सुविधाएँ सहज उपलब्ध थीं। उनका समग्र जीवन एक लम्बी छुट्टी जैसा था। न कोई काम, न कोई उत्तरदायित्व! मौज और मजा · दिन-रात आनन्द ही आनन्द···हा-हा···हू-हू···!

दूसरी तरफ मानव लोभ की दुनिया में रहते थे, जिसमें नित्यप्रति रुपये के लिए मार-काट, आपा-धापी, संघर्ष और छीना-झपटी चल रही थी। पूँजीपति गरीब मजदूरों का शोषण कर रहे थे। महाजन किसानों को लूट रहे थे, अमीर गरीबों का दलन कर थे। बड़ी मछली जैसे छोटी को निगल रही हो। धन संग्रह के पीछे वे पागल-जैसे हो रहे थे। सौ से हजार·····हजार से दस हजार···लाख···तिजोरियाँ भर रहे थे और गरीबों का शोषण कर रहे थे।

दानव लोग क्रूरता और क्रोध में प्रायः परस्पर लड़ते-कटते थे। आये दिन उनमें कोई-न-कोई झगड़ा, तकरार, मार-पीट, उत्तेजना, अत्याचार और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर-विरोध चलता ही रहता था। जरा-जरा सी बात पर वे आवेश में आकर हत्याएँ या लड़ाइयाँ कर बैठते थे। कड़वी और तीखी बातें बोलना, गाली देना और जरा-सी बात पर उत्तेजित हो उठना या झगड़े में पड़ना उनकी कम-जोरियाँ थीं। वे अनाप-शनाप बकवास करते रहते थे।

"हमें जीवन के उपयोगी सूत्र दीजिए।" उन्होंने फिर कहा।

सलाह के लिए देव, मानव और दानव प्रजापति की ओर उत्सुक नेत्रों से निहार रहे थे कि कब उनके मुख से अमृतोपम उपदेश निकलता है। काफी देर तक वे बाट देखते रहे।

अन्त में प्रजापति ने अपने नेत्र खोले।

उनके नेत्रों से ज्ञान और अनुभव की प्रखर ज्योति विकीर्ण हो रही थी।

वे बोले, देव, मानव और दानव ! तुम तीनों मुझसे अलग-अलग उपदेश की इच्छा से आये हो, किन्तु मैं वह उपयोगी बात दूँगा, जो तुम तीनों के लिए समान रूप से लाभकारी है और तीनों के जीवन को उन्नत बनाने वाली है।"

"वह क्या है,भगवन् ?" तीनों ने उत्सुक मुद्रा में पूछा।

"मैं यही सोच रहा हूँ कि तुम्हें क्या दूँ ? कौन-सी ऐसी चीज हो सकती है, जो सभी को एक-सा लाभ पहुँचाये ?"

वह सोचते रहे। विचारते रहे। प्रतीक्षा करते रहे।

फिर प्यार बिखेरते हुए हल्की-सी मुस्कराहट से बोले—"मैं तुम्हें उपदेश के रूप में केवल एक अक्षर देता हूँ।"

"वह कौन-सा अक्षर है करुणानिधान ?" सबने पूछा।

उन्होंने उपदेश देते हुए कहा, "यह अक्षर 'द' है। तुम 'द' को ले जाओ। जिन्दगी में 'द' से तुम्हें सब प्रकार का लाभ मिलेगा। यह वह अक्षर है जिसमें तुम तीनों के लिए अलग-अलग सब-कुछ कहने योग्य सार-तत्त्व आ गया है।"

थोड़ी देर तक चारों ओर शान्ति छायी रही।

तीतों कुछ देर तक उपदेश पर सोच-विचार करते रहे। ऋषि ने देवों से पूछा, "तुम 'द' का मतलब समझ गये ?"

तीनों एक-दूसरे के मुख की ओर जिज्ञासा से निहारने लगे।

ऋषि ने फिर प्रश्न दुहराया, "आप लोग जानते हैं कि 'द' शब्द द्वारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने आपको क्या उपदेश दिया है ?"

"जी हाँ ! जी हाँ !! हम आपका अभिप्राय अच्छी तरह समझ गये। अब आपको विस्तार से समझाने का कष्ट नहीं करना पड़ेगा।"

ऋषि ने सन्तोष की साँस ली।

"लेकिन फिर भी मैं मुँह से सुनना चाहता हूँ कि आखिर 'द' से आपने क्या-क्या मतलब समझा है ? अच्छा, देव ! तुम बतलाओ तुमने 'द' का क्या मतलब समझा है ?"

देव ने उत्तर दिया, जी हाँ, मैं इस अक्षर में अपनी जाति के लोगों की निर्बलता और उसके निवारण का उपदेश पढ़ रहा हूँ।"

'यों नहीं, सबके समक्ष स्पष्ट करो।"

देव ने स्पष्टीकरण करते हुए कहा, "आप यह कहना चाहते हैं कि हम देव-लोग चिरकाल से आराम से रहने के कारण कामी और विलासी बन गये हैं। हम अपना सारा बहुमूल्य समय भोग-विलास और आमोद-प्रमोद में नष्ट कर देते हैं। हम इन्द्रिय-लोलुप और भोगी बन गये हैं। हमें उच्च आध्यात्मिक जीवन के प्रति कोई अनुराग नहीं है। 'द' अक्षर का अर्थ 'दमन' अर्थात् आपने हम देवों को इन्द्रिय-दमन, संयम और कार्यशीलता का अमृतोपम उपदेश दिया है।"

ऋषि उत्तर से सन्तुष्ट हुए—"तुमने 'द' का अर्थ ठीक समझा है। जीवन में इसे उतारो।" तब वह मानव की ओर मुड़े और बोले, "मानव, तुम बोलो, 'द' का तुमने क्या अर्थ समझा है ?"

मानव ने सकुचाते-लजाते हुए कहा, "मुझे अपनी निर्बलताएँ दर्पण की भाँति उज़ागर हो गयी हैं। इस अक्षर में मैं अपनी जाति की, मानव मात्र की वे कमजोरियाँ देख रहा हूँ जिनसे हमें बचना चाहिए।"

"साफ-साफ कहो। छिपाने की कोई जरूरत नहीं है।"

मानव ने आगे कहा, "हम मानव बड़े लोभी हैं। धन-संग्रह करने में उचित-अनुचित, ईमानदारी-बेईमानी का कोई ध्यान नहीं रखते; दिनरात गरीबों का शोषण करते हैं। सैकड़ों से हजारों, हजारों से लाखों, और लाखों से करोड़ों रुपये इकट्ठे करते जाते हैं अनुचित तरीकों से कमाये हुए धन से हम लगातार अपनी तिजोरियाँ भर रहे हैं। महल और कोठियाँ बना रहे हैं। न आप खाते हैं, न दूसरों को खाने देते हैं। धन-संग्रह ने हमें पागल कर दिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। इसलिए द' अक्षर से आपने हमें 'दान' देने का उपदेश दिया है। हमें दान देना चाहिए। हम लोग यदि दाता न भी बनें तो कम-से-कम उदार तो अवश्य बन सकते हैं।"

ऋषि सन्तोष भरे स्वर में बोले, "तुमने वास्तव में मेरा अभिप्राय ठीक ही समझा है।"

फिर ऋषि दानव की ओर मुड़े और दानव से वही सवाल किया, "तुमने 'द' का क्या अभिप्राय समझा है?"

दानव लज्जित होकर बोला, "हम दानव लोग बड़े क्रूर और क्रोधी हैं। आवेश और उत्तेजना के क्षणों में आगबबूला हो उठते हैं। भविष्य की चिन्ता नहीं करते। गाली-गलौज करते हैं। एक-दूसरे को कटु वचन बोलते हैं और बेमतलब झगड़ा करते हैं। हम अशिक्षित, अज्ञानी और पिछड़े हुए हैं। उत्तेजना के पागलपन में हमारी बुद्धि और विवेक पंगु हो जाते है, क्रोध और क्रूरता जैसे दुष्ट मनोविकार ही हमारी गिरी हुई अवस्था के लिए जिम्मेदार हैं। 'द' अक्षर द्वारा आपने हमें दया-भाव को विकसित करने का उपकारी उपदेश दिया है।"

"तुमने ठीक मतलब समझा। तुम तीनों ही इस उपदेश से अपनी कमजोरियाँ छोड़ कर इन्द्रिय दमन, दान और दया जैसी दैवी सम्पदाओं को अपने स्वभाव और चरित्र में विकसित करो, तो जिन्दगी सफल होगी।"

इस प्रकार देव, मानव और दानव सन्तुष्ट होकर चले गये।

वि मे कर्णा पतयतो विचक्षुर्वीदं ज्योतिर्हृदय आहितं यत्।
वि मे मनश्चरति दूर आधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये॥

—ऋग्वेद ६। ९।६

अर्थात् याद रखिए, मनुष्य की चंचल इन्द्रियाँ कभी एक ही दिशा में स्थिर नहीं रहतीं। अवसर मिलते ही वे अपने भोग्य विषयों की ओर दौड़ती हैं।

इसलिए मनुष्यों को चाहिए कि वे चंचला इन्द्रियों की विषयलोलुपता के प्रति सदैव सावधान रहें।

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन्मर्डितारं न विन्दते॥

ऋग्वेद १०। ११७। १

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

याद रखिए, आपके धन की उपयोगिता दीन-:दुखियों के अभाव दूर करने में है। इसलिए दान देने की आदत सदैव चलनी रहती चाहिए।

जो दान नहीं करते, वे कंजूस आदमी अपनी संग्रह वृत्ति के कारण सदैव कष्ट पाते हैं। उन्हें अपने धन के लुट जाने का हमेशा डर बना रहता है।

इसलिए अपनी आवश्यकताओं से बचा हुआ धन दान के रूप में समाज को वापस दे देना चाहिए।

'जन-ज्ञान' के सदस्य श्री ताराचन्द जी धीमान जालंधर निवासी की पत्नी श्रीमती हरनाम कौर का लंबी बीमारी के बाद १० मार्च को प्रातः ७। बजे दिल्ली में देहान्त हो गया। इस अवसर पर अनेक संस्थाओं को यथाशक्ति दान भी दिया गया। हम प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कृष्णकान्त चरला

राम राज्य में.....

आज राजनीति का क्षेत्र संकुचित होकर भले ही कूटनीति तक सीमित रह गया है, लेकिन प्राचीन शासन-व्यवस्था में राजनीति को अर्थ-नीति से, सामाजिक नीति से अलग नहीं किया जा सकता था। इसलिए हमें रामायण आदि ऐतिहासिक ग्रंथों में तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था का अलग-अलग उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी हम उन्हें अलग-अलग प्रस्तुत करने की चेष्टा करेंगे।

रामायणकालीन सामाजिक स्थिति

आइये, सब से पहले हम रामायणकालीन सामाजिक स्थिति पर विचार करें। रामायणकालीन भारतीय समाज वर्ण-व्यवस्था पर आधारित था। प्रत्येक वर्ग अपना-अपना कर्त्तव्य पालन करता था। ब्राह्मण विद्योपार्जन में, धर्मानुष्ठान कराने में रत रहते थे। क्षत्रिय शस्त्राभ्यास द्वारा शक्ति-सचय करते थे। वैश्य देश-विदेश में व्यापार द्वारा, कृषि द्वारा धनोपार्जन में संलग्न रहते थे। शूद्र, शिल्प, कला-कौशल के विकास व सेवा में अपने आपको धन्य समझते थे। वर्गों में परस्पर कोई वैमनस्य नहीं था। प्रत्येक को यथोचित आदर-सम्मान मिलता था। प्रत्येक वर्ग संतुष्ट था, असंतोष का कहीं नाम नहीं था। प्रत्येक वर्ग अग्निहोत्र आदि कर्म करता था। महर्षि वाल्मीकि ने तत्कालीन समाज का वर्णन करते हुए लिखा है—"अयोध्या में ऐसा कोई भी नहीं था जो अग्निहोत्र और यज्ञ न करता हो। वहाँ सभी स्त्री-पुरुष धर्मशील, संयमी, सदा प्रसन्न रहने वाले तथा शील और सदाचार की दृष्टि से महर्षियों की भांति निर्मल थे।"

"क्षत्रिय ब्राह्मणों का मुंह जोहते थे। वैश्य क्षत्रियों की आज्ञा का पालन करते थे और शूद्र अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए उपर्युक्त तीनों वर्गों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सेवा में संलग्न रहते थे।" "अयोध्या में कहीं भी कोई कामी, कृपण, क्रूर, दूसरे के धन पर दृष्टि रखने वाला, मूर्ख और नास्तिक मनुष्य देखने को भी नहीं मिलता था।" (बालकाण्ड, छठा सर्ग)। अयोध्यावासियों की सम्पन्नता का वर्णन करते हुए वाल्मीकि लिखते हैं— "उस श्रेष्ठ पुरी में कोई भी ऐसा कुटुम्बी नहीं था, जिसके पास उत्कृष्ट वस्तुओं का संग्रह अधिक मात्रा में न हो, जिसके धर्म, अर्थ और काममय तीनों पुरुषार्थ सिद्ध न हो गये हों। जो दान न करता हो तथा जिसके पास गाय, बैल, घोड़े, धन-धान्य आदि का अभाव हो।" "अयोध्या में कोई भी स्त्री या पुरुष ऐसा नहीं देखा जा सकता था जो धनहीन, रूपरहित तथा राजभक्ति से शून्य हो।" (बालकाण्ड, छठा सर्ग)।

तत्कालीन शिक्षा-व्यवस्था मनुष्य-निर्माण करने वाली होती थी, जीविकोपार्जन-मात्र के लिए नहीं। प्रत्येक वर्ग के ब्रह्मचारी गुरुकुलों से शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरु बालकों के सामने अपना आदर्श प्रस्तुत करते थे। गुरु का महत्त्व माता-पिता से भी अधिक माना जाता था। गुरु के अपमान की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। रामायणकाल में संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था थी। वयोवृद्ध पिता या पितामह का परिवार पर अनुशासन होता था। उसकी आज्ञा का उल्लंघन परिवार का कोई सदस्य नहीं कर सकता था। परिवार का प्रत्येक व्यक्ति, पिता-पुत्र, माता-पुत्र, भाई-भाई, भाई-बहिन के प्रेम और आदर के बंधन में बँधा होता था।

प्रजा में बहुविवाह की प्रथा नहीं थी। परिवार के सदस्य एक-दूसरे के लिए अपने प्राण तक देने को तत्पर रहते थे। व्यक्ति पर परिवार का शासन रहता था। परिवार पर मुखिया का शासन रहता था। मुखिया पर मुहल्ले का, मुहल्ले पर समाज का शासन रहता था। समाज पर राजा का शासन होता था। किसी व्यक्ति के अनुचित कार्य करने पर उसे परिवार से निष्कासित कर दिया जाता था। अगर परिवार ऐसे आदमी को निष्कासित करने में आनाकानी करता था तो उस परिवार को मुहल्ले से निष्कासित कर दिया जाता था। बहिष्कृत होने से मृत्यु श्रेयस्कर मानी जाती थी। अपराधियों को राजा दण्ड देता था। यह था उस समय का समाजवाद। यह है तत्कालीन समाज की छोटी-सी एक झलक। इसी से पाठक स्वयं अनुभव करेंगे कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तत्कालीन समाज की स्थिति अत्यंत उत्तम थी और सब लोग संतुष्ट थे। असंतोष का कहीं नाम नहीं था। लोग धार्मिक विचारों के थे, धर्म के नियमों का पालन करते थे। असत्य, हिंसा, व्यभिचार, कृतघ्नता, चोरी, द्रोह आदि अधार्मिक कृत्यों की ओर उनकी रुचि नहीं थी। लोग शास्त्रोक्त आचरण करते थे। आस्तिक होने के कारण वे कर्मफल, पुनर्जन्म आदि पर विश्वास करते थे। उन्हें बहिष्कार आदि सामाजिक दण्ड, राजदण्ड और ईश्वरीय दण्ड का भय रहता था, इसलिए वे कोई ग़लत काम नहीं करते थे। कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित शाश्वत ऐतिहासिक वर्गयुद्ध का यहां चिह्न भी दिखाई नहीं देता। पश्चिम में वर्गयुद्ध की यह स्थिति भले ही रही हो, पूर्व में यह स्थिति कभी नहीं रही।

राजनैतिक स्थिति

रामायणकालीन भारत में कोई एकछत्र साम्राज्य नहीं था। कोशल, केकय, मिथिला जैसे स्वतन्त्र छोटे-छोटे राज्य थे। उस समय के भारत में राज्यके सात अनिवार्य अंग माने जाते थे— राजा, मन्त्री, सभा, दुर्ग, कोष, सेना और मित्रवर्ग। इनमें से एक के बिना भी राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती थी। यह बात इस प्रसंग से स्पष्ट होती है। महाराज दशरथ जब पुत्रवियोग में परलोक सिधार गये तो मार्कण्डेय नामक राजपुरोहित ने भरत के आने तक शीघ्र ही किसी इक्ष्वाकुवंशीय राजकुमार को राजा बनाने का आग्रह किया और कहा—"जहां राजा नहीं होता वह राज्य नष्ट हो जाता है। वहाँ धन अपना नहीं रहता। बिना राजा के राज्य में धनी लोग सुरक्षित नहीं रहते। धन सुरक्षित न रहने पर वैश्य आदि व्यापारी व्यापार नहीं करते। बिना राजा के कोष खाली हो जाते हैं। राजा के न रहने पर राज्य में किसी भी मनुष्य की कोई भी वस्तु अपनी नहीं रहती। जैसे बड़े मत्स्य छोटे मत्स्यों को हड़प कर जाते हैं, उसी प्रकार अराजक देश में लुटेरे दूसरे की भूमि, सम्पत्ति, बहू, बेटियाँ लूट-खसोट लेते हैं। यदि संसार में भले और बुरे का पारितोषिक और दण्ड द्वारा विभाग करने वाला राजा न रहे तो यह सारा जगत् अंधकार से आच्छन्न हो जाये, कुछ भी न दिखाई पड़े।" इस प्रकार अराजकता की स्थिति को अत्यंत भयावह समझा जाता था।

राजा अपना उत्तराधिकारी, जो आम तौर पर उसका ज्येष्ठ पुत्र होता था, राज्यसभा के सभासदों तथा अन्य अधीन राजाओं की स्वीकृति से चुनता था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शासक के लिए इन-इन गुणों का होना आवश्यक समझा जाता था—धर्मज्ञता, सत्यवादिता, दृढ़ प्रतिज्ञता, शील, बलवत्ता, क्षमाशीलता, प्रियवादिता, जितेन्द्रियता, स्थिरबुद्धिता और लोकप्रियता। दशरथ जी ने रामचन्द्र जी के इन्हीं गुणों का उल्लेख करके उन्हें युवराज चुनने के लिए सभासदों की स्वीकृति माँगी थी। शासक जनता के सामने आदर्श शिष्य का, आदर्श भाई का, आदर्श पति का, आदर्श पिता का आदर्श प्रस्तुत करता था। जनता उसके बारे में क्या सोचती है, इसकी उसे बड़ी चिन्ता रहती थी। रामचन्द्र जी ने गुप्तचर से यह सूचना पाकर कि सीता जी के रावण के यहाँ इतने दिन तक रहने के बावजूद स्वीकार कर लेने पर जनता में उनकी निन्दा हो रही है, सीता का परित्याग कर दिया। आज लाखों लोगों के प्रदर्शन का जो असर होता है उससे कहीं अधिक असर उस समय एक गुप्तचर की सूचना देने से होता था।

राज्य की कामना जनता के सुख के लिए, कल्याण के लिए, उन्नति के लिए, सुरक्षा के लिए की जाती थी। राजनैतिक सत्ता या अधिकार पाने के लिए, आर्थिक लाभ के लिए या भोगविलास के लिए नहीं। तत्कालीन राजनीति का प्रयोजन येन केन प्रकारेण सत्ता में बने रहना नहीं, अपितु प्रजा की आंतरिक और बाह्य शत्रुओं से रक्षा करना होता था। प्रजा के साथ छल-छद्म, मिथ्या प्रचार या कूटनीति का प्रयोग नहीं किया जाता था। कूटनीति का प्रयोग केवल शत्रुओं के साथ किया जाता था। न्याय को शासन का मूल आधार माना जाता था। चोरों, लुटेरों आदि से प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ शासक को प्रजा से कर लेने का अधिकारी नहीं माना जाता था। प्रजा के कल्याण के लिए शासक कितने तत्पर रहते थे, इसका संकेत वनवासकाल में रामचन्द्र जी को लौटा लाने के लिये गए हुए भरत को रामचन्द्र जी के नीति-उपदेश से मिलता है। रामचन्द्र जी भरत से राज्य-व्यवस्था के बारे में प्रश्न करते हैं—"हे कैकेयीकुमार, तुम्हारे राज्य की प्रजा कठोर दण्ड से अत्यन्त उद्विग्न होकर तुम्हारे मंत्रियों का तिरस्कार तो नहीं करती?" (अयो० सौवां सर्ग, श्लोक २७)। "हे तात! कृषि और गोरक्षा से आजीविका चलाने वाले सभी वैश्य, व्यापारी तुम्हारे प्रीतिपात्र हैं न? क्योंकि वैश्यों के कृषि, व्यापार आदि कार्यों में संलग्न रहने पर ही शेष प्रजा सुखी और उन्नतिशील होती है।" (अयो० सौवां सर्ग श्लोक ४७)

आगे चलकर रामचन्द्र जी भरत को प्रजा के प्रति न्याय का उपदेश देते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुए पूछते हैं—"जिस व्यक्ति का चोर होना प्रमाणित हो चुका है, ऐसे चोर को तुम्हारे राज्य के न्यायाधिकारी धन के लालच से छोड़ तो नहीं देते ?" (अयो०—१००—५७)। "हे रघुकुलभूषण। यदि धनी और निर्धन में कोई विवाद छिड़ा हो तो तुम्हारे मंत्री, धन आदि के लोभ को छोड़कर उस मामले पर विचार करते हैं न ? वे धनियों के प्रभाव में तो नहीं आ जाते ?" (१००—५८)। "हे भरत ! निरपराध होने पर भी जिन्हें मिथ्या दोष लगाकर दण्ड दिया जाता है, उन मनुष्यों की आंखों से जो आंसू गिरते हैं, वे पक्षपातपूर्ण शासन करने वाले राजा के पुत्र, धन, पशु और राज्य का नाश कर डालते हैं। कहीं तुम्हारे राज्य में निरपराध व्यक्ति को दण्ड तो नहीं दिया जाता ?" इस प्रकार न्याय पर आधारित शासन-व्यवस्था को राज्य के लिए आवश्यक माना जाता था।

उस समय की राजनीति कोरे आदर्श पर आधारित न रहकर यथार्थ पर आधारित थी। उस समय भी राजनीति के सिद्धान्तों का किस सूक्ष्मता से सर्वांगीण विचार किया जाता था, यह देखकर चकित होना पड़ता है। उपरोक्त प्रसंग में ही रामचन्द्र जी भरत को राजनीति का उपदेश करते हुए पूछते हैं—"हे भरत ! तुमने जिसे राजदूत के पद पर नियुक्त किया है वह पुरुष परम्परा से अपने देश का निवासी, अपने देशहित के लिए प्राणों का भी त्याग करने वाला, विद्वान्, दूसरे के मन की बात समझने में निपुण, प्रतिभाशाली, अनेक भाषाएँ जानने वाला और सदसद्विवेक से युक्त है न ?" कुछ विद्वानों का का विचार है कि आजकल की भाँति उस समय राजदूत नियुक्त करने की प्रथा नहीं थी। इस से उनका अनुमान असत्य सिद्ध होता है। "हे शत्रुसूदन ! शत्रुपक्ष के अट्ठारह तीर्थों (अधिकारियों) को तीन-तीन अज्ञात गुप्तचरों द्वारा सम्पर्क करके उनकी जानकारी रखते हो न ?' वे अट्ठारह तीर्थ इस प्रकार हैं :—शत्रुपक्ष के मंत्री, पुरोहित, युवराज, सेनापति, द्वारपाल, अंतःपुर का अध्यक्ष, कारागाराध्यक्ष, न्यायाधीश, दुर्गपाल, कोषाध्यक्ष, वित्तसचिव कोतवाल, शिल्पपरिचालक, धर्माध्यक्ष, राज्यसभाध्यक्ष, राष्ट्रसीमापाल वनरक्षक आदि। रामचन्द्र जी कहते हैं—"हे भरत ! तुम अपने इन अधिकारियों को शत्रुपक्ष से सम्पर्क स्थापित नहीं करने देते न ?" जिस शासक ने शत्रुपक्ष के इन अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर लिया है वह कभी शत्रुपक्ष से पराजित नहीं हो सकता यह केवल उपदेशमात्र नहीं था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आगे चलकर रामचंद्र जी ने इसी कूटनीति का प्रयोग करके विभीषण को अपने पक्ष में कर लिया था और विजय प्राप्त की थी। वनवासी रामचंद्र जी भरत को राजनीति का उपदेश करते हुए आगे कहते हैं—"हे महाप्राज्ञ भरत, आखेट, जुआ, दिवास्वप्न, दूसरों की निन्दा करना, स्त्रियों में आसक्ति, मद्यपान, नाचना, गाना, बजाना और व्यर्थ घूमना इन दश वर्गों में तो तुम्हारी रुचि नहीं है न ? हे कैकेयीकुमार ! त्रयी, वार्त्ता और दण्डनीति इन त्रिवर्ग में तो तुम्हारी रुचि दृढ़ है न ? हे रघुनन्दन ! संधि (शत्रु से मेल रखना), विग्रह (शत्रु से लड़ाई छेड़ना), यान (आक्रमण करना), आसन (अवसर की प्रतीक्षा में बैठे रहना), द्वैधीभाव (दुरंगी चाल चलना, यानी दिखाना कुछ और करना कुछ), समाश्रय (अपने से बलवान् का आश्रय लेना) इन छः गुणों का तुम ध्यान रखते हो न ? क्योंकि इनके बिना अपने शत्रु पर कोई विजय नहीं पा सकता।" आकस्मिकताओं के लिए सावधान रहने का उपदेश देते हुए राम आगे कहते हैं—"हे कैकेयीनन्दन, तुम आग लगाना, बाढ़ आना, बीमारी फैलाना, अकाल पड़ना और महामारी का प्रकोप होना इन पाँच दैवी बाधाओं से प्रजा की रक्षा का उपाय करने के लिए हमेशा प्रबन्ध किये रहते हो न ?" रामचन्द्र जी भरत को सेना का समुचित ध्यान रखने का उपदेश करते हुए प्रश्न करते हैं—"हे भरत! सैनिकों को देने के लिए नियत किया गया समुचित वेतन और भत्ता तुम समय पर दे देते हो न ? देने में विलम्ब तो नहीं करते ? यदि समय बिता कर भत्ता और वेतन दिये जाते हैं तो सैनिक अपने स्वामी पर भी अत्यंत कुपित हो जाते हैं और इसके कारण बड़ा भारी अनर्थ घटित हो जाता है।" अयो० १००—३२ व ३३)

रामायणकाल में अहिंसा क्षत्रियों के कर्त्तव्य-पालन में आड़े नहीं आती थी, यह इस प्रसंग से स्पष्ट होता है। वनवास काल में तपोवन में रामचन्द्र जी व लक्ष्मण जी को राक्षसों को वध करते देखकर सीताजी ने रामचन्द्र जी से राक्षसों को न मारने का अनुरोध किया और कहा—"आर्यपुत्र ! मिथ्याभाषण, अजितेन्द्रियत्व आदि दोषों से आप सर्वथा मुक्त हैं। आप में किसी दोष की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन आप को दूसरों की हिंसा करते देखकर मुझे बड़ा दुःख होता है।" मर्यादा पुरुषोतम राम ने उत्तर दिया—"सीते ! मैं अपने प्राणों को छोड़ सकता हूँ, तुम्हारा और लक्ष्मण का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परित्याग कर सकता हूँ, किन्तु मनुष्यभक्षी राक्षसों से ऋषियों मुनियों, और ब्राह्मणों की रक्षा के लिए की गई प्रतिज्ञा कभी मिथ्या नहीं कर सकता।" इस प्रकार उस समय के क्षत्रिय अन्य वर्णों की रक्षा करने का अपना कर्त्तव्य पूर्णतया निभाते थे। (अयो० नवां व दसवां सर्ग)

तत्कालीन मन्त्री

शासन-व्यवस्था का संचालन मुख्यतः मंत्रियों द्वारा ही हुआ करता था। इसलिए तत्कालीन मंन्त्री भी अपने विभागों में निपुण और कार्यकुशल हुआ करते थे। महाराजा दशरथ के मंत्रियों का वर्णन करते हुए महर्षि वाल्मीकि लिखते हैं—"राज्य के भिन्न-भिन्न विभाग सँभालने वाले आठ मंत्री थे। वे सब विद्वान् होने के कारण विनयशील, कार्यकुशल, जितेन्द्रिय, श्रीसम्पन्न, महात्मा, शस्त्रविद्या के ज्ञाता, सुदृढ़, पराक्रमी, समस्त राजकार्यों में सावधान, राजा की आज्ञा के अनुसार कार्य करने वाले, तेजस्वी, श्रीमान्, कीर्तिमान्, दैवी सम्पत्ति-युक्त, मुस्करा कर बात करने वाले थे। वे कभी काम, क्रोध या स्वार्थ के वशीभूत होकर झूठ नहीं बोलते थे। अपने शत्रुपक्ष की कोई भी बात उनसे छिपी नहीं रहती थी। दूसरे राजा क्या कर रहे हैं, क्या कर चुके हैं, क्या करना चाहते हैं, ये सभी बातें गुप्तचरों द्वारा उन्हें मालूम रहती थीं। वे सभी व्यवहारकुशल थे। उनकी अनेक अवसरों पर परीक्षा ली जा चुकी थी। वे मौका पड़ने पर अपने पुत्र को भी उचित दण्ड देने में नहीं हिचकते थे। वे सदा दुष्टों को दण्ड देने और सत्पुरुषों की रक्षा में तत्पर रहते थे।" (बालकाण्ड आठवाँ सर्ग)

उपरोक्त प्रसंग में भरत को मंत्रियों के चुनाव से सम्बन्धित उपदेश करते हुए रामचन्द्र जी कहते हैं—"हे भरत! तुम सहस्रों मूर्ख मंत्रियों की अपेक्षा एक विद्वान् को ही अपना मंत्री बनाने की इच्छा रखते हो न? क्योंकि, यदि राजा हजार या दस हजार मूर्खों को अपनी राज्यसभा में मंत्री बनाकर रख ले तो भी उनसे अवसर पर कोई अच्छी सहायता नहीं मिलती। हे रघुनन्दन! अच्छी मन्त्रणा ही राजाओं की विजय का मूल कारण है। यदि एक मन्त्री भी मेधावी, शूरवीर, चतुर एवं नीतिज्ञ हो तो वह राजा या राजकुमार को बहुत बड़ी विजय और सम्पत्ति की प्राप्ति करा सकता है। तुमने योग्यता के अनुसार ही व्यक्तियों को कार्यों में नियुक्त किया है न? छोटे व्यक्तियों को तुमने बड़े और महत्त्वपूर्ण कार्यों में तो नहीं लगा दिया?" (अयो०—१००—१६,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२२, २३, २४)

इस प्रकार के मंत्रियों को, जिनके पिता, पितामह राजभक्त रहे हों और सफलतापूर्वक मंत्री का कार्य सँभालते रहे हों, प्राथमिकता दी जाती थी। अच्छे मंत्री को ही विजय का कारण माना था।

इस प्रकार उस समय राजनीति कूटनीति और युद्धनीति का पूरा विकास हो चुका था। वनवासी राम सुग्रीव तथा थोड़े-से वनवासियों की सहायता से परम पराक्रमी और मायाचारी रावण को, जिससे महाराज दशरथ तक भयाक्रांत थे, बुरी तरह परास्त कर के विभीषण को लंका के सिंहासन पर बिठा देना स्वयं में ही राजनीति और कूटनीति का एक अपूर्व चमत्कारी उदाहरण है।

तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था

आइये, अब हम देखें कि उस समय राज्य की तथा प्रजा की आर्थिक व्यवस्था क्या थी। अयोध्या नगरी की समृद्धि का वर्णन करते हुए वाल्मीकि लिखते हैं—"कोशल नामक जनपद में सरयू के किनारे बसी हुई अयोध्या नामक नगरी है, जो प्रचुर धन-धान्य से सम्पन्न, सुखी और समृद्धिशाली है। उस पुरी के भीतर पृथक्-पृथक् बाज़ार थे। यहाँ सब प्रकार के यन्त्र और अस्त्र-शस्त्र संचित थे। प्रजा के मनोरंजन के लिए अनेक नाट्यशालाएँ व रंगशालाएँ बनी थीं। उस पुरी में सभी कलाओं के शिल्पी निवास करते थे। वह नगरी हाथी, घोड़े, गाय, बैल, ऊँट आदि उपयोगी पशुओं से भरी-पूरी थी। वहां के महलों का निर्माण नाना प्रकार के रत्नों से हुआ था। वे गगनचुम्बी प्रासाद ऊँचे जान पड़ते थे। वह सब प्रकार के रत्नों से भरी-पूरी तथा सात-मंज़िले प्रासादों से सुशोभित थी।" विदेशी व्यापार के बारे में महर्षि लिखते हैं—"विभिन्न देशों के निवासी वैश्य व्यापारी उस पुरी की शोभा बढ़ाते थे तथा कर देने वाले व्यापारी, सामन्त तथा नरेशों के समुदाय उस नगरी को घेरे रहते थे।" तत्कालीन कर-नीति का वर्णन करते हुए रामायणकार लिखते हैं—"अधिकारी ब्राह्मणों और क्षत्रियों को कष्ट न पहुंचा कर न्यायोचित धन से राजा का खज़ाना भरते थे।" (अयो० पांचवाँ सर्ग)

तत्कालीन वेश-भूषा का वर्णन करते हुए वाल्मीकि लिखते हैं—"उस नगरी में ऐसा कोई न था, जिसने कुण्डल, मुकुट, बाजूबंद, स्वर्णपदक तथा हाथ का कड़ा धारण न किया हो और जिसने नहा-धोकर—पवित्र होकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंगों में चंदन का लेप न किया हो।" पाठक कल्पना कर सकते हैं कि जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वर्ण या चाँदी का मुकुट आदि पहनता था, वहाँ प्रजा कितनी सम्पन्न होगी, प्रजा के पास कितना स्वर्ण, कितनी चांदी, कितने रत्न होंगे। आज जहाँ शासकों को मुकुट पहनना नसीब नहीं होता, वहाँ प्रत्येक नागरिक के मुकुट पहनने की बात आश्चर्यजनक लग सकती है। लेकिन वास्तविकता है। किसी देश की आर्थिक सम्पन्नता कृषि, पशुधन (आज पशुधन का स्थान यंत्रधन ने ले लिया है), खनिज पदार्थों, व्यापार, शिल्प तथा कला-कौशल के बाहुल्य पर निर्भर करती है। रामायणकाल में हमें इन सब वस्तुओं की प्रचुरता स्पष्ट दिखाई देती है। कृषि मुख्य व्यवसाय था। सब प्रकार के धान्य बहुत मात्रा में होते थे। हाथी, घोड़ा, गाय, बैल, ऊँट आदि पशुधन की बहुतायत थी। स्वर्ण, हीरा, रत्न, रजत तथा रथ आदि में प्रयुक्त होने वाली लोहा आदि धातुओं के आधिक्य से आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि खानों से धातु निकालने और उन्हें शुद्ध करने की विद्या का पूर्ण विकास हो चुका था। कई प्रकार के उद्योग स्थापित हो चुके थे। देश-विदेश में व्यापार भी खूब होता था। "वहाँ अनेक कलाओं के शिल्पी रहते थे"—इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक प्रकार के शिल्प तथा कला-कौशल का खूब विकास हो चुका था।

उस समय की प्रजा खूब सम्पन्न थी। प्रत्येक के पास समान ही धन हो, ऐसी बात नहीं (जो कि सम्भव भी नहीं), लेकिन कोई भी अभाव से पीड़ित नहीं था। राजा प्रत्येक प्रकार के धनोपार्जन पर छठा भाग कर लिया करता था। राजा का कोष भरा रहता था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उस समय का भारत सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से बड़ा सुसभ्य, सुदृढ़, सुसम्पन्न था, उन्नत था। तत्कालीन रामराज्य एक आदर्शराज्य का पर्यायवाची बन गया था—यह साधारण बात नहीं। उस समय संसार का कोई भूभाग इतना विकसित नहीं था। मिश्री सभ्यता का विकास बाद में हुआ। स्पार्टा के इलियड, ओडेसी आदि तो अभी भविष्य के गर्भ में थे और हजारों वर्ष बाद घटित हुए। ★

'राम-राज्य', गांधी का सपना, टूट चुका है।
भारत का सौभाग्य भाग्य भी रूठ चुका है॥
रावण की छाया का नर्तन बढ़ता जाता है।
जीवन से अब सौख्य और मधुर हटता जाता है॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृथ्वीचन्द्र

नयी धरती : नया सवेरा

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि संसार में आज भी सारी की सारी मानव जाति वैसे ही आर्य है (श्रेष्ठ, नेक, भद्र है) जैसे पुरा काल में थी। 'स्वार्थी दोषं न पश्यति' के सूत्रानुसार मानवता के कुछ स्वयं-मन्यमानाः नेताओं ने समय-समय पर मानवता में अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए ऐसे-ऐसे भेद-भाव डाल दिये कि मानवता की एकता को छिन्न-भिन्न कर डाला, समता में विषमता आरोपित कर दी। फलतः, लोग अपने आप को एक दूसरे से सर्वथा भिन्न समझने लग गये, एक-दूसरे से विरोध करने लग गये, मानवता के कतिपय खण्ड एक-दूसरे के शत्रु तक बन बैठे। परिणामस्वरूप मानवता आज विविधता, विभिन्नता तथा विषमता के कारण दुःख सागर में गोते खा रही है और परमात्मा के बनाये हुए इस आनन्दपूर्ण, यज्ञमय संसार को 'दुनिया दुःखों का घर है' कह कर अपने को यथार्थ वक्ता समझती है। परन्तु यह सर्वथा भ्रम है।

आनन्दकन्द भगवान् ने दुःखी दुनिया क्यों बनानी थी ? पैदा होते ही मानव आनन्द की खोज करने लग जाता है। पहले वह दीपक की लौ में, फिर खिलौनों इत्यादि में आनन्द खोजता है। हीरा हीरों की खान में ही खोजा जाता है, अन्यत्र नहीं।

मानव शरीर और आत्मा रखता है। शरीर लौकिक वस्तु है और आत्मा पारलौकिक। शरीर पांच तत्त्वों से बना है। वे पांच तत्त्व हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी। ये प्राकृतिक तत्त्व हैं। प्रकृति के अन्दर देखने में आता है कि ये पांचों तत्त्व प्राणि मात्र की निष्काम (अपनी मेहनत का मूल्य लिए बिना) सेवा करते हैं। इन की सेवा भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस के बिना प्राण-धारण या जीना असंभव हो जाता। इन तत्त्वों से निर्मित देह रखने वाले मनुष्य का भी कर्तव्य बन जाता है कि वह भी इन तत्त्वों की प्रकृति के विरुद्ध, जिन से वह बना हुआ है, न जा कर प्राणि मात्र की निष्काम (अपनी मेहनत का मूल्य लिए बिना) सेवा करे। यदि मानवता निष्काम सेवा नहीं करती तो अपनी प्रकृति के विरुद्ध कार्य करती है। दुःख पैदा होता है तब, जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकृति के विरुद्ध कार्य किया जाता है। यदि यह दोष अतिशय बढ़ जाये, कोई भी व्यक्ति किसी प्राणी की निष्काम सेवा नहीं करता, तो प्रकृति मानव जाति को यथोचित दण्ड देती है, क्योंकि मानव जाति ही बुद्धि से विभूषित और कर्म करने में स्वतन्त्र है। इसे ही सोच समझ से काम लेकर निष्काम कर्म (या सेवा) करना चाहिए था। आज ही मानवता के सब दुःख दूर हो सकते हैं यदि मानवता प्राणी मात्र की निष्काम सेवा करने लग जाये।

आनन्द या परमात्मा की खोज के लिए मानव के पास साधन, (आत्मा) है। अतः आत्मा को सदा परमात्मा से युक्त (जुड़ा हुआ) रखना होगा, क्योंकि परमात्मा आनन्द है और व्यक्ति मात्र को आजीवन उसी सच्चे आनन्द की खोज रहती है।

हाथ-पाँव आदि शरीर से प्राणिमात्र की निष्काम सेवा करती हुई तथा आत्मा से सच्चिदानन्द की खोज करती हुई मानव जाति आज भी पूरी तरह से सुखी हो सकती है। मानव जाति को एक दिन ऐसा ही करना पड़ेगा, अन्यथा दुःख से मानवता का कभी भी छुटकारा न हो सकेगा। कीचड़ से धोने पर तो हाथ कभी भी नहीं धुल सकते।

परमात्मा के इस संसार रूपी नन्दन उद्यान में 'हे मानव !' तू सैर करने आया है, तेरी सैर का उद्देश्य आनन्दरूप परमात्मा की खोज है। तुम्हें इस ससार की किसी वस्तु को, धन दौलत को, साथ ले जाने का सामर्थ्य या आज्ञा नहीं है। न ही इस नन्दन उद्यान में तेरी तरह विचरने वाले किसी अन्य मानव, पशु, पक्षी, वृक्ष, पेड़ आदि को तनिक हानि पहुँचाने या नष्ट करने की आज्ञा है, न ही औचित्य है। सैर करने के लिए जो तुझे वर्दी अर्थात् शरीर मिला है, सैर की समाप्ति पर वह भी तुम्हारे से यहीं उतरवा ली जायेगी। तो फिर लालच किस बात का ? यदि अपनी प्रकृति के विरुद्ध कार्य करेगा तो दुःख सहेगा जैसे कि आग में डालने से अंगुली जल जाती है। परमात्मा के नियम सदा एकरस तथा अटल रहते हैं। अतः संसार में प्राणिमात्र की निष्काम सेवा कर ; लालच मत कर ; कस्य स्वित् धनम् ? धन किस का है? किसी का नहीं ; इसे सदा याद रख और दुनिया को सुख का घर बना। ऐ मानव जाति ! तनिक सोच ! आखिर, सोना-चाँदी जिस पर तू इतनी भरमा रही है, है क्या ? चमकीली मिट्टी ही तो है। मिट्टी तुम्हें मिट्टी ही बना डालेगी, तेरा जीवनोद्देश्य ही नष्ट हो जायेगा। अतः आत्मा द्वारा परमात्मा की प्राप्ति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से सच्चा आनन्द प्राप्त कर !

मनीषियों, ज्ञानियों तथा योगी जनों, सब ने ही, एक स्वर हो कर, सदा निष्काम कर्म (अपनी मेहनत का मूल्य लिए बिना सेवा करने) पर बल दिया है। उन सब का कथन व्यर्थ नहीं हो सकता। यदि मानव योनि में निष्काम सेवा नहीं की जाती, तो मानवेतर पशु आदि हीन योनियों में पड़ कर यह निष्काम सेवा करनी ही पड़ेगी, साथ ही मार-पीट आदि दण्ड, दुत्कार तथा निरादर-तिरस्कार भी सहना पड़ेगा ! अतः हे मानव जाति ! तू सत्य को पहचान, तथ्य को ग्रहण कर।

सकाम कर्म (सकाम सेवा या अपनी मेहनत का फल या मज़दूरी लेना) दुःख का कारण बन जाता है, क्योंकि मेहनत का मूल्य लेने वाला यह समझता है कि मुझे पारिश्रमिक कम मिला है, देने वाला समझता है कि मुझ से अधिक लिया गया गया। दोनों के हृदयों में लोभ पैदा हो जाता है और स्मरण रहे कि लोभ ही सब, पापों, ईर्ष्या, द्वेष, अन्याय, लड़ाई, फिसाद, दंगे, झगड़े, लूटखसूट, युद्ध आदि दुःखों का कारण होता है। जिस किसी ने यह कहा कि दस नाखूनों की कमाई खानी चाहिए, वह भी गलत ही कह गया, ऐसे तो एक बटमार भी कह सकता है कि वह दस नाखूनों की कमाई खाता है। सत्य तो यह है कि पूरी तरह से मेहनत करके अपनी मेहनत का फल आप ही खा जाने वाला व्यक्ति भी पाप ही खाता है, क्योंकि ऐसा करना निष्काम सेवा के अटल नियम के विरुद्ध है और निष्काम सेवा ही सच्चा मानव धर्म है।

रहा मानव के जीवन-यापन का प्रश्न। यदि मानव सबसे बढ़-चढ़ कर एक दूसरे की निष्काम सेवा करेंगे तो सब का जीवन-यापन अवश्य होगा। जब तक दुनिया निष्काम सेवा करना अपनी जीवन पद्धति नहीं बना लेती, तब तक अस्थायी तौर पर व्यापार-व्यवहार में एक रुपये पीछे एक पैसे से लेकर पच्चीस पैसे तक (एक प्रतिशत से २५ प्रतिशत तक) लाभ उठा सकती है, पुनः धीरे-धीरे कम करती-करती निष्काम सेवातक शीघ्रातिशीघ्र पहुँच सकती है। तभी नयी धरती पर नया सवेरा जन्म ले सकेगा।

नये युग का नया निर्माण करना है, अंधेरे में उजाला आज भरना है।
मिटानी अंधरात्रि है मनुज की, मनुज को 'देव' का ही रूप धरना है॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनूप सिंह

ईसानुयायियों के अत्याचार का इतिहास

जब यूरोप में ईसाई मत अपनी चरम सीमा पर था और राज्य का संचालन भी पोप (ईसाइयों का धर्म गुरु) के आदेशानुसार ही होता था तब ईसानुयायियों ने स्त्रियों, विद्वानों तथा वैज्ञानिकों पर जो अत्याचार किये हैं उन्हें पढ़कर आज भी हरेक व्यक्ति भयभीत हो उठता है। अग्नि में जीवित जला डालना और तड़पा-तड़पा कर मारना तो ईसानुयायियों के बाएँ हाथ का काम था। इनके द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन करते हुए विश्व विख्यात नोबेल पुरस्कार विजेता सर बरट्रैण्ड रसेल लिखते हैं—"तथाकथित धार्मिक युग में जब लोग वस्तुतः पूर्णतया ईसाई धर्म में विश्वास रखते थे, अत्याचार से पूर्ण इनक्विजिशन जारी था जिसके फलस्वरूप लाखों की संख्या में अभागिनी स्त्रियाँ डायन के रूप में जीवित जला दी गयीं और धर्म के नाम पर हर प्रकार की निष्ठुरता बरती गई।"

'जोन आफ आर्क' को जादूगरनी कहकर जिन्दा जला दिया। विलियम टिण्डल को सन् १५३६ में बाइबल का अंग्रेजी में अनुवाद करने के कारण जीवित ही जला दिया गया।

निकोलस कोपरनिकस (१४७३-१५४३) ने सिद्ध किया था—"सूर्य स्थिर है और पृथ्वी अपनी कीली के चारों ओर तथा सूर्य के चारों ओर घूमती है।" कोपरनिकस ने इस सिद्धान्त को कुछ काल तक पोप के भय के कारण प्रकट नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि ऐसा करते ही उसे 'इनक्विजिशन कोर्ट' (धार्मिक अपराधी को दण्ड देने वाला न्यायालय) में पेश होना पड़ेगा। ज्ञातव्य है कि कोपरनिकस का सिद्धान्त बाइबल के विरुद्ध है। बाइबल के अनुसार पृथ्वी स्थिर है।

जब कोपरनिकस ने अपने सिद्धान्त को प्रकाशित कराया तो वह उस समय अपनी मृत्यु शय्या पर था। इस सिद्धान्त के प्रकाशित होने के कुछ ही दिनों पश्चात् वह परलोकगत हो गया। यदि वह जीवित रहता तो अवश्य ही उसे 'इनक्विजिशनिस्ट्स' कठोर यातनायें देकर जिन्दा ही अग्नि में जलाकर मार डालते जैसा कि उन्होंने उसके बाद के वैज्ञानिकों के साथ किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पोप ने कोपरनिकस के सिद्धान्त को "हेरेसि" (ईसाईमत के विरुद्ध सिद्धान्त) घोषित कर दिया था।

'जिआर्दानो ब्रुनो' नामक वैज्ञानिक ने कोपरनिकस के सिद्धान्त की प्रशंसा की जिसका फल उसे यह मिला कि ७ वर्ष तक कठोर यातनाएँ सहनी पड़ीं और बाद में उसे जिन्दा ही जला डाला गया।

गैलिलियो ने कोपरनिकस के सिद्धांत का प्रतिपादन किया जिसके परिणामस्वरूप उसको कठोर सजा दी गई। उसने क्षमा याचना की तथा वायदा किया कि वह इस सिद्धान्त का लिखित अथवा मौखिक रूप से प्रचार नहीं करेगा। इस वायदे पर ही उस बेचारे के प्राण इन क्रूर ईसानुयायियों से बचे।

"इनक्विजिशन कोर्ट का रक्तरंजित इतिहास"

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'विश्व इतिहास की झलक' में 'इनक्विजिशन कोर्ट' के इतिहास पर काफी प्रकाश डाला है। एतद्-विषयक कुछ अंशों को नीचे उद्धृत किया जाता है।

स्त्रियों और पुरुषों का दाह

"१२३३ ई० में इनक्विजिशन कोर्ट स्थापित करके ईसाई संघ ने बाकायदा और सरकारी तौर पर मजहब में हिंसा का राज्य कायम कर दिया। यह एक किस्म की अदालत होती थी, जो लोगों के ईमान के कट्टरपन की जांच करती थी और अगर इसकी राय में वे जांच में पूरे नहीं उतरते थे तो मामूली तौर पर उन्हें जला दिये जाने की सलाह दी जाती थी। काफिरों (हेरेटिक्स) को बाकायदा ढूंढ़-ढूंढ़कर पकड़ा गया और उनमें से सैकड़ों को जिन्दा जला दिया गया। जिन्दा जलाने से भी ज्यादा बुरी बात यह थी कि लोगों से प्रायश्चित्त कराने के लिए उन्हें यातनायें दी जाती थीं। बहुत-सी गरीब अभागी औरतों पर डायन होने का अपराध लगाया गया और वे जला दी गईं।"

"हड्डियाँ भी जला दी गईं"

"जिन लोगों ने ज्यादा खुले तौर पर ईसाई संघ की आलोचना करना शुरू किया उनमें 'वाईक्लिफ' नामक एक अंग्रेज भी था। वह पादरी था और आक्सफोर्ड में प्रोफेसर था। वह बाइबल का अंग्रेजी में सबसे पहले अनुवाद करने वाला मशहूर है। अपनी जिन्दगी में तो वह रोम के कोप से किसी तरह बच गया। लेकिन १४१५ ई० में मरने के ३१ वर्ष बाद ईसाई संघ परिषद्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
ने हुक्म दिया कि उसकी हड्डियाँ खोदकर जला दी जाएं और ऐसा ही किया गया।

"कैलविन की क्रूरता"

'क्या तुम्हें जेनेवा के पार्क में 'रिफार्मेशन' के उस बड़े स्मारक की याद है जिसकी दूर-दूर तक फैली हुई दीवारों पर कैलविन वगैरा की मूर्तियाँ हैं। कैलविन इतना कट्टर था कि उसने बहुत-से लोगों को सिर्फ इसलिए जलवा दिया था कि वे उससे सहमत नहीं थे और स्वतंत्र विचारक थे।"

"निदरलैण्ड्स के निवासियों के साथ निर्दयता"

१५६८ में तो इनक्विजिशन ने कुछ गिने-चुने आदमियों को छोड़कर निदरलैण्ड्स के सारे निवासियों को एक ही फैसले में काफिर करार देकर मौत की सजा दे डाली। यह रक्त भरा फैसला इतिहास में बेमिसाल है जिसने तीन-चार लाइनों में ही ३० (तीस लाख) आदमियों को सजा दे दी।"

पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी अपनी पुस्तक "वैदिक साहित्य" में इनक्विजिशन कोर्ट के विषय में लिखते हैं—"१४८१ ई० में विज्ञानवादियों का दमन करने के लिए ईसाइयों ने "कोर्ट आफ इनक्विजिशन" नामक विशेष अदालत स्थापित की थी जिसमें ईसाई मत के विरुद्ध विज्ञान के किसी सिद्धान्त का प्रचार करने वाले वैज्ञानिकों पर उन्हें सजा दी जाती थी। यही नहीं, उन्हें नाना प्रकार की यंत्रणायें देकर उनसे स्वीकार कराया जाता था कि उनका सिद्धान्त झूठा है। जो स्वीकार नहीं करते थे उन्हें जीते जी जला दिया जाता था। उक्त अदालत की आज्ञा से प्रथम वर्ष में २,००० विद्वान् जलाये गये। इस अदालत का अध्यक्ष "तारकीमाडा" नामक व्यक्ति १८ वर्षों तक रहा। इसके समय में १०२२० वैज्ञानिकों और उनके भक्त जीते जी जलाये गये और ८७३२७ मनुष्यों को अन्य प्रकार के दण्डों से दण्डित किया गया।"

पाठक वृन्द! यह है अहिंसा का प्रचार करने वाले और व्यवहार में पाशविकता को अपनाने वाले ईसानुयायियों के अत्याचार के इतिहास की मुंह बोलती तस्वीर। मानव जाति के इतिहास को कलंकित करने वाले ईसाईमत के इस भयावह रक्तरंजित इतिहास को पढ़कर कोई भी पाठक प्रकम्पित हुए बिना नहीं रह सकता।

भारत को ईसालैंड बनाने का स्वप्न देखने वालों को हम यह बता दें कि सोया भारत जाग चुका है और उनका देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्र यहाँ सफल न हो सकेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इतिहास साक्षी है

गजनी की सवा लाख फौजों से ११०० राजपूत

वीरों का युद्ध : दो सैनिकों का बुद्धिचातुर्य

गजनवी की सेना मौत के मुँह में

दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

महमूद गजनवी ने सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इस मन्दिर की मूर्ति के बीच और मन्दिर के भीतर करोड़ों रुपये का सोना छिपा हुआ है, यह जानकर उसका लालची मन भारत पर हमला करने के लिए उतावला होने लगा। उसकी ५० हजार सुसज्जित सेना मुलतान और लाहौर से होती हुई राजस्थान की मरुभूमि तक पहुंच गयी। रास्ते के हिन्दू राजा उसका सामना करने का साहस न कर सके और चुप-चाप इस हमलावर की अधीनता स्वीकार करते गये। अब उस की फौज में ५० हजार सवार और ६५ हजार पैदल सिपाही थे। ग़ज़नी की नीति मार्ग में आने वाले सामन्तों से लड़ाई न कर खुशामद-मिन्नत अथवा, कभी-कभी, हीरे-जवाहरात का थाल भेंट कर सोमनाथ मन्दिर के प्रभास पाटन की ओर जल्दी से जल्दी पहुँच जाना था। सिपाहियों को उसने भारी लूट का लालच दे रखा था। इस लिए वे भी लक्ष्य तक जल्दी पहुँचने के लिए उतावले हो रहे थे।

गोगा बापा के सामने हीरे-जवाहरात का थाल

ग़ज़नवी मारवाड़ के रास्ते गुजरात-सौराष्ट्र जा रहा था। यहीं प्रभास-पाटन क्षेत्र में सोमनाथ का सुप्रसिद्ध मन्दिर था। इस मार्ग में एक छोटा गाँव पड़ता था, जिसका नाम था गोगा मढ़ी। इस के सरदार का नाम गोगाजी था। यद्यपि यह गाँव एक दम छोटा और मारवाड़ की मरुभूमि के किनारे पर था, किन्तु यहाँ के निवासियों की वीर-कथाएँ दूर-दूर तक फैली हुई थीं। महमूद गजनवी ने इस गाँव के बहादुरों के कारनामे सुने। सरदार गोगा को प्रलोभन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
देने के लिए उसने अपने एक सेनापति सालार मुहम्मद को हीरे-जवाहरात के थाल के साथ भेजा। सेनापति ने कहा—हमारे बादशाह इस रास्ते प्रभास पाटन जा रहे हैं। आपकी सहायता की कामना करते हुए यह तुच्छ भेंट बादशाह ने आप की सेवा में भेजी है। आप इसे कबूल फरमाएँ।

९० वर्ष के गोगा सरदार ने पूछा—तुम्हारे बादशाह का प्रभास पाटन जाने का क्या उद्देश्य है? सेनापति ने कहा—हजूर! वहां सोमनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है जिस में अपार सोना है। इस्लाम तो मूर्ति पूजक नहीं है। इसलिए बादशाह इस मूर्ति को तोड़कर एक ओर इस्लाम के एक उसूल का पालन करेगा और दूसरे मूर्ति में छिपे अनगिनत सोना-जवाहरात लूट लेगा।

बापा ने सोने का थाल लात मार कर फेंक दिया

आँखें बिजली जैसी चमकने लगीं। हाथ एकदम पास पड़ी तलवार की मूठ पर जा पड़ा। शरीर क्रोध के मारे कांपने लगा। सिंह सदृश गर्जन के स्वर में बोले—अरे नीच! तू हमारे ही मन्दिर को तोड़ने और लूटने के लिए हम से ही सहायता मांगने आया है? शेर की मांद में हाथ डालने का तुझे साहस कैसे हुआ? अगर तू दूत बन कर न आया होता, तो मैं तेरा सिर अपने हाथ से अभी कलम कर देता। तेरे बादशाह को शर्म नहीं आती कि सोने के लालच में वह दूसरे देश में जा कर बेकसूर जनता की हत्या करने पर उतारू हो गया है। उसे जा कर कह दो कि जब वह मरेगा, तब सोने का एक कण भी उसके साथ नहीं जायेगा; उसके आमाल और कर्म ही साथ जायेंगे।

सरदार गोगा ने राजपूती आत्म सम्मान और देश भक्ति के आवेश में जोर से हीरे-जवाहरात के थाल को लात मारते हुए ऊंची आवाज में कहा "जाओ, अपने बादशाह से कह दो, हम इन तुच्छ प्राणों की तनिक भी परवाह न करते हुए अपने को मिटा देंगे, पर शत्रु के आगे कभी सिर नहीं झुकाएँगे। राजपूत सिर कटाना जानता है। सिर झुकाना नहीं।

गोगामढ़ी में युद्ध की तैयारी

अगले दिन से ही गोगामढ़ी गाँव में युद्ध की तैयारी प्रारम्भ हो गयी। वीर शिरोमणि गोगा सरदार के २१ पुत्र, ६४ पौत्र और १२५ प्रपौत्र थे। इनके अतिरिक्त उसके पास ९०० बहादुरों की सेना थी। १५ दिन तक युद्ध की तैयारी होती रही। समुद्र के तूफान की तरह गजनवी की सेनाएँ लगातार बढ़तीं आ रही थीं। गजनी ने गोगामढ़ी के रास्ते को छोड़ कर दूसरे मार्ग से अपनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सेनाओं को कूच करने का आदेश दिया। शायद वह सरदार गोगा से उलझना नहीं चाहता था।

गाँव के प्रधान पुजारी नन्दीदत्त सरदार गोगा की चापलूसी करते हुए कहने लगे—अन्नदाता, सिर से बला टल गयी। शत्रु की फौजें इस गाँव के रास्ते को छोड़ कर दूसरे मार्ग से आगे बढ़ गयी हैं। अब आप निश्चिन्त हो जाएं।

यह सुनते ही बापा गोगा की झुर्रियों भरी दाढी-मूँछे फड़फड़ाने लगीं, होठ कांपने लगे और वह शेर की दहाड़ के समान ऊँची आवाज में बोले—पुजारी जी! राजपूत क्षत्रियों के साथ चिरकाल से रहते हुए भी तुम नपुंसक ही हो। तुम्हें यह कहते हुए शर्म नहीं आती कि हम शत्रु के हमले से बच गये। अच्छा, अब समय बहुत थोड़ा है। हमें शत्रु को रास्ते में जा कर दबोचना है। तुम अभी गाँव में जा कर महिलाओं और बच्चों को जौहर के लिए तैयार करो। ध्यान रखो, गढ़ी की कोई महिला व बच्चा शत्रु के हाथ न पड़े।"

युद्ध की तैयारी प्रारम्भ हो गयी। १० वर्ष की आयु से कम बालकों और महिलाओं को छोड़ शेष समस्त ग्रामवासी केसरिया बाना पहन और अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हो गढ़ी के मैदान में एकत्र होने लगे। इन वीरों की संख्या ११०० के करीब थी। कुछ और घोड़ों पर बैठे सिपाही पीछे और पैदल सिपाही आगे की ओर तीव्र गति से बढ़ने लगे। मारू बाजा लगातार वीरों के रक्त को गर्म कर रहा था। इस सेना का नेतृत्व सरदार गोगा बापा कर रहे थे। वह आज इतने प्रसन्न थे मानो दूल्हा बन विवाह के लिए जा रहे हों?

केसरिया बाना पहने राजपूत मैदान में

गजनवी की करीब सवा लाख फौज गढ़ी के रास्ते को छोड़ दूसरे मार्ग से अभी आगे बढ़ी ही थी कि पीछे से "हर-हर महादेव" के जयघोष के साथ गोगाबापा की ११०० की आग से जूझने वाली सेना ने धावा बोल दिया। गजनवी की सेना में तो अधिकतर सिपाही भाड़े के टट्टू थे और केवल लूट के लोभ से सेना में भरती हुए थे। उनमें भला जोश और कुर्बानी की भावना कहाँ? पर सवा लाख सिपाहियों की संख्या के आगे ११०० कब तक ठहर सकते थे? शत्रु की सेना में तहलका मच गया। बेतहाशा भगदड़ पड़ गयी। देशभक्त राजपूत वीरों ने गाजर-मूली की तरह शत्रु का सफाया किया। दो घण्टे की इस घमासान लड़ाई में एक-एक राजपूत ने कम से कम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
१० शत्रुओं को तो अवश्य सदा के लिए सुला दिया था। अन्ततः केवल दो वीर बचे, एक गोगा वापा का पुत्र सामन्त और दूसरा पौत्र सज्जन चौहान। ये दोनों युद्ध के मैदान से भाग कर नहीं बचे थे, अपितु गजनवी के आक्रमण की अन्तिम सूचना प्रभास पाटन के राजा को देने के लिए गये थे, ताकि वह समय रहते शत्रु का मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाएँ। वापसी पर भागते हुए गजनवी के सिपहियों से गढ़ी के समस्त व्यक्तियों की वीर गति को प्राप्त होने के समाचार से इन दोनों युवकों को हर्ष और खेद दोनों हुए, पर इन दोनों ने अपने कर्त्तव्य का तत्काल निश्चय किया। सचमुच इन दोनों का निश्चय बड़ा चमत्कारिक और इतिहास में सदा स्वर्ण अक्षरों में उल्लेखनीय रहेगा !

सामन्त और सज्जन चौहान के दूत के रूप में

जालौर के रावल ने अपने पड़ोसी राजा भीमदेव को नीचा दिखाने के लिए महमूद ग़ज़नवी को शरण देने की स्वीकृति दे दी थी। गोगा वंशीय सामन्त और सज्जन चौहान ने रावल को बहुत समझाया कि आपसी वैमनस्य से विदेशी शत्रु को लाभ उठाने का मौका नहीं देना चाहिए। पर यह मन्द बुद्धि रावल नहीं माना। तब इन दोनों युवकों ने अपना वेश बदल और अपने को जालौर के रावल का दूत बना ग़ज़नवी से मुलाकात की। उस समय शत्रु की फौज में ३० हजार घुड़ सवार, ५० हजार तीरंदाज और ३ हजार हाथी थे। ३० हजार ऊँटों पर केवल रसद और पानी था। इससे पहले किसी विदेशी हमलावर के पास इतनी फौज नहीं सुनी गयी थी।

दोनों दूत गजनवी के पास पहुंचाये गये। दुभाषिये द्वारा उन्होंने बताया कि जालौर के रावल ने उन्हें आपके पास इसलिए भेजा है कि सोमनाथ के मन्दिर तक पहुंचने के लिए एक छोटा और संकटहीन मार्ग है। बादशाह उसी रास्ते से फौज को चलने का हुक्म दें। हम दोनों उस रास्ते को जानते हैं, इस लिए हम फौज के आगे-आगे चल कर लक्ष्य की ओर जल्दी पहुँचा देंगे। गजनवी को यह दलील समझ में आ गयी। वह तो पहले ही जल्दी से जल्दी सोमनाथ मन्दिर तक पहुंचने के लिए उतावला हो रहा था। उस ने तत्काल सेनापति को हुक्म दिया कि इन दूतों के पीछे-पीछे फौज नये रास्ते से चले।

गजनवी की सेना रेगिस्तान के मैदान में धड़ाधड़ मृत्यु मुख में

महमूद ग़ज़नवी की फौज अब सामन्त और सज्जन चौहान के नेतृत्व में सीधे कोलायत और जैसलमेर के रेगिस्तान में से हो कर आगे बढ़ने लगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चार-पाँच दिन की यात्रा के बाद रेगिस्तान का भयंकर अंधड़ जलती हुई गरम रेत के साथ सिपाहियों के मुख-आँख और शरीर पर हमला करने लगा। पैदल सिपाही आग में झुलसने लगे और घुड़सवार तथा ऊँट व हाथी सवार सिपाही भी घबराने लगे, क्योंकि पशु आगे बढ़ने में असमर्थ हो रहे थे। प्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया। अँधड़ के साथ रेत के उमड़ते पहाड़ सदृश ढेर सिपाहियों और पशुओं को अन्धा बनाने लगे। महमूद ग़ज़नवी बड़ी दुविधा में फँस गया। चार-पांच दिन की यात्रा के बाद पीछे जाने में अब तक की मेहनत व्यर्थ जाती और अगर आगे बढ़ते हैं तो फिर मौत मुंह बाये स्पष्ट सामने खड़ी थी। हजारों सिपाही और फौजी पशु गरम रेत के नीचे दब कर मर गये। इस रेगिस्तान में काले सांप भी बहुतायत से थे। रात को ये सांप सिपाहियों और पशुओं को डस कर मार देते। इस प्रकार गजनवी की सेना को मौत दो ओर से खाने लगी। आखिर महमूद ग़ज़नवी ने सेना को वापस जाने का आदेश दिया। लग-भग आधी फौज के साथ गजनवी प्रभास पाटन की ओर बढ़ने लगा। फलतः गोगाबापा के वंशज सामन्त और सज्जन चौहान की बुद्धिमत्ता और नीति चातुर्य से शत्रु की आधी से अधिक सेना काल कवलित हो गयी। ये दोनों वीर युवक भी इस मरुभूमि में वीर गति को प्राप्त हुए।

पुण्य स्मृति में गोगा मढ़ी में मेला

गोगा बापा और उसके वंशजों की यह पुण्य और वीरता पूर्ण गाथा भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगी। भाद्रपद मास में गोगा मढ़ी में इन शूरवीरों की पुण्य स्मृति में प्रति वर्ष एक बड़ा मेला लगता है। भारत माता के ऐसे बहादुर सपूतों को शतशः प्रणाम।

आर्य हवन सामग्री

आर्य हवन सामग्री की यत्र-तत्र-सर्वत्र धूम

नं० १ स्पेशल मेवायुक्त हवन सामग्री का मूल्य ५) किलो।
नं० २ सुगन्धित हवन सामग्री ३) किलो।
नं० ३ आर्य हवन सामग्री २) किलो।
थोक आर्डर पर रेल किराये की छूट दी जायेगी।
सभी नगरों में विक्रेताओं की अविलम्ब आवश्यकता है।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी
अध्यक्ष, आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला, सरायरुहेला, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

सत्य के परम उपासक

ऋषि दयानन्द

यदि ऋषि दयानन्द के समस्त जीवन के कार्य कलाप पर दृष्टि डाली जाये तो उनके दो गुण बहुत स्पष्टता से उभर आते हैं। एक है ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास तथा श्रद्धा और दूसरा है सत्य के ज्ञान की अनवरत पिपासा।

वे अपने ग्रन्थों में प्रायः प्रत्येक स्थल पर ईश्वर की चर्चा करते हुए भाव विभोर होकर उनके अनेक गुणों का उल्लेख व कीर्तन अवश्य करते हैं। उनकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा व भक्ति के दर्शन प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर होते हैं। उनका दूसरा गुण सत्य ज्ञान की अविरल पिपासा है। शिवरात्रि के दिन उन्हें जो बोध हुआ वह बोध शिव के सत्य स्वरूप को जानने की उत्कट इच्छा का ही परिणाम था। सत्य को प्राप्त करने की उनकी उत्कट इच्छा उनके समस्त जीवन में मिलती है। वस्तुतः सत्य के प्रति प्रेम ही उनके समस्त जीवन में ओत प्रोत है।

सत्य ज्ञान की अदम्य पिपासा—ऋषि दयानन्द सत्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए ही अपना वैभव-सम्पन्न घर छोड़कर संन्यासी हुए। न जाने कितने वर्षों तक वह सत्य की प्राप्ति के लिए सैकड़ों गाँवों और अनेक राज्यों में भटकते रहे। न जाने कितने साधुओं व विद्वानों और मुनियों की तलाश में वह बीहड़ जंगलों और दुर्लङ्घ्य पर्वतों पर बिना किसी संकट व कठिनता की चिन्ता किये घूमते रहे। सत्य ज्ञान की अदम्य पिपासा ही थी जिसने एक नदी में बहते हुए शव को पकड़कर शल्य परीक्षा के लिए उन्हें प्रेरित किया।

गुरु विरजानन्द से अनेक शास्त्रों के अध्ययन के बाद भी उनकी सत्य पिपासा शान्त नहीं हुई। उनके जीवन में आग्रह, हठ या पक्षपात रत्ती भर भी नहीं रहा। उनके जीवन में जब किसी सत्य का प्रकाश हुआ, उन्होंने अपने पुराने विचार या संस्कार को छोड़ने की तत्परता दिखायी। उन के जीवन चरित्र में हम पढ़ते हैं कि एक समय उन्होंने शैव मत का समर्थन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया तो दूसरे समय में वैष्णव मत का। उन्हें अपने किसी मत पर हठ नहीं था। जब जो सत्य दीखा उसे ग्रहण करने में एक क्षण का भी विलम्ब नहीं किया। शैव और वैष्णवमत के समर्थन के बाद उन्होंने यह अनुभव किया कि मूर्तिपूजा नितान्त सत्य नहीं है। इसके बाद उनके जीवन के शेष वर्ष मूर्ति पूजा के खण्डन में ही बीते। बड़े से बड़ा प्रलोभन भी उन्हें सत्य के प्रचार से विमुख नहीं कर सका। एकलिंग जी के मन्दिर में लाखों रुपयों की सम्पत्ति का त्याग उनके अटूट सत्य प्रेम का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इन सब उदाहरणों से स्पष्ट है कि असत्य उन्हें सहन नहीं होता था। वह सत्य के सच्चे उपासक थे।

सत्य के अन्वेषक ऋषि दयानन्द जी ने बम्बई में सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना करते समय आर्य समाज के अट्ठाईस नियम बनाये थे। आर्य-समाज की स्थापना उनका महान् कार्य था, किन्तु उन्होंने कुछ समय बाद उन नियमों को बदलने में रत्ती भर भी संकोच नहीं किया। इसके बाद आर्य समाज के जो दस नियम बनाये गये, उनमें चौथा नियम उनके जीवन के मूल-भूत और महत्त्वपूर्ण संदेश को ही स्पष्ट करता है। आर्य समाज का चौथा नियम निम्न प्रकार है—सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम अंश में प्रतिपादित अनेक विचारों को स्वामी जी ने दूसरे संस्करण में बदलने में बिल्कुल भी संकोच नहीं किया। दोनों संस्करणों में भारी अन्तर उनके सत्य ग्रहण के प्रति तत्परता का ही सुपरिणाम है।

सत्यार्थ प्रकाश—वेद भाष्य के अतिरिक्त उनका सर्व प्रसिद्ध ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" है। सत्यार्थ प्रकाश नाम ही उनके सत्य के प्रति अगाध प्रेम को प्रकट करता है। वह इस अमर ग्रन्थ की भूमिका में लिखते हैं कि—"मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है" अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इस-लिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान् आप्तों का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित करदें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्ध के लिए, हठ-दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।" इन पंक्तियों से ऋषि की सत्य के प्रति गहन श्रद्धा का परिचय मिलता है।

इस अमर ग्रन्थ के उत्तरार्ध में ऋषि फिर लिखते हैं कि देश विदेश में फैले हुए मतमतान्तरों को परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिए यह ग्रन्थ बनाया गया है। जो जो इसमें सत्य मत का मण्डन और असत्य मत का खण्डन लिखा है, वह सब को जानना चाहिए। इस में जैसी मेरी बुद्धि, जितनी विद्या और जितना विभिन्न मतों के मूल ग्रन्थ देखने से जो बोध हुआ, उसको सबके सामने निवेदित कर देना मैं ने उत्तम समझा है। क्योंकि ज्ञान लुप्त हुए का पुनः मिलाना सहज नहीं है। पक्षपात छोड़कर इसको देखने से सत्य मत सबको विदित हो जायेगा। पश्चात् सबको अपनी-अपनी समझ के अनुसार सत्यमत का ग्रहण करना और असत्यमत को छोड़ना सहज होगा। इसी प्रसंग में वह आगे लिखते हैं कि "यदि विद्वद्जन सत्यासत्य का निर्णय करना चाहें तो असाध्य नहीं है।"

सत्य कठोर होता है—ऋषि दयानन्द के सत्य और उसके प्रकाशन के सम्बन्ध में बहुत-से भाइयों को एक शंका होती है। इस शंका के दो आधार हैं। ऋषि दयानन्द सत्य को जिस रूप में देखते थे उसका प्रकाश वे असंदिग्ध, स्पष्ट शब्दों में करते थे। उनके निकट सत्य एक ऐसा प्रचण्ड प्रखर सूर्य था कि जिसे किसी तरह छिपाया नहीं जा सकता था। सत्य स्वयं कठोर और नग्न होता है। उसके प्रकाशन में कोई दूसरा भाव रत्तीभर बाधक नहीं होना चाहिए, ऐसा वह मानते थे। अप्रिय सत्य को निर्भयतापूर्वक प्रकट करने का उनमें अनुपम साहस था। एक सफल चिकित्सक की भाँति उन्होंने फोड़े पर अपने तेज औजार से आपरेशन करने में संकोच नहीं किया। यद्यपि परम कारुणिक ऋषि के हृदय में सदा हित की ही बुद्धि रहती थी। योग्य डाक्टर बिना किसी हिचक के आपरेशन करता है। ऋषि ने भी भिन्न-भिन्न मत-मतान्तरों का कठोर और प्रभावशाली भाषा में खण्डन किया है तो उसके मूल में मानव जाति के हित की भावना ही काम करती थी। वह सच मुच हृदय से अनुभव करते थे कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश में फैले हुए मत-मतान्तर, अज्ञान, अविद्या, स्वार्थ व लोभ के परिणाम हैं। वह स्पष्ट लिखते हैं कि "मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने और कराने का है।"

सत् के साथ असत् की भी सत्ता—ऋषि दयानन्द को समझने के लिए हमें एक और सत्य हृदयंगम कर लेना चाहिए। इस विश्व में जहाँ सत् है वहां असत् भी विद्यमान है। सत् के प्रति प्रेम और असत् का विरोध प्रत्येक विवेकशील मानव का कर्तव्य है। असत् के अस्तित्व से जो इन्कार करते हैं या उसकी उपेक्षा करते हैं, वे वस्तुतः सत्य के परम उपासक नहीं हैं। इन पंक्तियों के लेखक की यह मान्यता है कि संसार में सत्य केवल एक है। उस तक पहुंचने के लिए विविध मार्ग हो सकते हैं, परन्तु वे परस्पर विरोधी दिशाओं में नहीं जा सकते। मंगलमय भगवान् यदि निराकार है तो वह निराकार ही है, साकार नहीं। साकार और निराकार दोनों एक साथ सम्भव नहीं हैं। आत्मा, परमात्मा तथा प्रकृति के सम्बन्ध में विभिन्न विचार किये जा सकते हैं, परन्तु वे परस्पर विरोधी नहीं हो सकते। मुझे दिल्ली से अमृतसर जाना हो तो मैं सब्जीमण्डी और सहारनपुर का कोई मार्ग पकड़ सकता हूं, किन्तु पूर्व को जाने वाली कोई गाड़ी नहीं पकड़ सकता। इसी तरह सब धर्मों व मतों में कुछ सर्वमान्य सिद्धान्त होते हैं, किन्तु कुछ ऐसे मन्तव्य भी होते हैं जो मनुष्य को भ्रान्त दिशा की ओर ले जाते हैं। ऋषि दयानन्द ने ऐसे मन्तव्यों को विष सम्पृक्त अन्न की तरह त्याज्य बताया है। हमें ऋषि की इस दृष्टि को समझने में भूल नहीं करनी चाहिए।

ऋषि दयानन्द व महात्मा गांधी

महात्मा गांधी भी जीवन भर प्रयोग करते रहे। सत्य के प्रति उनकी जो निष्ठा है उसमें हमें कोई शंका नहीं। किन्तु मेरी नम्र सम्मति है कि वह दया, करुणा और अहिंसा की अपनी भावना की प्रबलता के कारण कठोर सत्य का स्पष्टतः दर्शन नहीं कर सके। सत्य तो सूर्यवत् प्रखर होता है। उसके तेज को सहन करना कठिन होता है। इसी लिए बहुत से लोग रंगीन चश्मा लगा लेते हैं। महात्मा गांधी के सत्य पर कभी-कभी प्रेम, मित्रता व करुणा की भावना हावी हो जाती है। इसीलिए वे असत् में भी सत् देखने का प्रयत्न करते रहे। असत्य को विशुद्ध असत्य समझ कर उसका विरोध उन्होंने कम किया है। उनके समक्ष, "सत्यं ब्रूयात्" के स्थान पर "न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्" का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महत्त्व अधिक था। उन्होंने मानव में निहित असत्य में सत्य समझने का प्रयत्न किया; यद्यपि यह विशुद्ध सत्य के प्रति विश्वासघात था।

आचार्य विनोबा का भ्रम—महात्मा गांधी के महान् अनुयायी आचार्य विनोबा ने बोधरात्रि की घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि यदि मैं उस दिन मूलशंकर के स्थान पर होता तो यह सोचकर गद्‌गद हो जाता कि भगवान् कितना दयालु है कि उसकी छाती पर चूहे खेल रहे हैं। जिस तरह मां की छाती पर बच्चे खेलते हैं और वह उन्हें कुछ कहती नहीं है। विनोबा की यह दृष्टि भी असत् में भी सत् को देखने की छलनामयी दृष्टि है। वस्तुतः इस कुटिल संसार में सत्त्व, रज, तम तीनों तत्त्व अपना-अपना काम करते हैं। हमें श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करके अपराधी के हनन का मार्ग अपनाना चाहिए। उसके संरक्षण का नहीं। इस हनन, खण्डन और हिंसा में दूसरे के प्रति विद्वेष भाव नहीं, हित की ही भावना रहनी चाहिए। यदि ऋषि की दृष्टि भी आचार्य विनोबा की भांति होती तो ऋषि को उस महत् बोध से वंचित होना पड़ता और यह भारत का दुर्भाग्य होता!

ऋषि दयानन्द का सत्य प्रेम किसी दूसरी कितनी भी अच्छी भावना से अभिभूत नहीं हुआ। यही कारण है कि वह सत्य का स्पष्ट स्वरूप प्रकट करने में सफल रहे। उन्होंने उसे विकृत नहीं होने दिया।

सत्य का विकास जारी रहे—इन पंक्तियों के लिखने के बाद यदि मैं आर्य विद्वानों के सामने एक निवेदन करदूँ तो मुझे विश्वास करना चाहिए कि वे उस पर उसी भावना से विचार करेंगे, जिस भावना से मैं लिख रहा हूं। सत्य का निरन्तर विकास ऋषि दयानन्द के जीवन का महान् सत्य रहा है। समय-समय पर अपने किसी विचार का दुराग्रह उन्होंने नहीं किया। इसी लिए उनके जीवन में सत्य का विकास निरन्तर होता रहा है। मेरी नम्र सम्मति में यह असम्भव नहीं है कि यदि वह कुछ अधिक समय तक जीवित रहते तो उनका विकास रुक नहीं जाता। वह समय व परिस्थितियों को देखते हुए सत्य दर्शन की आस्था के कारण अपने कुछ विचारों में परिवर्तन कर सकते थे, जैसा कि उनके समस्त जीवन की परम्परा रही है। पूर्ण केवल ब्रह्म है और सत्य का ज्ञान अनन्त है। सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म। भारतीय स्मृतियाँ समय-समय पर बदलती रही हैं। बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार हमें अपने सामाजिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नियम भी बदलने पड़ते हैं। आर्य समाज के नेताओं ने भी ऋषि दयानन्द के विचारों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया है। नियोग का सिद्धान्त आज बहुत व्यावहारिक नहीं दीखता। इसी तरह विधवा विवाह आज की आवश्यकता बन गयी है, यद्यपि स्वामी जी ने विधवा विवाह का समर्थन नहीं किया।

इस पत्र के पाठकों को शायद स्मरण होगा कि आज से चार दशक पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द व आचार्य रामदेव में एक विवाद हुआ था कि ऋषिकृत वेदार्थों से भिन्न अर्थ हो सकते हैं या नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी का मन्तव्य था कि ऋषि कृत अर्थों से भिन्न अर्थ भी किये जा सकते हैं, यद्यपि वे उनके विरोधी नहीं होने चाहिए। आचार्य रामदेव जी ऋषि कृत अर्थों से भिन्न अर्थ सहन करने को तैयार नहीं थे।

स्वामी जी के संस्कार विधि आदि ग्रन्थों में कुछ पुरानी परम्पराओं का उल्लेख हुआ है। समय व परिस्थितियों के बदलने के साथ आर्य विद्वानों को विचार करना चाहिए कि उन पर आज भी आग्रह कहाँ तक उचित व व्यावहारिक होगा। आज चौबीस साल की लड़की के लिए अड़तालीस साल का वर तलाश करना क्या व्यावहारिक होगा ? आज प्रायः कन्याएँ कालेजों में पढ़ते हुए बीस या बाईस साल की हो जाती हैं। वसु और आदित्य ब्रह्मचारिणियों व ब्रह्मचारियों की कहाँ तक तैयारी की जा सकती है।

हमें यह समझने में संकोच नहीं करना चाहिए कि ऋषि के ग्रन्थ सत्य के दीपक हैं—स्वयं वेद की तरह ईश्वरीय ज्ञान नहीं हैं। इस दृष्टि से यदि हम ऋषिकृत ग्रन्थों को पढ़ेंगे और सत्य को सदा ग्रहण करने की ऋषि की भावना का आदर करेंगे तो मेरी नम्र सम्मति में आज की अनेक भ्रान्तियों से बच सकेंगे।

शुभ संस्कार

बंबई के सुप्रसिद्ध आर्य कार्यकर्ता श्री लाल चन्द जी के पौत्र व पौत्री का कर्णच्छेदन व मुण्डन संस्कार संपन्न हुआ। 'जन-ज्ञान' की ओर से इस शुभावसर पर परिवार को बधाई—बच्चों को आशीर्वाद .....दीर्घायुष्य हेतु प्रार्थना।

२१) जन-ज्ञान के वेद प्रचार यज्ञ में आहुति प्राप्त।
—तदर्थ धन्यवाद।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य रामानन्द

आनन्द मार्ग क्या है ?

इस बीच भारत में अनेकानेक संप्रदाय जन्म ले रहे हैं। इन सभी का लक्ष्य धर्म के नाम पर अधर्म का प्रसार है। प्रस्तुत लेख आनन्द-मार्ग नामक नवोदित संप्रदाय का वास्तविक चित्र प्रस्तुत कर रहा है।

—संपादक

आनन्द मार्ग नामक एक नए सम्प्रदाय का उद्भव बिहार प्रांत में हुआ है। इसका प्रचार बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। अतः इस सम्बन्ध में जानने की इच्छा प्रायः लोगों को हो रही हैं। तदर्थ यह लेख प्रस्तुत है, जिससे सर्व-साधारण को इसकी पूर्ण जानकारी हो जाये।

आनन्द मार्ग के प्रवर्त्तक प्रभात रंजन सरकार बिहार प्रान्त के जमालपुर रेलवे कारखाने में एक लिपिक थे। उनकी बुद्धि पैनी थी, उन्हें धार्मिक विषयों में श्रद्धा थी। प्रभात रंजन सरकार बंगाली हैं। बंगाल में काली की पूजा तथा तन्त्र का अधिक प्रचार है। अन्य राज्यों की अपेक्षा बंगाल में भक्ति मार्ग का भी प्रसार अधिक है। व्यक्ति पूजा तथा गुरुडम का भी प्रभाव बंगाल में बहुत काल से प्रचलित है। गुरुजी को सर्वस्व अर्पित कर देना प्रायः पुण्य समझा जाता है। गुरु के आचरण में किसी प्रकार दोष देखना महा पाप माना जाता है। श्री प्रभात रंजन सरकार ने इसे अच्छी तरह समझा है। बंगाल में रामकृष्ण परमहंस के मिशन का' जो स्वामी विवेकानन्द जी के द्वारा संचालित हुआ है, प्रभाव शिक्षित जनता में विशेष है। चैतन्य महाप्रभु के वैष्णव सम्प्रदाय का भक्ति मार्ग भी प्रचलित है। श्री राजा राम मोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज की चर्चा बड़े लोगों में होती है। यह सर्व विदित है कि ईसाई प्रचारकों ने भी अंग्रेजी शासन के साथ बंगाल में प्रथम पदार्पण किया था। अतः इन सारे मतों को देखकर श्री प्रभात रंजन सरकार ने भी एक नूतन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मत स्थापित करने का निश्चय किया। उन्होंने अपने नूतन मत का नाम रक्खा "आनन्द मार्ग"। उनके शिष्य उन्हें आनन्द मूर्तिजी के नाम से पुकारते हैं। आनन्द मूर्ति जी सब धर्मों के प्रचारकों के समान भाषण अथवा प्रवचन नहीं करते वह सबसे मिलते भी नहीं हैं। उनसे मिलने से पहले उनके शिष्यों से मिलना अवश्यक है। उनके शिष्य-प्रशिष्य यह जान लेंगे कि यह गुरुजी को अपना इष्ट मान लेगा, अब इसमें कोई कमी नहीं है, वे गुरुजी के पास अपने उस नूतन शिष्य को ले जायेंगे, तब गुरुजी उन्हें साधना की शिक्षा देंगे। गुरु जी (श्री आनन्दमूर्ति जी) को मनुष्य पहचानने की तीव्र बुद्धि है। वे जरा-सी बात से जान जायेंगे—'यह हमारे चंगुल में फंसने वाला नहीं है, यह तर्क करता है। इसमें विचारात्मक बुद्धि है तो शीघ्र उसे आगे तपस्या करने का आदेश देंगे। गुरुजी के पास पहुंचने के लिए साधक को पहले अपनी शिखा-जनेऊ तोड़ना पड़ेगा, क्योंकि आनन्द मूर्ति जी के जीवन वेद में लिखा है कि शिखा और यज्ञोपवीत से अभिमान पैदा होता है। वे ईश्वर के मार्ग में बाधक हैं, अतः उन का बहिष्कार अनिवार्य है। जब व्यक्ति शिखा यज्ञोपवीतशून्य हो जाता है तब गुरुजी के शिष्य उसे साधना सिखाते हैं। साधना में साधक अथवा साधिका को अपने अंगों पर हाथ रखकर कहना अथवा चिन्तन करना पड़ता है कि ये सब अंग हमारे गुरुजी के हैं; इन पर हमारा कोई सत्त्व नहीं है।

आनन्दमार्गी साधकों की साधना एकान्त में होती है। साधना में बेहोश होकर साधक विभिन्न जानवरों की बोली बोलते हैं। आनन्द मार्गी गुप्त मन्त्र की शिक्षा देते हैं तथा कहते हैं कि इसका जाप करना। खबरदार, इसका रहस्य किसी दूसरे को न बताना। प्रायः "तत् त्वम् असि" का मन्त्र सिखाया जाता है। आनन्दमार्ग का अपना दर्शनशास्त्र भी है। उसके सूत्र भी बने हैं। सारी प्रक्रिया सांख्यशास्त्र के अनुकूल है, किंतु कहीं भी कपिल मुनि का नाम नहीं लिया गया है; क्योंकि ऐसा कहने से गुरुजी की मौलिकता में कमी आयेगी। आनन्द मार्ग के अनुयायियों के आचार शिक्षण के लिए 'चर्याचर्य' नामक एक छोटी पुस्तिका है, जिसमें लिखा है:—

"एक निराकार, अनादि, अनन्त, परब्रह्म ही जीवों के माध्यम से हम लोगों में ब्रह्म विद्या का प्रकाश कर रहे हैं। उनका माहात्म्य जीवों को समझाना होगा।"

आनन्द मूर्ति जी के उपदेशों तथा लेखों से प्रतीत होता है कि वह पातंजल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
योग का प्रचार करते हैं। उनके यहाँ यम और नियम की शिक्षा विशेष रूप से दी जाती है किन्तु ब्रह्मचर्य का अर्थ ब्रह्म में विचरण करना है न कि इन्द्रिय दमन। श्री आनन्द मूर्ति जी कहते हैं—"बहुत लोग शुक्र धारण को ही ब्रह्मचर्य समझते हैं। उन्हें याद रखना चाहिए कि ब्रह्म और चर्य इन दो शब्दों से किसी का भी शुक्र शब्द से कोई सम्बन्ध नहीं है—न अर्थ का, न भाव का। इसके अतिरिक्त शरीर विज्ञान के हिसाब से भी यह महत्वहीन है। आगे चलकर आनन्दमूर्ति जी पुनः कहते हैं :—

"जो लोग तरह-तरह के उपाय कर जबरदस्ती शुक्र का क्षय बन्द करना चाहते हैं, उनके शरीर और मन पर बुरा प्रभाव देखा जाता है। शरीर एकदम रूखा, सूखा और कठोर हो जाता है। उस पर चमक नहीं रहती और जबरदस्ती कामरिपु को रोकने की कोशिश करने के कारण अन्य रिपु खासकर क्रोध रिपु बहुत उग्र हो उठता है।"

"संन्यासी शुक्र धारण करते हैं, इसलिए वे श्रेष्ठ हैं। इस अवस्था से लाभ उठाकर तथाकथित संन्यासी आसानी से अपनी शोषणलीला चलाते आ रहे हैं तथा आज भी चला रहे है। ये संन्यासी सचमुच में नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं या नहीं, तर्क के द्वारा इसका निर्णय नहीं किया जा सकता। हां, डाक्टरी परीक्षा हो सकती है। ये तथाकथित संन्यासी अधिकांश में उत्तीर्ण नहीं होंगे।" इत्यादि—जीवन वेद।

उपरोक्त उद्देश्य से प्रायः नवयुवक समाज आनन्दमार्ग में प्रविष्ट हो ब्रह्मचर्य का मजाक उड़ा रहे हैं। पातञ्जल योगसूत्र का तात्पर्य क्या है, पाठक समझें।

अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः

इस सूत्र पर व्यास भाष्य है—

उपस्थ इन्द्रिय को वश में रखना जिससे काम का उदय संभव न हो ऐसे आचरण जैसे—स्त्रियों के रूप देखने में चित्त लगाना, स्त्रियों से हंसी-वार्त्ता करना, अंग का स्पर्श करना आदि का त्यागना ब्रह्मचर्य है। आगे योग शास्त्रकार कहते हैं:—

ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभः

अर्थात् उपस्थ इन्द्रिय के संयम रखने से अर्थात् व्यभिचार न करने से विद्या पठन-पाठन युक्त शुद्ध चित्त काम वर्जित होने से शरीर व बुद्धि का बल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बढ़ता है और सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

आनन्द मूर्ति जी का यह कहना कि ब्रह्मचर्य से शरीर रूखा-सूखा तथा तेजहीन होता है, गलत है। ब्रह्मचर्य से शरीर तथा वाणी में दीप्ति आती है। हनुमान्, भीष्म, शंकराचार्य, ईसा, स्वामी दयानन्द आदि महा-पुरुष बाल ब्रह्मचारी थे। महात्माजी ने ब्रह्मचर्य की महिमा का अद्भुत वर्णन किया है। जो लोग गृहस्थाश्रम में हैं, वे भी ब्रह्मचर्य की महिमा स्वीकार करते हैं। किन्तु आनन्दमार्ग इस वैदिक मार्ग का विरोधी है। प्रभात रंजन सरकार संन्यास का विरोध करते हैं। अपने सेलून में बाल कटाकर बंगाली बाबू के आधुनिक वेश में रहते हैं, किन्तु उनके शिष्य पीत वस्त्रधारी सिर के बाल तथा दढ़ी बढ़ाये एवं बगल में छुरा लटकाये 'अवधूत' कहलाते हैं। इन्हें मासिक वेतन मिलता है। ये अवधूत जगह-जगह प्राइवेट स्कूल खोलते हैं तथा बच्चों को शिक्षा देते हैं। छोटे-छोटे बच्चों से गीत गवाते हैं, जिनमें आनन्द मूर्ति जी के चरण के दास अथवा धूलि बनने की भावना भरी जाती है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रखा जाता है। आनन्दमूर्ति जी देश की राष्ट्रभाषा अंग्रेजी के पक्षपाती हैं, रोमन लिपि के प्रचारक हैं। आनन्दमार्ग की प्रत्येक पुस्तक के अन्त में रोमन लिपि का एक पाठ रहता है।

आनन्द मार्ग में भोजन का कोई नियम नहीं है। मांस और शराब का निषेध नहीं। आनन्द मार्गी कहते हैं कि भोजन से साधना का क्या सम्बन्ध ? अग्निहोत्र का निषेध किया जाता है, यज्ञ को ढकोसला कहा जाता है। आनन्द मार्ग के अवधूत पानी से ईसाइयों के बपतिस्मा के समान दीक्षा लेते हैं व ईसाई प्रचारकों के समान चोगा पहनते हैं। जिस प्रकार हंस सम्प्रदाय, ब्रह्म-कुमारी तथा अनुकूल ठाकुर के अनुयायियों में गुरुडम तथा व्यक्तिपूजा है, उसी प्रकार आनन्दमार्ग में गुरु की पूजा मान्य है। भगवान् गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व की प्राप्ति के पश्चात् धर्मचक्र प्रवर्तन किया था, वह सारनाथ (वाराणसी) में एक बार हुआ किन्तु आनन्द मार्ग नित्य धर्म चक्र प्रवर्त्तन करते हैं तथा भोली-भाली जनता को अपने चंगुल में फंसाते हैं। भोजन, पान इत्यादि का कोई निषेध न होने के कारण प्रायः आधुनिक समाज उधर आकृष्ट हो जाता है।

प्रभात रंजन सरकार की पुस्तकें जब धर्म और साधना पर प्रकाशित होती हैं, तब वे आनन्दमूर्ति जी कहलाते हैं तथा जब राजनीति पर लिखते हैं,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तब प्रभात रंजन सरकार के नाम से प्रकाशित होती है। उनकी पार्टी का नाम 'प्रउत' है। इसी नाम से समाचार पत्र हिन्दी, अंग्रेजी बंगला आदि भाषाओं में प्रकाशित होते हैं।

प्र—प्रगतिशील, उ—उपयोगिता, त—तत्त्व, अर्थात् प्रगतिशील उपयोगिता तत्त्व। प्रभात रंजन सरकार के अनुसार सारी वस्तुओं का उपयोग खूब करना चाहिये। ये मार्क्सवाद के विरोधी हैं, इसी लिए लोग इनको आदर की दृष्टि से देखते हैं। यह पार्टी कम्युनिस्टों के विरोध में किन्तु अमेरिका के समर्थन में है। कुछ लोगों का कहना है कि अमेरिका के पी० एल० ४८० के अधीन इस पार्टी को भी आर्थिक सहयोग मिलता है। भगवान् ही इस तथ्य को जानते हैं।

श्री प्रभात रंजन सरकार गांधी और जवाहरलाल नेहरू के कट्टर विरोधी तथा सुभाषचन्द्र बोस के पूर्ण समर्थक हैं। गत निर्वाचन में इस पार्टी की ओर से विभिन्न नामों से जैसे—प्रगतिशील भोजपुरी समाज, प्रगतिशील मही समाज आदि नामों से प्रत्याशी निर्वाचन संघर्ष में आये, किन्तु सब पराजित हो गये। आनन्दमार्ग की गतिविधि से यही प्रतीत होता है कि आनन्द मार्ग का धार्मिक प्रचार, साधना आदि जनता को योग के पवित्र नाम से ठगने के लिए है तथा राजनीति द्वारा सत्ता हस्तगत करना इसका परम उद्देश्य है।

कहा जाता है कि आनन्दमार्ग के प्रचारक तेजस्वी बालकों, इंजीनियरिंग के छात्रों, मेडिकल के विद्यार्थियों को 'योग' का उपदेश देकर उन्हें पढ़ाई से वंचित कर देते हैं। नवयुवकों को मातृ-पितृ भक्ति से दूर हटाकर गुरुजी के दास बना देते हैं तथा उन्हें अवधूत बनाकर उनका जीवन नष्ट कर देते हैं। बहुत-से नवयुवक अपनी नवोढ़ा पत्नी को छोड़ कर आनन्द मार्ग के गीत गाते फिरते है। ये भारतीय हिप्पी हैं।

पटना से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'इण्डियन नेशन' में अधोलिखित समाचार प्रकाशित हुआ था:—

Anand Marg Founder Faces Kidnapping Charge

(From our Correspondent)

Motihari, October 15.

A criminal case under Section 365 I.P.C. was

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

today filed against Prabhat Ranjan Sarkar, founder of Anand Marg, and eight of his followers.

Complainant Parasnath Varma, Advocate, has stated that the accused persons kidnapped his minor brother Teerath Nath Varma, aged 15, from his lawful guardianship on Oct. 10 and took him to unknown places···

A warrant of non-bailable arrest has been issued against all accused persons.

अर्थात् एक अभियोग, भारतीय दण्ड संहिता ३६५ के अधीन आनन्द-मार्ग के संस्थापक श्री प्रभात रंजन सरकार तथा ८ व्यक्तियों के विरुद्ध स्थानीय कोर्ट में दाखिल किया गया है। सहायक मजिस्ट्रेट ने आवश्यक छानबीन के पश्चात् श्री एक्का साहब के कोर्ट में विचारार्थ भेज दिया। एक बिना जमानती वारंट अभियुक्तों को गिरफ्तार करने के लिए कोर्ट से जारी किया गया।

इसके अतिरिक्त बहुत-से अभियोग विभिन्न स्थानों में आनन्द मार्ग के विरुद्ध दाखिल हुए, जिससे बिहार प्रान्त में इसकी काफी बदनामी हुई है। इतना ही नहीं, बहुत-से स्थानों से इसका नाम तक मिट गया है। उत्तरी बिहार में पहले इसका बहुत प्रभाव था, योग के नाम पर प्रायः बहुत सम्भ्रांत परिवार के लोग उधर आकृष्ट हुए, किन्तु अब वहां इसकी चर्चा भी नहीं।

पश्चिम बंगाल के पुरुलिया के जंगल में आनन्द मार्ग ने एक विशाल साधनाकेन्द्र भी स्थापित किया था, जहां बहुत अवधूत रहते थे। स्वयं प्रभात रंजन सरकार ने भी अपना निवास बनाया था। किन्तु वहाँ की जनता इन अवधूतों के आचरण से घबड़ा गई, जंगली जाति के लोगों ने उत्तेजित होकर कानून अपने हाथ में ले लिया। इस सम्बन्ध में दैनिक इण्डियन नेशन के प्रातः संस्करण ८-३-६७ में निम्नलिखित समाचार प्रकाशित हुआ।

Villagers Kill 5 Sadhus

Calcutta, 6 March. Five Sadhus were killed and several others sustained injuries when a violent mob of over 5000 villagers from Bagsala and surrounding villages under Jaipur Police Station in Purulia district

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

attacked the local Anand Marg Ashram yesterday, according to report received by the Police Head quarters here.

Police fired 6 rounds of tear gas shells to disperse the mob armed with bows and arrows, the reports said.

The attack was stated to have been made by the villagers following a dispute over encroachment of land by the Ashramites.

It was also stated that their attempt to swoop down on the Ashramites day before yesterday had been foiled through the intervention of Police who made three arrests.

The situation is now reported to be under control.

अर्थात्—गांव वालों ने ५ साधुओं की हत्या की

पुरुलिया जिले के जयपुर थाना अन्तर्गत बागसला स्थित आनन्द मार्ग के आश्रम पर ५००० हजार क्रुद्ध लोगों ने आक्रमण किया। पुलिस ने ६ राउण्ड टीयर गैस के गोले चलाये। गांव वाले तीरधनुष से लैस थे। विवाद का कारण यह है कि आश्रम के साधुओं ने गांव वालों की जमीन पर अधिकार कर लिया था। परिस्थिति अब काबू में है।

उपरोक्त विवरणों से प्रतीत होता है कि गांव की ५ हजार जनता ने मिलकर आनन्दमार्गी अवधूतों की हत्या की। एक आदमी की जमीन के लिए देहात के सारे आदमी क्रुद्ध नहीं हो जायेंगे। इसका बहुत बड़ा कारण था, जो यहाँ उद्धृत करना उचित नहीं है।

इधर आनन्द मार्ग के कारनामों से लोग उद्विग्न हो गये हैं। कितने तो त्यागपत्र देकर उससे अलग हो रहे हैं। इंडियन नेशन में प्रकाशित निम्नलिखित समाचार इसका द्योतक है :

ANAND MARG COLLEGE PRINCIPAL RESIGNS

From Our Correspondent

Jhumari Tellaiya, August 31.

Acharya Lalan, Secretary-cum Principal of Anand

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Marg College is reported to have resigned from the membership of the Anand Marg.

The resignation of Acharya Lalan, who was one of the founder-members of Anand Marg, is said to be on account of some serious ideological differences between the Avdhuts of Marg and Principal and teaching staff of the college.

It is further reported that Acharya Dhrubdeo, Vice Principal of Anand Marg College has also resigned from the membership of Anand Marg on the same issue.

अर्थात्—आचार्य ललन ने, जो आनन्द मार्ग के प्रधान सचिव एवं प्राचार्य थे, अवधूतों के व्यवहार से उद्विग्न होकर आनन्द मार्ग से त्यागपत्र दे दिया है।

उपसंहार

१—आनन्द मार्ग का आधार कोई प्रमाणिक प्राचीन शास्त्र नहीं है, अपितु प्रभात रंजन सरकार का अपना आदेश है।

२—आनन्दमार्ग हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का विरोधी है तथा विदेशी भाषा अंग्रेजी का समर्थक है।

३—आनन्दमार्ग हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन तथा वाममार्ग का सम्मिश्रण है। उसके चर्याचर्य में मुसलमानों के समान खतना कराने का भी आदेश है।

४—आनन्दमार्ग शिखासूत्र का विरोधी, अग्निहोत्र आदि का कट्टर विरोधी है।

५—आनन्दमार्ग व्यक्ति की पूजा करता है तथा प्रभातरंजन सरकार को गुरु ही नहीं, अपितु ईश्वर मानता है।

६—आनन्दमार्ग का दर्शन पूर्णतः अवैदिक व अतर्कसंगत है।

७—आनन्दमार्ग भारतीय आचार संहिता को नहीं मानता।

८—उसका भोजन की सात्त्विकता पर कोई विश्वास नहीं।

इन्हीं कारणों से आनन्दमार्ग सर्वथा त्याज्य है।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोजकालीन यांत्रिक कला

—विजयमित्र शास्त्री

महाराज भोज ग्यारहवीं शताब्दी में हुए थे। वह बड़े विद्या-प्रेमी, उत्कृष्ट राजनीतिज्ञ एवं कला-कुशल राजा थे। उन्होंने अनेक विषयों पर ग्रंथ लिखे थे। वह विद्या एवं कला की उन्नति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। साहित्य, दर्शन, अलंकार एवं कला पर आज भी उनके ग्रंथ उपलब्ध हैं। कला पर उन का जो ग्रंथ अभी प्रकाश में आया है उस का नाम है 'समरांगण सूत्रधार'। थोड़े दिन हुए लंदन की रायल एशियाटिक सोसाइटी के प्रतिष्ठित सदस्य श्री गणपति शास्त्री के संपादन में यह ग्रंथरत्न सेंट्रल लाइब्रेरी, बड़ौदा से प्रकाशित हुआ है। इस की मूल कापी उक्त लाइब्रेरी में ही उपलब्ध हुई थी। संपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में श्लोकबद्ध है। इस के दो भाग हैं, प्रथम भाग में ५४ अध्याय हैं तथा द्वितीय भाग में ८३ अध्याय हैं। इस का प्रधान विषय 'वास्तुविद्या' (गृहनिर्माण-कला) है।

इस ग्रंथ का ३१ वाँ अध्याय 'यंत्र-विधान' नाम से प्रसिद्ध है। इस में यंत्रनिर्माण-संबंधी सभी विषयों का पूर्ण विवरण दिया गया है। यंत्र की परिभाषा क्या है? इस का इतना सुंदर विवेचन किया गया है कि आधुनिक विज्ञान की पुस्तकों में शायद ही ऐसी सुंदर परिभाषा मिले—

यदृच्छया प्रवृत्तानि भूतानि स्वेन वर्त्मना,
नियम्यास्मिन्नयति यत्तद् यंत्रमिति कीर्त्तितम्।

अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु, आकाश—ये पांचों भूत (तत्त्व) स्वभावतः अपने-अपने गुणों के अनुसार प्रवृत्त हैं। जिस उपाय के द्वारा इन्हें नियंत्रित कर इन से इच्छानुसार कार्य लिया जाय उसे यंत्र कहते हैं।

यह परिभाषा सर्वथा परिपूर्ण है। इस से सूक्ष्म, परिष्कृत सथा सर्वांगपूर्ण कोई अन्य परिभाषा नहीं हो सकती। वर्तमान यांत्रिक युग के मूल में भी इसी परिभाषा का आधार है।

यंत्रों के प्रकार का वर्णन करते हुए महाराजा भोज ने लिखा है—

स्वयं वाहकमेकं स्यात् सकृत्प्रयं तथा परम्
अन्यदंतरितं बाह्यं बाह्यमन्यत्त्वदूरतः ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वयं बाह्यमिहोत्कृष्टं हीनं स्यादितरत्रयम् ।
तेषु शंसन्ति दूरस्थं अलक्ष्यं निकट स्थितम् ।।

यंत्र चार प्रकार के होते हैं—पहला स्वयं वाहक, जो आज्ञा देते ही स्वयं चल पड़े । दूसरा सकृत्प्रेय, जो एक बार गति देने पर बराबर चलता रहे । तीसरा अंतरित, जो एक बार गति देने पर कुछ देर तक चलता रहे, फिर गति देनी पड़े । चौथा अदूरतः बाह्य, जो बराबर गति देने पर चले जैसे चर्खा इत्यादि । इन चारों में स्वयं वाहक यंत्र सर्वश्रेष्ठ है । इन में भी सर्वोत्तम वह है जो पास रहने पर भी दूर और अदृश्य जान पड़े ।

गति-विज्ञान के संबंध में जो मौलिक सिद्धांत दिया गया है, वह इस प्रकार है—

एका स्वया गतिश्चित्रेऽन्यातु वाहकाश्रिता ।

हर एक यंत्र में एक निजी गति होती है, दूसरी संचालक के अधीन होती है।

इस ग्रंथ में अनेक यंत्रों के विशेष गुणों का वर्णन किया गया है । ये गुण जिन यंत्रों में हों, वे सर्वश्रेष्ठ कहलाते हैं—

अलक्षता वहत्वं लघुत्वं शब्द हीनता ।
शब्दे साध्ये तदाधिक्यं अशैथिल्यमगाढता ।।
वहनीषु समस्तासु सौश्लिष्ट्यं
चास्खलद्गतिः ।
यथाभीष्टार्थकारित्वं लयतालानुगा मिता ।
इष्ट कालेयंदर्शित्वम् पुनः सम्यक्त्वसंवृतिः ।
अनुल्वणत्वं ताद्रूप्यम्, दार्ढ्यं मसृणता तथा ।
चिरकालसहत्वं च यन्त्रस्यैते गुणाः स्मृताः ।
एकं वहनि चलयेत् बहुभिश्चाल्यतेऽपरम् ।।

यंत्रों में ये गुण होने चाहिएँ—चलने पर दिखाई न देना, भार सह सकना, हलकापन होना, ध्वनि की अधिकता का न होना, आवश्यकतानुसार अधिक ध्वनि पैदा किया जा सकना, गति में शिथिलता का न होना, यंत्रों की संधियों में कहीं जाम का न होना, उन के जोड़ों का उत्तम होना, धक्का न मालूम होना, इच्छानुसार गति पर नियंत्रण किया जा सकना, इच्छानुसार यत्र के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किसी भाग का देखा जा सकना, पश्चात् उस का अदृश्य हो जाना, खुरदरापन न होना, जोड़ों में समानता होना, दृढ़ता के साथ चिकनापन होना, बहुत दिनों तक घिस न सकना, एक भाग द्वारा अनेक भागों का चलाया जाना, उन के द्वारा अन्य भागों का चलाया जाना, इत्यादि गुण यंत्रों में होने चाहिएँ।

इस वर्णन से यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन भारतीय यंत्रों के प्रत्येक भाग के निर्माण में कितने दक्ष थे! ऊपर वर्णित गुण आजकल भी एक अच्छे यंत्र में देखे जाते हैं। यह केवल कल्पना नहीं है, बल्कि वास्तविक तथ्य है। इस अध्याय में अनेक यंत्रों के निर्माण के संबंध में लिखा है। यहाँ उन में से कुछ यंत्रों का वर्णन किया जा रहा है—

गजयंत्र (हाथी कल)

यन्त्रेण कल्पितो हस्ती नदं गच्छन्प्रतीयते।

पक्षियन्त्रः (चिड़ियाकल)

शुकाद्याः पक्षिणः कृत्तास्तालस्यानुगमनान्मुहुः।
जनस्य विस्मयकृतो नृत्यन्ति च पठन्ति च॥

कामचारि विहंगम यन्त्रः (पंखयुक्त जहाज)

लघुदारुमयं महाविहंगं सुश्लिष्ट तन्तुं विधाय तस्य,
उदरे रस यन्त्रमादधीत ज्वलनाधारमधोऽस्य चाग्निपूर्णम्।
तत्रारूढ़ पुरुषस्तस्य पक्षद्वन्द्वोच्चाल प्रोज्झितेनानिलेन।
सुप्तस्यास्मित्पारदस्यास्य शक्त्या चित्रन्कुर्वन्नम्बरे याति दूरम्।

पारे के यन्त्र से युक्त कृत्रिम हाथी चिंघाड़ता, चलता-फिरता मालूम पड़ता है। तोते आदि पक्षी ताल पर नाच कर और गा कर देखने वालों को आश्चर्यचकित कर देते हैं। हलकी लकड़ी का बड़ा-सा पक्षी बना कर उस के शरीर के जोड़ों को मजबूती से बंद कर के पेट में पारे का यंत्र लगा दें तथा नीचे बिजली का संबंध करें। इस पक्षियान पर बैठा मनुष्य पारे की शक्ति द्वारा परों के हिलने से वायु-भेदन होने के कारण आकाश में दूर तक जा सकता है।

विमान यंत्र (हवाई जहाज)

इत्थमेव सुरमन्दिर तुल्यं संचलत्यलघुदारु विमानम्
आदधीत विधिना चतुरोऽन्तस्तस्य पारदभृतान्दृढ़कुम्भान्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एवं कपालाहित मन्दवह्नेः प्रतप्त तत्कुम्भभुवा गुणेन ।
व्योम्नि झगित्याभरणत्वमेति संतप्त गर्जद्रसराजशक्त्या ।।

इसी प्रकार हलकी लकड़ी का देव मंदिर के आकार का बड़ा विमान भी आकाश में उड़ सकता है। चतुर कलाकार को चाहिए कि वह पारे से भरी मजबूत चार टंकियों की स्थापना करे। उस के नीचे बिजली का संबंध करे। इस से बिजली की गरमी से पारे में क्रिया उत्पन्न होगी। उस की शक्ति से वह विशाल वायुयान 'झग' शब्द करता हुआ आकाश में उड़ने लगेगा।

द्वारपाल यंत्र (द्वार-रक्षक कल)

पुंसोदारुजमूर्ध्व रूपं कृत्वा निकतन द्वारि तत्कर योजित दण्डं निरुणद्धि प्रविशतां वर्त्म ।।

एक लकड़ी का मानव शरीर बना कर उस के हाथ में दंड दे दिया जाय तो वह घर में प्रविष्ट होने वालों को रोकेगा। (यह यंत्र भी उक्त पारद यंत्र या बिजली की सहायता से काम करता है।

योध यंत्र (सिपाही कल)

खड्गहस्तमथ मुद्गरहस्तम्, कुन्तहस्तमथवा यदि तत्स्यात् ।
तन्निहन्ति विशतो निशि चौरान् द्वारि संवृतमुखं प्रसभेन ।।

इसी प्रकार उक्त काष्ठमय पुरुष के हाथ में तलवार, मुगदर, भाला या अन्य कोई शस्त्र दे देने पर वह रात में प्रविष्ट होने वाले चोरों से द्वार पर ही युद्ध करेगा।

'समरांगण सूत्रधार' में अनेक यंत्रों का वर्णन पाया जाता है। यहाँ दिग्दर्शनमात्र उल्लेख किया गया है। इस के पढ़ने से पाठकों के हृदय में एक प्रश्न उठा होगा कि जिन यत्रों का वर्णन यहाँ किया गया उन की स्पष्ट निर्माण-विधि क्यों नहीं लिखी गयी ? ग्रंथकार ने इस संबंध में स्वयं उत्तर दिया है—

यन्त्राणां घटना नोक्ता गुप्त्यर्थं नाज्ञतावशात्
तत्र हेतुरयं ज्ञेयो, व्यक्ता नैते फलप्रदाः ।।

यंत्रों के बनाने की विधि के न लिखने का कारण अज्ञान या छिपाव नहीं है, बल्कि इस का कारण यह है कि पूरा लिखने पर भी यह फलप्रद नहीं होता। अर्थात् पूरा विवरण देने पर भी कोई बनाने में समर्थ नहीं होता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और व्यर्थ ग्रंथ कलेवर भी बढ़ जाता। यंत्रों की कला सदा प्रत्यक्ष ही सिद्ध होती है।

यों ग्रंथकार ने इन शब्दों में सारी शंकाओं का समाधान कर दिया है—

उक्तानि अत्र बीजानि

इस ग्रंथ में यंत्रों के सभी रहस्य बीज रूप से बता दिये गये हैं। कुशल कलाकार इस संकेत से स्वयं यंत्र बनाने में समर्थ हो सकते हैं।

इस प्रकार यह ज्ञात हो गया कि ग्यारहवीं शताब्दी में भारत में यंत्र कला की पर्याप्त उन्नति थी, जब कि अन्य देशों में पर्याप्त अंधकार था। आधुनिक आविष्कारों का इतिहास तो १६वीं शताब्दी के अंत तथा १७ वीं शताब्दी के आरंभ से शुरू होता है। हमें अपने अतीत गौरव को पुनः जाग्रत करना है। हमें पश्चिम से नयी बाते सीखनी हैं और अपने पुराने खजाने का पता लगाना है। हमारे ऊपर महान् उत्तरदायित्व है। हमें वर्तमान व अतीत को ले कर चलना है और ऐसे भविष्य का निर्माण करना है, जो दोनों से अच्छा हो, दोनों की न्यूनताएँ इस में न हों और जो न अतीत की तरह एकदेशीय हो और न वर्तमान की तरह विध्वंसक। यह भविष्य सर्वव्यापक, सर्वसुलभ, सुखशान्तिदायक, सत्य व अहिंसा का प्रतीक हो।

नौजवान

तुम्हीं वतन की शान हो, तुम्हीं वतन की जान हो
वतन के नाम पर मरो, वतन के नाम पर जियो
वतन पै मिट के तुम वतन को जिन्दगी अता करो
मेरे वतन के नौजवां, बढ़े चलो, बढ़े चलो ॥

जो तुमसे दूर-दूर हैं उन्हें करीब लो बुला
जो प्यार से गले मिलें उन्हें गले से लो लगा
भटक गये जो राह से उन्हें दिखाओ रास्ता
मेरे वतन के नौजवां, बढ़े चलो, बढ़े चलो ॥

तुम्हें कोई दिखाये आंख किसकी यह मजाल है
तुम्हारे सामने कोई ठहर सके मुहाल है
ये मादरे वतन का तुससे एक ही सवाल है
मेरे वतन के नौजवां, बढ़े चलो, बढ़े चलो ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थप्रकाश पढ़ो

'सत्याथप्रकाश' पढ़ो, और घर-घर में पढ़ाओ।
आओ ! आओ ! आओ ! आर्यसमाज में आओ ।।
महर्षि दयानन्द का संदेश इस अमर ग्रंथ में पाओ।
सत्संग करो घर-घर में, इस अमृत ज्ञान का स्वाध्याय कराओ ।।

—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो० ।

वेदज्ञान, उपनिषद्शास्त्र का है यह 'ऋषिकृत' सार।
आर्यावर्त के प्राच्य वेद धर्म का गौरव मन में लाओ ।।

—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो० ।

'कृण्वतो विश्वमार्य्यम्' की शिक्षा देता है यह अमर ग्रंथ।
'असतो मा सद्गमय' और 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' पुण्य शुभ लाओ।।

—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो० ।

'ओंकारादि नामों की व्याख्या' प्रतिपादित है प्रथम समुल्लास में।
'सन्तानों की शिक्षा कैसी होवे ?' द्वितीय समुल्लास जैसी दिलवाओ।।

—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो० ।

तृतीय समुल्लास में ऋषि कहते हैं 'ब्रह्मचर्य व्रत पालन' को।
'पठन-पाठन व्यवस्था, संत्यासत्य ग्रथों के नाम' इसी में पाओ ।।

—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो० ।

चतुर्थ समुल्लास में है वर्णित 'विवाह और गृहाश्रम' का व्यवहार।
पंचम समुल्लास में 'वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम' विधि पाओ ।।

—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो० ।

छठा समुल्लास बतलाता है सबको 'राज-धर्म' कैसा होवे ?
सप्तम समुल्लास में 'वेदेश्वर विषय' आद्योपांत पढ़ जाओ ।।

—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो० ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जगत् की उत्पत्ति स्थिति, प्रलय, बताता है अष्टम समुल्लास।
नवम में 'विद्या, अविद्या, बन्ध, मोक्ष' जीवन को दर्शाओ॥
—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो०

'आचार, अनाचार, भक्ष्याभक्ष्य, दशम समुल्लास बतलाता है।
'आर्यावर्तीय मत मतान्तरों का खंडन मंडन'
एकादश में सुनो-सुनाओ।
—सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो०।

द्वादश समुल्लास है बतलाता, 'चार्वाक और जैनमत क्या हैं ?
त्रयोदश समुल्लास में, धर्मभक्त जन ! 'ईसाईमत' पढ़ जाओ॥
—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो०।

'मुसलमानों का विषय' चौहदवें समुल्लास में वर्णित है ढंग से।
सत्य 'सनातन वेद विहित मत' स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश में पाओ॥
—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो०।

इस ज्ञान--पुंज को पढ़ कर, आर्यों ! सर्वत्र सदा बिखराओ।
ऋषि दयानन्द का ऋण है सब पर, आओ ! इसे चुकाओ॥
—सत्यार्थप्रकाश पढ़ो०।

वेदों का डंका

छाया था विश्व में घना अज्ञानांधकार,
दिव्य वेदों का ज्ञान ले दयानन्द आया था।
हो रहे थे पाखण्ड, पोपलीलाएँ यत्र-तत्र,
'पाखण्ड खंडिनी पताका' ले शास्त्रार्थ रचाया था।
मौलवी, पोप, पण्डे आडम्बर रच रहे थे,
वेदों का प्रमाण दे उन्हें मैदान से भगाया था।
अनमेल विवाह मूर्तिपूजादि फैली थी सर्वत्र—
लाकर 'ओ३म' को 'प्रकाश' में डंका वेदों का बजाया था।

ओ३म् प्रकाश आर्य,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्यभूषण योगी

वेद माता का

विवाह के अवसर पर उपदेश

रसो वै सः । तमेव लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति । (उपनिषद्)

विवेक-शक्ति-स्वास्थ्य

मा त्वा प्रापच्छपथो माभिचारः ।
स्वे क्षेत्रे अनमीवा वि राज ।।

(अथर्व ११.१.२२)

हे गृहस्थ, तेरे घर में सुख स्वास्थ्य सुधा की धार बहे
किसी दुष्ट की कपट दुष्टता का तुझ पर न प्रभाव रहे
अपने गृह में अपनी पत्नी के संग एक भाव होकर
पुण्य कार्य में निरत भोग सुख; भला करेंगे शिव शंकर

मुसकाती हुई कल्याणी

योषा कल्याण्यः स्मयमानासः ।

(ऋक् ४.५८.८)

वह कोयल भी क्या कोयल है जिसके गल में कल गान नहीं
वह सुमन नहीं है सुमन सुरभि रस का करता जो दान नहीं
वह ऊषा भी क्या ऊषा है उल्लास नहीं जिसके दृग में
वह नारी भी क्या नारी है जिसके मुख पर मुसकान नहीं

वह जननी जाया सुता बहन
हम करते उसका गुण-कीर्तन
जिसके मुख पर मुसकान बसे
करते प्रणाम हम सदा उसे
वह कल्याणी वह मंगलमय
उसमें बिम्बित हैं प्रभु रसमय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नारी पुरुष को वश में रखे

इषुः कामस्य या भीमा (अथर्व ३.२५.१)
अथैनामकृतुं कृत्वा, ममैव कृणुतं वशे
(अथर्व ३.२५.६)

इस जग में काम भयंकर है, उसके वाणों का वेग प्रबल
यह कर देता संकल्पशून्य, निष्क्रिय हो जाता पुरुष अबल
जिस नारी को यह चाह कि उसका पुरुष सदा निजगृहरत हो
त्याग, समझदारी से उसको वह रक्खे निज वश में प्रतिपल

तीव्र प्रेम—तीव्र काम

वाञ्छ मे तन्वं पादौ वाञ्छाक्ष्यौ वाञ्छ सक्थ्यौ
अक्ष्यौ वृषण्यन्त्याः केशा मां ते कामेन शुष्यन्तु ।।
(अथर्व ६.९.१)

पति-पत्नी का प्रेम मधुर ऐसा अनन्य हो मिला रहे मन
अंगों को अंगों से ऐसी प्रीति सघन जुड़ जाएं मन
जितना प्रेम सबल होगा उतना ही काम प्रबल होगा
अतिघन काम-प्रेम से उत्तम सन्तति का होगा सर्जन

नारी पुरुष की मित्र बने

भद्रा वधूर्भवति यत् सुपेशाः
स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित् ।
(ऋक् १०.२७.१२)

सुन्दर भावों से सुन्दर मुख जिस नारी का है हो जाता
वह कल्याणी मंगलमय उसके मुख पर दिव्य भाव छाता
वह वधू मित्र पति की बनकर उसकी प्रिय सहचर है बनती
उसके पद-पद पर जीवन है, मधु सुधा दृगों से है झरती

स्त्री ब्रह्मा है

स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ । (ऋक् ८.३३.१९)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्त्री ब्रह्मा है, वह करती है इस मानव का सर्जन
वह महिला है, वह महान् है, समुचित उसका अर्चन

गृहस्वामिनी

अस्मिन् गृहे गार्हपत्याय जागृहि
एनापत्या तन्वा सं स्पृशस्व·····
(अथर्व १४.१.२१)

नारी गृहस्वामिनी बने जब पति के घर आए
उसके बल पर पुरुष कर महान् कार्य दिखलाए

पति की अनुव्रता

आशासाना सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम् ।
पत्युरनुव्रता भूत्वा संनह्यस्वामृताय कम् ॥
(अथर्व १४.१.४२)

पत्नी घर में सद्भावों का कर प्रसार माधुर्य बसाती
सन्तति संपत् सौभाग्यों से घर को है वह स्वर्ग बनाती
पति की अनुव्रता होकर वह अमृत रस की धार बहाए
पुण्य महान् पुरुष के, उसको यदि ऐसी पत्नी मिल जाए

मधुर नारी

अघोरचक्षुरपतिघ्नी स्योना
शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्यः ।
वीरसूर्देवृकामा सं त्वयै-
धिषीमहि सुमनस्यमाना ॥
(अथर्व १४.२.१७.

मंगलमय कुलवधू दृगों में जिसके कोमल भाव रहे
कभी नहीं पति का दिल तोड़े, शान्तिमहामुखधार बहे
घर की करे व्यवस्था, वीरों की वह जन्म प्रदात्री हो
श्वशुरालय में सबके हित वह प्रेमभावनिर्मात्री हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुमङ्गली

सुमङ्गली प्रतरणी गृहाणां
सुशेवा पत्ये श्वशुराय शंभूः।
स्योना श्वश्र्वै प्र गृहान् विशेमान् ॥

(अथर्व १४.२.२६)

मंगलमय नारी निज घर के
गौरव संपद् की वर्धक
पतिहित सुखद श्वशुरश्वश्रू हित
मधुर-शान्ति-रस की वर्षक

इन्द्राणी—मति में विवेक, चेहरे पर मुसकान

आ रोह तल्पं सुमनस्यमानेह
प्रजां जनय पत्ये अस्मै।
इन्द्राणीव सुबुधा बुध्यमाना
ज्योतिरग्रा उषसः प्रति जागरासि ॥

(अथर्व १४.२.३१)

पति से तेरा संयोग मधुर उत्तम सन्तति का बने हेतु
बन बुद्धिमती इन्द्राणी-सी हे वधू, बने तू तरण-सेतु
पौ फटने पर तू जाग सदा गृह-मन्दिर का संस्कार करे
ऊषासम तेरा तेज दिव्य संसृति में सुखरस-सुधा भरे

स्त्री का मन

इन्द्रश्चिद् द्या तदब्रवीत् स्त्रिया अशास्यं मनः।
उतो अह क्रतुं रघुम् ॥

(ऋक् ८.३३.१७)

यह स्त्री तो दर्पण है, जैसा होगा पुरुष दिखेगी वैसी
यह स्त्री तो द्रवरूपा, जैसा होगा पात्र दिखेगी वैसी
स्त्री का निश्चित है रूप नहीं, वह सदा भले के लिए भली
और बुरे के लिए वृकी सम, वैसे वह कोमल कुसुम-कली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोब डालकर तुम नारी से कुछ भी नहीं करा सकते हो
किन्तु प्रेम से उसको वश में करके तुम अपना सकते हो
बुद्धि-विवादों से नारी को मत समझाने का यत्न करो
उसे भावना के स्तर पर तुम जो चाहे समझा सकते हो

जागरूक नारी

प्र बुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो
दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु॥ (अथर्व १४.२.७५)

आलस्य त्याग सुबुधा पत्नी
नवज्ञानकर्म-विस्तार करे
हो दीर्घ आयु सौ बरस सुखद
गृह में मधुमय संगीत भरे

मन का मिलन

मम त्वा दोषणिश्रिषं कृणोमि हृदयश्रिषम्।
यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि॥ (अथर्व६.९.२)

पति की बाहों पर सिर रखकर पत्नी निश्चिन्त विराजित है
वह उसके दिल की रानी है, दोनों अन्योन्यसमाश्रित हैं
दोनों में प्रेम अनन्य रहे तो घर में स्वर्ग उतर आता
वे बसते हैं, सुख बसता है, मानव ऊपर चढ़ता जाता

सदा इकट्ठे रहो

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ॥
(अथर्व १४.१.२२)

हे पत्नी-पति, दोनों इस घर में जीवन-भर सुख से वास करो
क्षण-भर भी हो न वियोग कभी, जीवन-रस से निज चषक भरो
पुत्रों पौत्रों से सदा खेलते हुए मधुर बीते जीवन
मन में पवित्रता, कर्म करों में, चरणों में गति का नर्तन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नियम पालन—शुभ कर्म

ऋतस्य योनौ सुकृतस्य लोकेऽरिष्टां
त्वां सह पत्या दधामि। (ऋक् १०.८५.२४)

तुम प्रकृति तन मन आत्मा के नियमों का सदा करो पालन
शुभ कर्मों में तुम निरत रहो—यह भुक्ति मुक्ति का है साधन
कोई भी दुःख नहीं होगा, पत्नी पति के संग करे रमण
नर विवेक संकल्प कर्म से पाता आनन्द सदा रस घन

नारी के चार पति

सोमः प्रथमो विविदे
गन्धर्वो विविद उत्तरः।
तृतीयो अग्निष्टे पति-
स्तुरीयस्ते मनुष्यजाः॥ (ऋक् १०.८५.४०)

नारी हो यह शान्त चन्द्र-सी उज्ज्वल जन-मन-आह्लादक
हो विविध कलाओं में प्रवीण गन्धर्वों-सी रसमय मादक
हो इसमें वह संकल्प शक्ति, यह अग्नि—अग्रणी बन जाए
वह धन्य पुरुष इस नारी को निज वधू रूप में जो पाए

कलापूर्ण, प्यार करने वाली

जायेव पत्य उशती सुवासाः।

(ऋक् १०.७१.४

बिखरेपन को जो ठीक करे उसको हम कहते हैं नारी
कर निर्मल वस्त्र सदा धारण महकाती घर की फुलवारी
जो पति में ऐसी लीन कि जैसे भक्त लीन प्रभु में होता
जो सेवा और समर्पण से हो पति को प्राणों से प्यारी

चकवा—चकवी

चक्रवाकेव दम्पती.....
विश्वमायुर्व्यश्नुतम्। (अथर्व १४.२.६४)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चकवा-चकवी सम दम्पति ये अविकार्य प्रेम में मग्न रहें
पाएं मानव की पूर्ण आयु, घर में शुभ सुख की धार बहे

महिषी

सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति।

(अथर्व २.३६.३)

यह नारी की महनीय कीर्ति वह बनती बच्चों की माता
उसके सम्मुख सम्राटों का भी सिर आदर से झुक जाता

सती नारी की शोभा

शुद्धाः सतीस्ता उ शुम्भन्त एव
ता नः स्वर्गमभि लोकं नयन्तु।

(अथर्व १२.३.२६)

शुद्ध सती नारी के मुख पर
दिव्य शान्ति होती शोभित
वह घर को स्वर्ग बना देती
वह जीवन-रस से सुरभित

सौभाग्यप्रद पाणिग्रहण

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम्।

(अथर्व १४.१.५०)

पति से पत्नी का, पत्नी से
पति का सारा जीवन
हो जाता है सौभाग्यपूर्ण
घिर आते रसमय घन

पत्नी पोष्या है

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावति संजीव शरदः शतम्॥

(अथर्व १४.१.५२)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्नी भावुक है, उस पर है आश्रित घर सारा
उसके पद-पद में बहती मधुमय जीवन-धारा
भार जीविका का पति ले ले अपने कन्धों पर
पत्नी सन्तति के विकास में लगे, स्वर्ग हो घर

अग्नि-भूमि-मिलन

येनाग्निरस्या भूम्या हस्तं जग्राह दक्षिणम्।
तेन गृह्णामि ते हस्तं मा व्यथिष्ठा मया सह प्रजया च धनेन च॥

(अथर्व १४.१.४८)

पत्नी है यह भूमि, अग्नि है पति, दोनों जब मिलते
तो जीवन-फुलवारी में सुरभित प्रसून हैं खिलते
जीवन में दुःख नहीं रहता, सुख-सागर लहराता
उत्तम सन्तति, सुख सम्पद् से जीवन मधु हो जाता

प्रेरणा-ज्ञान-आनन्द

देवस्ते सविता हस्तं गृह्णातु सोमो राजा सुप्रजसं कृणोतु।
अग्निः सुभगां जातवेदाः पत्ये पत्नीं जरदष्टिं कृणोतु॥

(अथर्व १४.१.४९)

संगिनि, तेरा हाथ हाथ में लिया प्रेरणा से भावित
पुण्य दिव्य आनन्द प्रदाता सन्तति, घर हो आनन्दित
ज्ञान प्राप्त कर, बनें अग्रणी हम जीवन-भर साथ रहें
यह अनन्य रति दोनों की हो जन्म-जन्म में प्रतिभाषित

सविता=प्रेरणा। सोम=आनन्द। जातवेदाः (अग्निः)=ज्ञान।

नारी, घर को रमण योग्य बना

कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते। (ऋक् ३.५३.६)

यदि जाया होती कल्याणी घर होता उसका स्वर्ग-सदन
तो उसका पति घर से बाहर जाकर करता है नहीं रमण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संकल्प शक्ति

रयिं च पुत्राँश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम्।
(अथर्व १४.२.४)

मैं गृहस्थ में आया हूं
मेरा ऐसा संकल्प जगे
संपत्-संतति-पूर्ण रहे गृह
दुःख दोष सब दूर भगें

बल-प्राणायाम-उन्नति-कीर्ति

आ वृषायस्व श्वसिहि वर्धस्व प्रथयस्व च।
(अथर्व ६.१०१.१)

हे गृहस्थ, स्वस्थता की रक्षा करना, शक्ति बढ़ाना तू
प्राणायाम आदि से अपना तेज ओज विकसाना तू
ऐसे करना कार्य, दिगन्तों में तव कीर्ति प्रथित होवे
जीवन-सुख, उत्तम सन्तति के यों उत्तम फल पाना तू

सती नारी

न मृष्यन्ते युवतयोऽवाताः। (ऋक् ६.६७.७)
तेज सती नारी का कोई यहां नहीं सह सकता
उसके सम्मुख पर्वत झुकते, उसकी बड़ी महत्ता

सूर्या का विवाह

चित्तिरा उपबर्हणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम्।
द्यौर्भूमिः कोश आसीद् यदयात् सूर्या पतिम्॥
(ऋक् १०.८५.७)

पति है सोम और पत्नी है सूर्या, दोनों का प्रेम अमर
यह चन्द्र सूर्य की किरणों को पाकर ही होता है भास्वर
यह बदल सृष्टि को सकता है, ऐसी कुछ महा महत्ता है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जल स्थल नभ में यह राज्य करे, बांधे समुद्र, गिरिशिखर चढ़े
इसका ऐसा निर्माण हुआ यह इधर बढ़े यह उधर बढ़े
पर विद्युत्, वाष्प बिना कुछ भी
यह कर सकता है यन्त्र नहीं
नारी वह विद्युत्, वाष्प कि जिससे यह होता गतिपूर्ण प्रखर
पति है सोम·····

जवनी-तत्त्वों का चिन्तन है सूर्या नारी का शिरोधान
औ तत्त्व-दृष्टि ही अञ्जन है, तमनाशक ज्योतिर्मय प्रमाण
इसके हैं बड़े खजाने दो – यह वितत गगन तारक-द्योतित
यह भूमि कि जिस पर होते हैं मानव के काम-कर्म नर्तित
इन दो बहुमूल्य खजानों का
लेकर दहेज आती सूर्या
अपने दूल्हे के जीवन को वह देती है ज्योतिर्मय कर
पति है सोम·····

२

स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः ।
सूर्याया अश्विना वराऽग्निरासीत् पुरोगवः ॥
(ऋक् १०.८५.८)

सोमो वधूयुरभवदश्विनास्तामुभा वरा ।
सूर्या यत् पत्ये शंसन्तीं मनसा सवितादधात् ॥
(ऋक् १०.८५.९)

जब सूर्या रथ में बैठ चली तब एक मानसिक रथ भी था
भौतिक पथ पर रथ बढ़ता था, तब एक मानसिक पथ भी था
रथ के डंडे थे वेदमन्त्र, नव कर्म गीत था रथ की छत
इनसे वह रथ था सुदृढ़ बना, था देवों के मन को अभिमत
थे रक्षक अश्विदेव दोनों—प्रतिपल गति और मनोरंजन
जब चली वधू, उस दल का था नेता सङ्कल्प अग्नि मोहन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब महा प्रेरणा सविता से
प्रेरित यह सूर्या वधू चली
पाने को चन्द्र सदृश पति को थे अश्विदेव प्रहरी तत्पर
पति है सोम·····

(ऋक् १०.८५.८,९)

३

मनो अस्या अन आसीद् द्यौरासीदुतच्छदिः ।
शुक्रावनड्वाहावास्तां यदयात् सूर्या गृहम् ॥

(ऋक् १०.८५.१०)

ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावितः ।
श्रोत्र ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः ॥

(ऋक् १०.८५.११)

मन के रथ पर बैठी सूर्या, जीवन-प्रकाश था रथ की छत
थे चक्र ज्ञान से दृढ़ निर्मित, थे वृषभ आन्तरिक शक्ति जनित
था एक वृषभ ऋग्वेद कि जिससे पूर्ण चराचर ज्ञान मिला
था एक वृषभ मधु सामवेद जिससे रसमय सुखगान मिला
थे विविध ज्ञान के चक्र और
रथ महाज्योति से भासित था
सूर्या के इंगित से द्योतित थे सभी चराचर पद-पद पर
पति है सोम·····

४

शुची ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः ।
अनो मनस्मयं सूर्याऽऽरोहत् प्रयती पतिम्

(ऋक् १०.८५.१२)

सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत् ।
अघासु हन्यन्ते गावोऽर्जुन्योः पर्युह्यते ॥

(ऋक् १०.८५.१३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन के रथ पर यह बैठ चली, दोनों वे चक्र चमकते थे
उन चक्रों में नव ऊर्जामय प्राणों के अक्ष दमकते थे
यह दहेज ले जाती सूर्या पतिगृह को प्रेरणा-अनुप्राणित
वाग्दान माघ में किया गया, फाल्गुन में विवाह विधि शोभित
यह माघ शान्ति का है प्रतीक
फाल्गुन प्रतीक जीवन-रस का
यह चली वधू है सजा साज ले ज्योतिर्मय जीवन के स्वर
पति है सोम·····

५

यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः ।
विश्वे देवा अनु तद्वामजानन् पुत्रः पितरावृणीत पूषा ।।
(ऋक् १०.८५.१४)

जीवन गति और मनोरंजन—ये अश्विदेव कहलाते हैं
दोनों सूर्या के लिए खोज उसके दूल्हे को लाते हैं
सूर्या के रथ के ये तीन चक्र ज्ञान कर्म उपासना हैं
यह परिणय देव-समर्थित है, नवजीवन-समायोजना है
कर सूर्या का उपकार पितामह
बन जाते ये अश्विदेव
सविता कृतज्ञ है, पुत्र सदृश, है सूर्या का दहेज सुन्दर
पति है सोम ····

कुलाङ्गना

सखा भ्राता सुहृद् भृत्यो
गुरुर्मित्रं धनं सुखम् ।
शास्त्रमायतनं दासः
सर्वं भर्तुः कुलाङ्गना ।।

—योगवासिष्ठ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहाड़ पर यीशु का उपदेश ?

★

पहाड़ पर उपदेश देते हुए यीशु ने कहा था कि यह न समझो कि मैं तौरेत और नबियों की उपेक्षा करने आया हूं बल्कि पूरा करने आया हूँ। (**पहाड़ पर यीशु का उपदेश** पृष्ठ १३ बाइबिल सोसायटी आफ इण्डिया एन्ड सीलोन) ऐसा कह करके यीशु ने इस बात का समर्थन किया कि वह तौरेत और नबियों की पुस्तकों को पूरी तरह मानता है।

मेल मिलाप के बारे में

अगर तू कुरबानगाह पर अपनी भेंट दे रहा है और वहाँ तुझे याद आये कि मेरे भाई को मुझसे कुछ शिकायत है तो तू अपनी भेंट वहीं छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मिलाप कर। (पृष्ठ १८)

इसके विपरीत यीशु ने इंजील-लूका २२।५१-५३ में स्पष्ट कहा है कि "मैं संसार में शान्ति के लिए नहीं आया हूँ बल्कि भेदभाव पैदा करने आया हूँ। जिस घर में पाँच व्यक्ति होंगे उसमें मैं तीन एक ओर और दो दूसरी ओर कर दूँगा। पिता पुत्र के और पुत्र पिता के विरुद्ध, माँ बेटी के और बेटी मां के विरुद्ध, बहू सास के और सास बहू के विरुद्ध होगी और घर के व्यक्ति ही घर के शत्रु बनेंगे"।

यह है मेल मिलाप और ईसाइयत के प्रेम की नंगी तस्वीर।

तलाक के बारे में

यह भी कहा गया है कि जो कोई अपनी पत्नी को छोड़े, उसे तलाक-नामा लिख दे। लेकिन मैं तुमसे यह कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के अतिरिक्त किसी अन्य कारण से छोड़े वह उससे व्यभिचार कराता है और जो कोई उस तलाक दी हुई स्त्री से विवाह करे वह भी व्यभिचार करता है (पृष्ठ २२)

ईसाइयों के बड़े पादरी पोप साहब ने यह घोषणा की हुई है कि जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कैथोलिक ईसाई किसी गैर-कैथोलिक ईसाई अथवा प्रोटेस्टेन्ट ईसाई से भी विवाह करता है वह व्यभिचार करता है और होने वाली सन्तान भी हरामी कहलायेगी।

इंगलैंड और अमरीका में जहाँ के अधिकतर निवासी यीशु के भक्त हैं, इस कसौटी पर खरे उतरने वालों की संख्या आटे में नमक के बराबर है और ईसाइयत के इस सिद्धान्त के अनुसार ये देश व्यभिचार ग्रस्त हैं। इन्हीं देशों के अगणित नर-नारी प्रतिदिन बार-बार तलाक दे और लेकर अपने नये साथियों से बार-बार विवाह करते हैं।

दुश्मनों के साथ मुहब्बत

"तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि शारीरिक मुकाबला न करना, बल्कि जो कोई तुम्हारे दायें गाल पर थप्पड़ मारे दूसरा भी उसकी तरफ कर दो। तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि अपने पड़ोसी से मुहब्बत रख और अपनु शत्रु से शत्रुता। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि अपने दुश्मनों से मुहब्बत रख और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना कर" (पृष्ठ २५, २७)।

इसके विपरीत यीशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि "जिसके पास तलवार नहीं है उसे अपनी पोशाक बेचकर भी तलवार खरीद लेनी चाहिये (लूका २२।३६)

इंजील में यह भी आज्ञा है कि अगर तुझको कोई ईसाइयत के अलावा अन्य किसी धर्म का उपदेश दे तो तू उसकी बात न सुन, उस पर लानत भेज और उसे धिक्कार और यदि वह तुझको अधिक विवश करे तो काटकर फेंक दे (गलेशियन १।६, १२)।

यीशु के इस उपदेश से स्पष्ट है कि ईसाइयत का दुश्मनों के साथ मुहब्बत के नाम पर प्रचार एक झूठा दिखावा मात्र है।

दान के बारे में

जब तू दान करे तो ढिंढोरा मत पीट जैसा पाखंडी लोग प्रार्थना भवनों और गली कूचों में करते हैं ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। जब तू दान करें तो जो तेरा दायाँ हाथ करता है उसे तेरा बायाँ हाथ न जाने (पृष्ठ ३०-३१) इसके विपरीत ईसाई पादरी गरीबों में जो कपड़ा-लत्ता और दवाई इत्यादि बाँटते हैं उसके बदले में उनसे अपने पैतृक धर्म को छुड़वाना चाहते हैं। जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कभी इंगलैंड और अमरीका जैसे पूँजीवादी देश किसी देश की रत्ती भर भी सहायता करते हैं या उधार भी देते हैं तो उसका चीख मार-मार कर ढिंढोरा पीटते हैं। यीशु के कथनानुसार पाखंडी और ढोंगी ही ऐसा करते हैं। ऐसे ढोंगियों को यीशु ने भेड़ की खाल में भेड़िये से उपमा दी है।

माल और दौलत के बारे में

अपने वास्ते जमीन पर धन जमा न करो जहाँ कीड़ा और जंग खराब करता है और जहाँ चोर सेंध लगाते हैं और चुराते हैं। (पृष्ठ ४४)

यीशु के इस कथन की अवहेलना ईसाइयों का सबसे बड़ा पादरी पोप स्वयं करता है जो एक हजार कमरों के आलीशान महल में शान शौकत से रहता है। इस टीपटाप को बनाये रखने के लिए बम्बई के विश्व ईसाई सम्मेलन में भाग लेते वक्त भी वह अपनी बहुमूल्य मोटर गाड़ी पाँच हजार मील से लाया था।

उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि बाइबिल और यीशु के परस्पर विरोधी वचन किस प्रकार जनता को गुमराह कर रहे हैं और ईसाइयों के सारे कारनामे इंजील की शिक्षाओं के बिल्कुल विरुद्ध होते हैं। हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और।

पूँजीवादी देशों के धन से खोले गये स्कूल-अस्पताल और अन्य समाज सेवा केन्द्रों का गुप्त उद्देश्य गैर ईसाइयों को अपने पैतृक धर्म से वंचित कराकर ईसाई बनाना है। सेवा, प्रेम और विश्व बन्धुत्व की भावना की आड़ में ईसाइयत का प्रचार टट्टी की ओट में शिकार के समान है। भारतवासी अब इन षड्यंत्रों को भलीभाँति समझ गये हैं। ईसाइयत की पोपलीला का पर्दाफाश हो चुका है जिसके फलस्वरूप बहुसंख्या में असंन्तुष्ट भारतीय अपने वैदिक धर्म में फिर वापस आ रहे हैं।

विशेष जानकारी और साहित्य के लिए निम्न पते पर लिखिये।

जन-ज्ञान-प्रकाशन,
नई दिल्ली-५

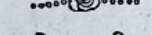

अज्ञान के प्रतीक ईसाइयत के षड्यन्त्र विफल करने में पूरी शक्ति लगाइए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्योति जीवन की जगाओ !

चांद निकले या न निकले
भावना फूले फले पर !
मृत्यु हो या जन्म जग में,
मुस्कराहट खिलखिलाए।

सत्य की अद्भुत कसौटी
कष्ट में ही खिल सकी है।
धर्म की 'अग्नि' परीक्षा,
आज तूफ़ां ले रहा है।

प्यार सपना बन गया है,
हार आदत बन रही है।
जिन्दगी भाती नहीं है,
मृत्यु साथी बन गयी है।

है निराशा की निशा यह,
'मैं' यहां जीवित नहीं हूं।
हूं मगर फिर भी नहीं हूं,
सोचता भी 'मैं' नहीं हूं।

'मैं' कहां हूँ, कह रहा क्या,
प्राण मेरे हैं सिसकते,
किन्तु सिसकन सुन न पाया,
रो रहा मैं, हंस रहा हूं।

यह हंसी क्या काम देगी,
तार जीवन के सजाओ।
सत्य को जानो, समझ लो,
'ज्योति' जीवन की जगाओ।

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आइए वेद प्रचार का भारी बोझ
सभी मिल कर बांट लें

आगे बढ़ने और विजय के लिए,
रचनात्मक कार्यों के लिए,

उदारता पूर्वक अधिक से अधिक

यज्ञ में आहुति दीजिए

आप के सहयोग का परिणाम प्रत्यक्ष है।
उसे देखिए और अधिक शक्ति से सफलता के लिए

अपना सहयोग दीजिए

१) में ऋषि जीवन ५ लाख प्रसारित करने के लिए आप क्या करेंगे ? सोचिए....

—प्रतीक्षा में—

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान द्वारा आयोजित

वेद-प्रचार-यज्ञ में प्राप्त आहुतियाँ

१—श्रद्धेय योगीराज श्री स्वामी योगेश्वरानन्दजी सरस्वती योग निकेतन ऋषिकेश	५१·००
२—श्रीकृष्ण कपूर, नागरथ पेंट्स कानपुर	१०००·००
३—श्रीकृष्ण कपूर नागरथ पेंट्स कानपुर अपने पुत्र के विवाह पर विदेश में सत्यार्थ प्रकाश भेजने हेतु	२००·००
४—ला० दीवानचन्दजी प्रधान दीवानचन्द ट्रस्ट दिल्ली	५००·००
५—श्रीमती दमयन्ती देवीजी मुज़फ्फर नगर	१००·००
६—श्रीमती कौशल्या ग्रोवर झांसी	२०·००
७—श्री सौदागरमलजी चोपड़ा कलकत्ता	३००·००
८—श्री तपस्वीराम नरकटियागंज	१०१·००
९—श्री रामरतन तिवारी भोगांव	४·००
१०—श्री पूरालाल आर्य माकड़ौन	२·५०
११—श्री आत्माराम आर्य माकड़ौन	२·५०
१२—श्री नारायणप्रसाद ग्वालियर	३·००
१३—श्री सत्यदेव मद्रास	२१·००
१४—श्री नन्दकिशोर प्रसादसिंह कथौलिया	२·५०
१५—श्री मौहनदास जालना	२५·००
१६—श्री अशोककुमार कश्यप कटिहार	४·००
१७—श्रीमती सरला मेहरा सत्संगमंडल देहली	२५·००
१८—श्री बनारसी साव नगर उंटारी	२५·००
१९—श्री शान्तिदेवी मोहन देहली	१५·००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०—श्री दीपचन्द किशनलाल कलकत्ता	५१·००
२१—श्री बी० साधू नैटाल	८६·८०
२२—श्री ताराचन्दजी घीमान दिल्ली	२५·००
२३—श्री एम० वी० गैलीनस सूर्यनाम	६६·१२
२४—श्री लालचन्द चोपड़ा बम्बई	२१·००

११) की आहुति देने वालों की सूची

१. डा० सुनीता पाहवा—जवेरा। २. श्री राजेश्वर नई दिल्ली। ३. ठा. मोहनसिंह जोधपुर। ४. श्री ओमप्रकाश साहू—आसनसोल। ५. श्री रवीभूषण जालन्धर। ६. प्रिंसिपल श्री एन० सी० वी० इन्टर कालेज—आगरा कैंट। ७. श्री बलदेव वानप्रस्थी—चांदपुर। ८. श्री बन्सीलाल—मन्दसौर।

१०) की आहुति देने वालों की सूची

१. श्री बनवारीलाल पचेरी वाला—साहिबपुर। २. श्री लालजी आर्य आ० स० हिरणपुर। ३. श्री रामनारायण—बम्बई। ४. प्रो चन्द्रप्रकाश—करनाल। ५. श्रीमती आज्ञावती—अमृतसर। ६. श्री शिवनाथसिंह—रघुनाथपुर। ७. श्री केशवनन्द्र—लुधियाना। ८. श्री यू०एस० मांडवाकर—जगदलपुर। ९. डा० कमला भंडारी—बीकानेर। १०. श्री रामचन्द्रजी—करनाल।

५) की आहुति देने वालों की सूची

श्री अमरनाथ पाहवा—उज्जैन। २. श्री जी० के० केजरीवाल। ३. श्री विश्वनाथ—जम्मू। ४. श्री शिवजी गुप्त—साहबगंज। ५. श्री रामकृष्ण दवे—लांजी। ६. श्री झुनालाल नेनूराम—हिम्मतनगर। ७. श्री कन्हैयालाल—गोरखपुर। ८. श्री रघुनाथप्रसाद—शहजादपुर। ९. श्री प्रतापबहादुर—तम्बौर। १०. श्री डा० किशोरीप्रसाद—नगर उंटारी। ११. श्री वेदप्रकाश—मण्डी टाउन। १२. श्री सुमित्रादेवी—नैनीताल १३. श्री छोटेलाल हलवाई—अलीगंज। १४. सूरजमल वैजनाथ—कलकत्ता। १५. श्री प्रिं० S.M.J.N. डिग्री कालेज—हरिद्वार। १६. श्री परमेश्वर प्रसाद—दानापुर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
१७. श्री एन० एल० वख्शी—ज्वालापुर। १८. श्री नारायण पटेल—धार। १९. श्री जगदीश सिंह—तांडूर। २०. श्री छत्रपालसिंह—छिबरामऊ। २१. श्री विद्यासागर—नई दिल्ली। २२. श्री हरकृष्णलाल—आगरा। २३. श्री अचलसिंह त्यागी—दहचन्द। २४. श्री कुन्दनलाल—रूपनगर। २५. श्री इन्द्रदत्त—अमृतसर। २६. श्री जे० एन० विग—अमृतसर। २७. श्री रामनाथ पाहवा—उज्जैन। २८. श्री मुरलीधर—नारनौल। २९. श्री जनकलाल गुप्ता—कलकत्ता। ३०. श्री बी० पी० गुप्त—डालमीया नगर। ३१. डा० जे० सी० आर्य—आंतरी। ३२—श्री उमरावसिंह अजौली। ३३. श्री शमशेरसिंह—कोटद्वार। ३४. श्री सोहनलाल—गढ़ मुक्तेश्वर। ३५. श्री के० आर० घींगरा—भाटापारा। ३६. आर्य समाज—गंगापुर सिटी। ३७. श्री डी० आर० कोचर खंडवा। ३८. श्री जगन्नाथ पाहवा—उज्जैन। ३९. श्री चुन्नीभाई—सावली। ४०. श्री सत्पालसिंह—इन्दौरा ४१. श्री बीरबल शर्मा—इन्दौरा। ४२. श्री जनार्दन पुंडलीकराव—लातूर। ४३. श्री विमलकुमारी (आर्य स्त्री समाज)—बिजनौर। ४४. श्री गुरदीनलाल—बिसवां। ४५. श्री मुंशीराम—जबलपुर। ४६. श्री मंगलदास मानिकपुरी—जगदलपुर। ४७. श्री जयन्त वी० कोटेचा—पोरबन्दर। ४८. श्री दामोदर भंडारी—करकला। ४९. श्रीमती सावित्रीदेवी—अमृतसर। ५०. श्री आर्य समाज—शमशाबाद। ५१. श्री सी० के० पटेल—बम्बई। ५२. श्री प्रहलादराय पचेरिया—बम्बई। ५३. श्री रामलखन गुप्त—बिसवां। ५४. श्री कपूरसिंह—हैदरपुर। ५५. श्री भजनलाल—शिवपुरी। ५६. श्री मानसिंह—सतधार। ५७. श्री प्रकाशदेवी—जाखलमण्डी। ५८. श्री एन० एल० वख्शी—ज्वालापुर। ५९. श्री शिवदास—अहमदाबाद। ६०. सु० ब० काले० परली वैजनाथ। ६१. श्री प्रसन्नकुमार—टिटलागढ़। ६२. श्री रामस्वरूप—जयपुर। ६३. श्री केशवलाल—सेन्दड़ा।

२) की आहुति देने वालों की सूची

(१) श्री महेशदत्त श्रीवास्तव—अलीगढ़। (२) श्री महादेवप्रसाद यादव—कटैया माहे। (३) श्री भंवरलाल—कांगड़ा। (४) श्री कामेश्वर सिन्हा—धनबाद। (५) श्री नन्दकिशोर गुप्ता—लटेरी। (६) जुगुतराम —

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छिरकापुर। (७) श्री सभापतिसिंह—बमनगांवा। (८) डा० हरसरुप—सैमली। (९) श्री योगेशचन्द्र—रातानाडा। (१०) श्री रमेशचन्द्र—बाड़ी। (११) श्री गोकलप्रसाद—बाड़ी। (१२) श्री कालिकाप्रसाद—कानपुर। (१३) श्री रामसिंह—नंगलादयाली। (१४) श्री डा० रामपालसिंह—इस्मायलापुर। (१५) श्री राधेश्याम—मुगलसराय। (१६) श्री आर० सी० शाक्य—जगदलपुर। (१७) श्री सत्यदेव प्रसाद—भाटपाररानी। (१८) श्री मनोहरसिंह—मिरजापुरी। (१९) श्री सुरेन्द्रकुमार—महले महौर। (२०) श्री हेमराज—अलापुर। (२१) श्री बीरबल—इन्दौरा। (२२) श्री कुलदीपसिंह—इन्दौरा। (२३) श्री रामस्वरूप सैनी—इन्दौरा। (२४) श्री मोहनलाल—इन्दौरा। (२५) श्री आर्य समाज—ब्रह्मपुरी—मेरठ। (२६) श्री सम्पूर्णानन्द—दीनानगर। (२७) श्री आर्य समाज—जानीखुर्द। (२८) श्री ओमप्रकाश शर्मा—ए० पी० ओ० (२९) श्री जे० के० अग्रवाल इटावा। (३०) श्री विजयेन्द्र आर्य—परसा। (३१) श्री सन्ध्यालाल—रायसिरी। (३२) श्री पं० मूलचन्द—मथलकच्छ। (३३) श्री प्रशान्तकुमार दुबलिश—मवाना। (३४) श्री मोहनलाल वैजल—मैनपुरी। (३५) श्री बनवारी लाल आर्य समाज—उझानी। (३६) श्री विजयपालसिंह—रेठड़ा। (३७) आर्य समाज—समीरपुर। (३८) श्री अर्जुनचन्द्र श्रीवास्तव—देवारीखेड़ा। (३९) श्री भागीरथ प्रसाद—चिन्नौद। (४०) श्री जगन्नाथ प्रसाद—डिहरीआनसोन। (४१) श्री घोंड़ीराम उर्फ दयाराम—नान्देड़। (४२) श्री लक्ष्मी नारायण रस्तोगी—बहराइच। (४३) श्री सहदेव मिस्त्री—नगर उंटारी। (४४) श्री विश्वनाथसिंह—छपरा। (४५) श्री गणेशीलाल—पसवारा। (४६) श्री रुद्रदत्त शुक्ल—कानपुर। (४७) श्री नन्दकिशोर—कथौलिया। (४८) श्री गुरमीत सिंह—जगदलपुर। (४९) श्री राधेश्याम—वलीपुर। (५०) श्री सत्यनारायण—सुल्तानपुर। (५१) श्री विजयेन्द्र परसा। (५२) श्री सत्यनारायण—सुल्तानपुर। (५३) श्री कृष्णलाल भाटिया—नई दिल्ली। (५४) श्री मुन्नीलाल—नवांशहर। (५५) श्री सत्यप्रकाश जी—दिल्ली। (५६) श्री हरवंश लाल—दिल्ली। (५६) श्री प्यारेलाल चड्ढा—दिल्ली। (५८) श्री चन्दूलाल—दिल्ली।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
(५९) श्री जयप्रकाश आर्य—दिल्ली। (६०) श्री कपूरचन्द—शिवगंज। (६१) श्री डी० पी० मालवीय—नागपुर। (६२) श्री बालकिशन—अमृतसर। (६३) श्री ए० पी० वर्मा—मद्रास। (६४) श्री मामचन्द गुप्ता—सहारनपुर। (६५) श्री खूबचन्द गुप्ता—अलीगढ़। (६६) श्री मोहनलाल—फिरोजपुर। (६७) श्रीमती प्रकाश देवी—जाखल मंडी। (६८) श्री धर्मदेव जी—ज्वालापुर। (६९) श्री नारायणसिंह—झंड़ियाकलां। (७०) श्री त्रिलोकचन्द—जयपुर। (७१) डा० पवन कुमार बंसल—कांटाबाजी। (७२) श्री विशंभर सहाय—मैनपुरी।

१) की आहुति देने वालों की सूची

(१) सिताबी मोदी—नाथनगर। (२) श्री जगदीश चन्द्र—गढ़हरा। (३) श्री बिहारीलाल—झोंकर। (४) श्री गोकुल प्रसाद—तिलोकपुर। (५) श्री अरविन्दकुमार—ब्यावरा। (६) श्री एस० एन पांवरी—ब्यावरा। (७) श्री रमेशचन्द्र नामदेव—ब्यावरा। (८) श्री लक्ष्मीचन्द्र—ब्यावरा। (९) श्री शिवराम वर्मा—ब्यावरा। (१०) पं० शशीकान्त प्रसाद—छवरही। (११) डा० सुरेन्द्रकुमार—(डुमरी) (१२) श्रीमती मायावती सोनी—जयपुर। (१३) श्री नित्यानन्द—करौराखुर्द। (१४) श्री गौवर्धन साहू—कृषिमण्डी। (१५) श्री आनन्दप्रकाश—भोजपुर। (१६) डा० लोकेश जी—नई दिल्ली। (१७) श्री रामचन्द्र—कानपुर। (१८) श्री दीनानाथ जी—दिल्ली। (१९) श्री राधेश्याम—दिल्ली। (२०) श्री प्रीतमसिंह ड्राइवर—बांदीकुई। (२१) श्री मनोरंजन प्रसाद—चतरा। (२२) श्री गुरदासराम—होश्यारपुर। (२३) श्री जगदीश नारायण—कलकत्ता। (२४) श्री ब्रजलाल आर्य—इटारसी। (२५) श्री जगदीश प्रसाद—गढ़हरा। (२६) श्री ईश्वरलाल—गढ़हरा। (२७) श्री ज्वाला सहाय वानप्रस्थी—नारनौल। (२८) नवरतन आर्यवीर हीराचन्द—बालोत्तरा। (२९) श्री हिमादेवी—ब्राहवहरी। (३०) श्री शंकर प्रसाद—सुरडा। (३१) श्री जनकराज—ऐलनाबाद। (३२) श्री रामचन्द्र—पुलकल। (३३) श्री मांगीलाल पटेल—भैरुखेड़ा। (३४) श्री रामसेवक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के प्राण

श्री सुभाष जी वेदालंकार

श्री सरदारी लाल जी

आपका 'जन ज्ञान' को सदा हार्दिक सहयोग प्राप्त होता रहा है।

—ग्वालियर। (३५) श्री रमेशकुमार—भोपाल। (३६) श्री घनाराम वर्मा—करमदा। (२७) श्री वैदिक सेवाश्रम—बाजेगांव। (३८) रूपभारती जवाई बांध। (३९) श्री मांगीलाल डायाजी—जवाई बांध। (४०) श्री भेरारामटांक—जवाईबांध। (४१) मा० ना० बन्दवार—नीमच। (४२) वृद्धिशंकर शर्मा—नीमच। (४३) श्री विष्णु शर्मा—अभ्युदय नगर। (४४) श्री इन्द्रसिंह सोलंकी। (४५) श्री ईशरकुमार—इन्दौरा। (४६) श्री जयसिंह—इन्दौरा। (४७) श्री विशम्भर सिंह—इन्दौरा। (४८) श्री लक्ष्मीनारायण—बहराइच। (४९) श्री पं० शशिकान्त प्रसाद—छवरही। (५०) श्री चन्द्रमन प्रसाद—सरगुजा। (५१) श्री नरेन्द्र—मैनपुरी।

● सभी का हार्दिक धन्यवाद ! —संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आग्नेय जीवन व्रती

वीर सावरकर

मातृभूमि के पराधीनता पाश को काटकर, उसके मस्तक पर स्वतन्त्रता का मणिमय मुकुट सजाने की तमन्ना को अपने हृदय में बसाकर जिन सहिष्णु जवाँ मर्दों ने असिधारा व्रत ग्रहण कर, कष्ट कंटकों में जीवनयापन करना सहर्ष स्वीकार किया था, उनमें २८ मई, १८८३ को महाराष्ट्र के सुविख्यात नासिक जिले में स्थित एक छोटे से ग्राम भगूर में जन्में वीर विनायक दामोदर सावरकर सदैव ही एक आलोकित नक्षत्र बनकर विद्यमान रहेंगे। यों तो ८३ वर्ष की अवस्था में २६ फरवरी, १९६६ को उनका जीवन-दीप भी उसी दीप पंक्ति में सम्मिलित हो गया, जिसमें इस देश की कालात्मा ने भारत माता की आरती की बलि में अनेक अमरप्राण दीपक संजो रखे हैं, किन्तु इस महान् वीर की नश्वर देह अनश्वर वीरत्व में परिणित होकर युग-युगों की श्रद्धा और पूजा का प्रतीक बन गयी है।

संक्षिप्त जीवन व्रत

वीर सावरकर के स्मारक के साथ ही आर्यावर्त के उन ऋषि मनीषियों के तपःपूत एवं तेजस्वी व्यक्तित्व सहसा ही मानस-पटल पर चित्रित हो उठते हैं, जिन्होंने इस राष्ट्र के शरीर और प्राणात्मा की अपने मानस मन्दिर में भक्तिपूर्वक पूजा की और राष्ट्र की आस्था के मध्य शक्तिस्फूर्त मन्त्र की काया में बद्धमूल किया था।

हुतात्मा संकल्प में ढले स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने १६ वर्ष की अवस्था में ही स्वातन्त्र्य लक्ष्मी के श्री चरणों में सर्वस्व समर्पण की प्रतिज्ञा ग्रहण कर जंगे आजादी का शंखनाद किया था। उन्होंने इस देश में सर्वप्रथम विदेशी वस्त्रों की होली जलाकर गांधीजी के स्वदेशी आन्दोलन से अनेक वर्ष पूर्व ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात किया था।

महर्षि दयानन्द के महान् अनुयायी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा प्रदत्त शिवाजी छात्रवृत्ति प्राप्त कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता के मतवाले स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने १९०६ में इंगलैण्ड अर्थात् ब्रिटिश सिंह की कन्दरा में प्रवेश कर वहीं उससे मोर्चा लेने का शौर्य भी प्रदर्शित किया था। क्योंकि लन्दन के इण्डिया हाउस में बैठकर ही उन्होंने "१८५७ का स्वाधीनता संग्राम" नामक महानतम ग्रन्थ विश्व के स्वातन्त्र्य साहित्य में अनुपम निधि के रूप में प्रदान किया तो उन्होंने लन्दन में शिक्षा पा रहे भारतीय छात्रों के हृदयों में भी स्वतन्त्रता की वह ज्वाला धधकाई थी उन्हीं में से एक श्री मदनलाल धींगरा ने इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट में कर्जन वायली नामक प्रमुख अंग्रेज अधिकारी का वध कर भारत में अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों का प्रतिशोध लिया।

समुद्र संचरण व अंडमान की यम यातनाएं

अन्ततः ब्रिटिश सरकार ने स्वातन्त्र्य लक्ष्मी के अनन्य पुजारी वीर विनायक दामोदर सावरकर को ही भारत में जारी क्रान्तिकारी गतिविधियों का प्रेरणा स्रोत मानकर बंदी बना लिया। उन्हें मोरिया नामक जहाज पर बंदी बनाकर जब भारत लाया जा रहा था तो ८ जुलाई १९१० को वीर सावरकर ने मार्सेलिया बन्दरगाह से इस जहाज से प्रस्थान करते ही सागर की उत्ताल तरंगों में कूदकर एक अनोखा कृत्य सम्पन्न किया। सागर की प्रबल उर्मिमालाओं को तैरकर महाबली हनुमान के समान ही सावरकर फ्रांस के तट पर पहुँचे किन्तु बंदी बना लिए गए।

तदुपरान्त जैक्सन वध षडयन्त्र और ब्रिटिश राज्य का तख्ता पलटने के आरोप में उन्हें ५० वर्ष अर्थात् दो जन्मों के कालापानी का दंड दिया गया। वीर सावरकर ने निरन्तर १३ वर्ष तक अंडमान में अवर्णनीय यम यातनाएँ सहीं, किन्तु उनके मन का महासागर हतप्रभ न हुआ अपितु वहाँ भी उन्होंने हिन्दू संगठन और शुद्धि यज्ञ की ज्वाला को धधकाए रखा। इतना ही नहीं अपितु कालापानी के क्रूर कारागार की काल कोठरियों में इस महाकवि की काव्य प्रतिभा ने "गोमांतक" और "कमला" नामक महाकाव्यों का सर्जन कर एक नवीन चमत्कार प्रदर्शित किया।

१३ वर्ष के उपरान्त अनेक भारतीय देशभक्तों के सद्प्रयासों के फलस्वरूप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
वीर सावरकर अंडमान से भारत लाये गए और पहले उन्हें अलीपुर जेल में एवं तदुपरान्त रत्नागिरी कारागार में रखा गया। रत्नागिरि की अपनी स्थान बद्धता के दिनों में ही वीर सावरकर ने अपने महान ग्रन्थ "हिन्दुत्व" की रचना की। जिसकी प्रशंसा में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा था कि "इस ग्रन्थ को पढ़कर यह आभास होता है कि वीर सावरकर में वेदों की व्याख्या करने वाली कोई आदि ऋषि की आत्मा अवतरित हुई है।" रत्नागिरी से यरवदा जेल में स्थानान्तरित किये जाने के बाद ६ जनवरी १९२४ को वीर सावरकर कारामुक्त तो हो गए किन्तु इसके साथ ही उन्हें रत्नागिरी जिले में ही स्थानबद्ध भी कर दिया गया।

रत्नागिरी का उनका यह जीवन भी एक अनुपम गाथा है। क्योंकि यहाँ भी उन्होंने हिन्दू जाति को प्राणवान और संगठित बनाने की दिशा में हिन्दू महासभा के मंच से सक्रिय योगदान दिया और रोटी बंदी, बेटी बंदी तथा हिन्दू समाज में व्याप्त छुआछूत के विरुद्ध प्रबल अभियान चलाया। उन्हीं के प्रयास से रत्नागिरी में पतित पावन मन्दिर की स्थापना की गई जिसमें कथित अछूतों को कथाकार बनाया गया।

सक्रिय राजनीति में

अन्ततः बैरिस्टर जमनालाल मेहता आदि के प्रयास से वीर सावरकर पर लगे प्रतिबन्ध समाप्त हुए और १० मई की ऐतिहासिक तिथि को (जिस तिथि को १८५७ ई० में स्वातन्त्र्य संग्राम का श्रीगणेश हुआ था) वीर सावरकर १९३७ ई० में नजरबन्दी से बिना शर्त रिहा किये गए।

स्थानबद्धता से मुक्त होते ही वीर सावरकर सक्रिय राजनीति में कूद पड़े। उसकी रिहाई पर पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री एम. एन. राय एवं चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की तो देश-गौरव सुभाषचन्द्र बोस ने उन्हें कांग्रेस में शामिल होने का निमन्त्रण दिया। किन्तु मिश्रित संस्कृति और प्रादेशिक राष्ट्रीयता को देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण मानने वाले वीर सावरकर ने भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द एवं पं. मदनमोहन मालवीय आदि द्वारा संस्थापित और संवर्धित हिन्दू महासभा को ही अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया और कर्णावली (अहमदाबाद) से अमृतसर के अधिवेशन तक सात बार उन्होंने हिन्दू महासभा के वार्षिक अधिवेशनों पर अध्यक्ष पद को विभूषित किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनेक चेतावनियाँ जो सत्य सिद्ध हुयीं

हिन्दू महासभा अध्यक्ष के रूप में आपने राजनीति के हिन्दूकरण, हिन्दुओं के सैनिकीकरण और राष्ट्र के औद्योगीकरण को ही राष्ट्र की दुरवस्थाओं से मुक्ति का एकमात्र मार्ग निरूपित किया। असम की नागा समस्या के भावी रूप के सम्बन्ध में आपने १९४० में चेतावनी दी तो कशमीर के भविष्य के सम्बन्ध में १९४१ में ही आपने भावी आशंका व्यक्त कर दी। इतना ही नहीं आपने १९४२ में ही यह आशंका भी व्यक्त कर दी थी कि यदि देश-वासियों ने कांग्रेस का ही पल्ला पकड़े रखा तो मातृभूमि के दुखद विभाजन का दृश्य भी उपस्थित हो सकता है।

२२ जून, १९४० को बम्बई में आपके निवासस्थान पर जब नेताजी सुभाष आपसे भेंट करने आए थे तभी आपने उन्हें देश की स्वतन्त्रता हेतु सैनिकीकरण का मार्ग अपनाने का सद्परामर्श दिया था और आपके ही परामर्श का यह परिणाम हुआ कि नेताजी ने विदेश गमन कर जापान हिन्दू महासभा के अध्यक्ष एवं वीर सावरकर के परम सहयोगी श्री रासविहारी बोस द्वारा संस्थापित आजाद हिन्द सेना की कमान संभाली।

एक प्रसन्नता : एक वेदना

अन्ततः शान्ति और क्रान्ति दोनों ही मार्गों का अवलम्बन कर मातृभूमि की सेवा करने वाले अगणित-ज्ञात और अज्ञात हुतात्माओं तथा राष्ट्रभक्ति का त्याग और बलिदान रंग लाया और १५ अगस्त, १९४७ को मातृभूमि स्वतन्त्र हो गई। किन्तु स्वतन्त्रता की प्राप्ति के ही क्षणों में आनन्द अश्रुओं के प्रवाह के साथ ही साथ वीर सावरकर का हृदय खंडित भारत माता को देखकर रुदन भी कर उठा। हिन्दू महासभा और वीर सावरकर की उपेक्षा का परिणाम राष्ट्र के समक्ष आया। वीर सावरकर का भी हृदय भर आया और उसी अवस्था में गूँज उठी उनकी यह वाणी :—

"माँ सुरसेविनी सिन्धु ! हम तुझे नहीं भूल सकते। तेरे ही तट पर हमारे प्राचीन ऋषियों ने वेदों की ऋचाओं का गायन किया था।... माँ तुझे हम नहीं भूल सकते। सारा हिन्दुस्थान भी सो जाए तब भी अकेला महाराष्ट्र ही तुझे विमुक्त कराएगा।"

स्वतन्त्र भारत में भी बंदी

३० जनवरी, १९४८ को महात्मा गांधी की हत्या के उपरान्त वीर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सावरकर भी बंदी बना लिए गए। उन पर भी गांधी हत्याकांड षड़यन्त्र का अभियोग चला, किन्तु अन्ततः भारत के न्याय देवता की प्रभा प्रदीप्त हुई और वीर सावरकर निर्दोष मुक्त कर दिये गए।

तदुपरान्त १९४९ के दिसम्बर मास में वीर सावरकर ने कलकत्ता से हिन्दू महासभा के अधिवेशन का उद्घाटन किया और स्वतन्त्र भारत में भी एक राजनैतिक दल के रूप में हिन्दू महासभा को बनाए रखने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

१९५० ई० में जंग में हिन्दुओं पर अत्याचारों का प्रबल अन्धड़ टूट पड़ा। उस समय भारत और पाकिस्तान के मध्य नेहरू लियाकत ऐक्ट सम्पन्न हुआ तो वीर सावरकर पुनः स्वतन्त्र भारत में पुनः ४ अप्रैल १९५० को बंदी बनाए गये और कुछ समय उपरान्त उन्हें मुक्त किया गया।

युद्ध भी : बुद्ध भी

वीर सावरकर १९५६ में हिन्दू समाज के जोधपुर अधिवेशन का उद्घाटन करने भी गये और १९५७ में १० मई को आप स्वतन्त्र भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित १८५७ के स्वाधीनता संग्राम के शताब्दी सामारोह में भाग लेने आए।

इस अवसर पर रामलीला मैदान की विशाल जनसभा में उपस्थित लाखों लोगों को सम्बोधित करते हुए आपनी चेतावनी दी थी कि देश के सामने दो ही मार्ग है, युद्ध भी बुद्ध भी। हमारा राष्ट्र यदि महात्मा बुद्ध की पूजा कराना चाहता है तो उसे युद्ध की भी सिद्धता रखनी होगी। आपने भारतीय युवकों को सशस्त्र सेनाओं में भर्ती होने का भी आवाहन किया तो सरकार को यह परामर्श भी किया कि वह आधुनिकतम अणु आयुधों का निर्माण करे।

१९६० में सम्पूर्ण देश में दिसम्बर मास में वीर सावरकर मृत्युजंय दिवस मनाया गया। इसी संबन्ध में पूना में आयोजित एक विशाल सभा में भाषण करते हुए आपने राष्ट्र का सैन्य वेल बढ़ाने और चीन तथा पाकिस्तान के संभावित आक्रमणों के प्रति सतर्क रहने की चेतावनी दी।

अन्तिम दिन

बाद की घटनाओं ने आपकी इस चेतावनी को सर्वत्र सत्य सिद्ध कर दिखाया। धीरे-धीरे स्वातन्त्र्य वीर सावरकर का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा रहा था। उस समय (१९६५ ई०) दैनिक 'वीर अर्जुन' के प्रताप व प्रधान सम्पादक श्री के० नरेन्द्र ने वीर सावरकर सम्मान कोश की स्थापना कर ५१ हजार रुपए की धनराशि स्वातन्त्र्य वीर सावरकर को बम्बई में उनके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निवासस्थान पर जाकर समर्पित की।

१९६५ में हुए भारत और पाकिस्तान युद्ध के समय सब भारतीय सीमाओं ने लाहौर के दरवाजे पर दस्तक दी थी तो रोग शैया पर पड़े स्वातन्त्र्य वीर सावरकर हर्षोत्फुल्ल हो उठे थे।

किन्तु शस्त्रों से सन्धिकी भाषा शुरू होते ही एक दिन वीर सावरकर ने अपने दर्शनार्थ आए कुछ लोगों के समक्ष ही कहा "शूर जवानों ने जो प्राप्त किया उसे ये नेता कहीं गंवा तो नहीं बैठेंगे। अन्ततः ताशकन्द में वार्ता शुरू होते ही उनका मन उदासीनता से भर गया और वीर सावरकर ने आत्मार्पण का संकल्प ग्रहण कर लिया!

और २६ जनवरी, ६६ के बाद वीर सावरकर का स्वास्थ्य धीरे-धीरे क्षीण होने लगा। किन्तु उन्होंने औषधि ग्रहण करना भी त्याग दिया। ३ फरवरी के उपरान्त तो उन्होंने चाय पीनी भी छोड़दी थी।

अन्ततः २६ फरवरी, ६६ को ११ बजे के बाद वे अपनी नश्वर काया का त्याग कर, धरती के घरौंदे को छोड़ आकाश की निःसीमिता में व्याप्त हो गये। अन्ततः वायु को सुयश-सौरभ का दान देकर फूल अपनी टहनी से झड़ गया।

अजेय वीर के समान वे जिये और अजेय वीर के समान ही स्वेच्छयी मृत्यु का वरण करने वाले स्वातन्त्र्य वीर सावरकर की स्मृति में गत वर्ष २८ मई को भारत सरकार ने भी डाक टिकिट जारी कर उस महान स्वातन्त्र्य सेनानी के प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये।

वस्तुतः स्वातन्त्र्य वीर राष्ट्र की भक्ति उनकी अपनी निजी राष्ट्र कल्पना से प्रेरित थी। अंग्रेजों ने अपनी विभाजित और शासन की नीति से देश को जिस समय विभाजित किया था, उस वीर सावरकर ने राष्ट्र का निर्धारित व्यक्तित्व स्वीकार न कर एक अखण्ड भारत राष्ट्र के सनातन अस्तित्व को ही सर्वोपरि महत्व दिया था। मृत्यु-पर्यन्त उनका यही अक्षुण्ण विश्वास रहा कि देश में आज जो भी विभक्तियाँ प्रचारित हैं, वे कृत्रिम हैं एवम् देश को विघटित करने हेतु ऊपर से छोड़ी गई हैं। आंतराल में देश की अविभक्त संस्कृति का मूल स्तुतः एक ही है। राष्ट्र के इसी राजनीतिक व्यक्तित्व को अपनी श्रद्धा से भर कर उन्होंने देश भक्ति के जो सिद्धान्त निर्धारित किए और उन पर वह आजीवन सिंह शार्दूल की तरह निःशंक निर्भय आचरण करते रहे। हम उनकी राह पर चलें यही समय की मांग है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आओ, अब कुछ करें—

भाषण बहुत दे चुके हैं हम,
योजनाएं भी बहुत हो गयीं,
राज्य स्थापना के नारे भी लगा लिए,
जनता को खूब बहका लिया है—

पर बात कुछ बनी नहीं—
ऋषि दयानन्द का काम अभी अधूरा है
सुन सको तो मनकी बात सुनो,
सारे काम छोड़ बस ऋषि का काम करो।

वेद की बातें धरती पर फैलाओ,
ऋषि जीवन का प्रकाश सबको दिखाओ,
दुनियाँ को बताओ तो सही कि—
मेरा गुरू क्या चाहता था!

'आर्य समाज, दयानन्द का आर्य समाज बने,
हम सब ऋषि की बात हृदय में सुनें,
आगे बढ़ें, दयानन्द की विजय के लिए,
जो कुछ भी करें बस उसी के लिए,

जीवन की हर साँस में दयानन्द स्वर उभरें,
प्राणों का लक्ष्य, ऋषि का प्रचार हो,
बहुत भटक गए हैं, राह भी भूल गयी,
जो हुआ सो हुआ, अब तो जाग कर,
आओ भाई! दयानन्द का काम करें

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामने का पृष्ठ : भाई जी और सावरकर

देवता स्वरूप भाई परमानन्द

देवतास्वरूप भाई परमानन्द के स्मरण के साथ ही साथ आर्यावर्त के उन ऋषि-मनीषियों के तेजस्वी एवं तपःपूत व्यक्तित्व सहसा ही मानस-पटल पर चित्रित हो उठते हैं, जिन्होंने इस राष्ट्र के शरीर और प्राणात्मा को अपने मानस मन्दिर में श्रद्धा और भक्ति-सहित पूजा था।

महर्षि दयानन्द ने सत्य-ज्ञान और स्वातन्त्र्यवंदना की जो पावन ज्योति जगाई थी, उसी दीपशिखा को, अपने देह को दीपक और प्राणों की वर्तिकाएँ बनाकर जो वरेण्य महापुरुष मातृमन्दिर के प्राँगण में प्रकाश बिखेरने के लिए समर्पित हुए हैं, उनमें भाई जी का नाम सदैव अग्रिम पंक्ति में अंकित रहेगा।

१८७५ ई० में करियाला (जि० झेलम) में भाई ताराचन्द के कुलदीपक के रूप में जन्मा यह महापुरुष बाल्यकाल से लेकर अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक विपरीत स्थितियों से जूझता रहा, किन्तु इसके मन का वज्र संकल्प अपने शौर्याग्रह में अटल और अविचल रहा।

१९०३ में एम० ए० करने के बाद भाई परमानन्द ने ब्रिटिश राज्य सत्ता की दासता स्वीकार कर अपने ऐहिक जीवन में सुख और सुविधाओं की सरिता बहाने के स्थान पर दयानन्द कालेज में केवल ७५ रुपये मासिक पर अध्यापन करने को वरीयता दी तो १९०६ में वैदिक ज्ञान का नाद गुँजाने के लिए पूर्वी अफ्रीकी देशों का भ्रमण करने में लिप्त रहे। १९०७ में उन्होंने इंगलैंड में उच्च शिक्षा प्राप्ति की दृष्टि से प्रस्थान किया तो वहाँ भी भारत के भविष्य की चिन्ता ही उन्हें तड़फाती रही।

इस दूरदर्शी मनीषी ने उन्हीं दिनों अपना यह सुस्पष्ट मत व्यक्त कर दिया था कि भारत को यदि भारत के रूप में विश्व के मानचित्र पर विद्यमान रहना है तो अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम कदापि न रहने देना चाहिए। इंगलैण्ड से भारत लौटने पर उन्होंने हिन्दुस्थान में विशुद्ध राष्ट्रीयता का प्रचार करने हेतु देश के एक से दूसरे छोर तक का भ्रमण कर हिन्दुत्व और वैदिक धर्म की महत्ता का यशोगान किया।

राष्ट्र के सुप्त गौरव को जगाने का उनका यह प्रयास विदेशी राज्यसत्ता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की आँखों में शूल की तरह खटकता था। वह येन केन प्रकारेण इन्हें बंदी बनाने को आतुर थी। अतः १९१५ में लाहौर षडयन्त्र अभियोग के सिलसिले में भाई परमानन्द जी भी बंदी बना लिये गए। मातृभूमि की स्वतन्त्रता हेतु प्रयास करने के पावन अपराध में स्वातन्त्र्य लक्ष्मी के महान् पुजारी भाई परमानन्द को फांसी की सजा सुनाई गई किन्तु ट्रिब्यूनल के भारतीय जज ने कालापानी की सिफारिश कर दी। भाई परमानन्द कालापानी की काल कोठरियों में कई वर्ष तक यमयातनाएँ सहन करते रहे और अन्त में देश-भक्त श्री ऐन्ड्रूज के सद्प्रयत्नों से मुक्त हुए।

भारत वापस लौटकर आपने गांधीजी से मिलकर पंजाब-राष्ट्रीय विद्या-पीठ की स्थापना की। किन्तु इस विद्यापीठ में भी आपने राष्ट्र की युवा पीढ़ी को स्वातन्त्र्य आन्दोलन में सक्रिय होने की प्रेरणा दी और यहीं सरदार भगतसिंह सरीखे सरफरोश नौजवान आपके सम्पर्क में आकर स्वातन्त्र्य लक्ष्मी के दीवाने बने।

बाद में साम्प्रदायिक समस्या पर आपका कांग्रेस से तीव्र मतभेद हो गया और आपने हिन्दू महासभा को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। भाई जी का सुस्पष्ट मत था कि जब तक हिन्दू संगठित और सशक्त न होगा तब तक भारत का उत्थान असंभव है। भारत विभाजन के अनेक वर्ष पूर्व ही आपने जनता को यह चेतावनी दे दी थी कि कांग्रेस तुष्टीकरण के जिस मार्ग पर चल पड़ी है, उससे भारत का विभाजन हुए बिना न रहेगा।

१९४७ में जब भारत भूमि का क्रूर विभाजन हुआ तो यह महापुरुष इस दृश्य को न देख पाया और ८ दिसम्बर, '४७ को उन्होंने अपनी नश्वर देह का परित्याग कर दिया। प्राण त्यागने से कुछ ही दिन पूर्व उन्होंने कहा था :—

"जिन हिन्दुओं के लिए मैंने जीवन भर काम किया, जिनके हितों की रक्षार्थ में आजन्म संघर्ष करता रहा, जिन्हें भ्रम-मूलक राजनीति और गलत नेताओं के पंजे से निकालने के लिए बार-बार चेतावनी देता रहा, हाय! यश-अपयश, मान-अपमान की परवाह किए बिना मैं जिन्हें निरन्तर सावधान करता रहा, किन्तु दुर्भाग्यवश जिन्होंने अपने पराए की पहचान न की, मित्र और शत्रु में भेद न किया · हा! अपनी भ्रान्त धारणाओं के कारण जब हिन्दू ही लुट-पिट और मर रहे हैं, तब इस स्थिति में मैं अब जीदित रहकर क्या करूँगा।"

बनारसी सिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सुधारानी

"पांच रत्न"

एक देश में एक सेठ रहा करता था। वह राजा का विश्वासपात्र मित्र था साथ ही राज्यकोष्ठी भी। एक बार वह सेठ विदेश में व्यापार करने के लिये सोचने लगा। उसने अपनी सम्पत्ति को बेच दिया और पांच बहुमूल्य रत्न खरीदे। उन बहुमूल्य रत्नों को राजमन्त्री श्रीभूति को गिरवी के रूप में सौंप कर विदेश चला गया। विदेश में धन कमाया और सात वर्ष बाद अपने राज्य में आने की ठानी। सात वर्ष में तो दुनिया बदल जाती है। दुर्भाग्य से सम्पत्ति समुद्र में लूट ली गई और बेचारा किसी तरह डाकुओं के फन्दे से बच निकला। वह बिल्कुल निस्सहाय था। उसकी दशा अब किसी भिखारी से कम न थी।

उस दुर्भाग्यशाली ने राज्य में पहुँचकर राज्यमन्त्री श्रीभूति को बताया कि वह उसका मित्र किसी समय राज्य कोष्ठी था और अब वह अपने गिरवी के रूप में रखे हुए पांच रत्न वापिस लेने आया है। बस फिर क्या था उसकी इस दशा को देखकर श्रीभूति को अच्छा अवसर मिला भद्रमित्र को ठगने का! उसने भद्रमित्र को न केवल झूठा ही, वरन् पागल सिद्ध कर दिया। अब तो बेचारे का कोई गवाह भी न था।

"श्रीभूति ने मेरे पांच रत्न ले लिए हैं और वह उन्हें बार-बार मांगने पर भी नहीं देता" जब देखो, तब भद्रमित्र के मुख से यही निकलता। चाहे दिन हो या रात, संध्या हो या ऊषा, नगर हो या जंगल भद्रमित्र के मुख से यही निकलता। परन्तु सभी लोग उसे भिखारी समझ कर पागल कह देते।

एक दिन राजा जब मन्त्री श्रीभूति और अन्य सभासदों से किसी विषय पर विचार विनिमय कर रहे थे तब प्रतिहारों के आदेश की अवहेलना कर आँधी सा भद्रमित्र राजसभा में आ पहुंचा। और बोला "महाराज! श्रीभूति ने मेरे पांच रत्न ले लिए हैं और वह बार-बार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रार्थना करने पर भी उन्हें वापिस नहीं लौटाता। इसलिए आपसे प्राथना है कि आप मेरे पांच रत्न दिलवा दें।" तुरन्त ही राजा ने श्रीभूति से पूछा तो उत्तर में वह बोला, "महाराज मेरे पास तो इसके पांच क्या एक रत्न भी नहीं है। जब रत्न इसने मुझे दिए ही नहीं तो मैं इसे दूं कहां से ? तथा अपनी बातों को बढ़ाते हुए कहा—"जब से एक नौका-दुर्घटना में इसकी अपार धन राशि नष्ट हुई है तब से यह मेरे पास अपने पांच रत्न रखे होने की झूठी बात पागलों जैसे कहने लगा है और कोई खास बात नहीं।"

फिर भी नरेश ने कुछ जानकारी के लिये भद्रमित्र से पूछा—"जब तुमने श्रीभूति को पांच रत्न सौंपे थे तो रसीद ली थी क्या ?" परन्तु जब भद्रमित्र ने रसीद के लिए इन्कार कर दिया तो नरेश विवश होकर बोले, "जब तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं तो मैं कैसे मान लूं कि जो कुछ तुम कहते हो वह सत्य है और जो श्रीभूति, राजमन्त्री कहता है, वह झूठ है ? मुझे तुमसे सहानुभूति तो थी परन्तु बिना आधार पाए मैं कर ही क्या सकता हूँ सो तुम जाओ और मुझे अपना काम कर लेने दो।"

भद्रमित्र ने यह सब सुनकर भी नहीं सुना और वह आगा-पीछा भूलकर बोला—"श्रीभूति ! मैंने तुझे ब्राह्मण और मन्त्री के गुणों वाला जानकर ही अपने बहुमूल्य पांच रत्न सौंपे थे पर आज तू इस आर्थिक दशा में अन्यायी और स्वार्थी बनकर मेरे पांच रत्न लूट रहा है। महाराज की उदारता और धर्म के प्रसाद से तेरे घर में किसी बात की कमी नहीं है। मेरे पांचों रत्न लौटा दे। नरेश के न्यायालय में हार जाने पर भी मैं हृदय के न्यायालय में हारने वाला नहीं हूँ।'

यह कह कर भद्रमित्र तो चला गया परन्तु राजा को चिन्तित कर गया। सभी के कानों में बड़ी देर तक भद्रमित्र के शब्द गूंजते रहे—"नरेश के न्यायालय में हार जाने पर भी मैं हृदय के न्यायालय में हारने वाला नहीं हूँ।"

लगभग आधी से भी अधिक रात बीत चुकी थी। सभी सो रहे थे और भद्रमित्र चिल्ला रहा था, 'श्रीभूति पांच रत्न ले लिये हैं वह उन्हें देता नहीं है। राजा से दिलवाने को कहा परन्तु उसने भी बहाना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनाकर टाल दिया।"

भद्रमित्र के इन वाक्यों को जब रानी ने एक से अधिक बार सुना तो वह चिन्तित हो उठी। अनायास ही कहने वाले को देखने के लिए व्यग्र हो उठी। खिड़की खोलकर चन्द्रमा के विमल प्रकाश में रानी ने उस व्यक्ति को देखा जो रह-रह कर चिल्ला रहा था। रानी ने सोचा, "राजा तो प्रजा धर्म का पिता होता है धर्म और पिता पुत्र को दुःखी नहीं देख सकते। मैं इसकी धर्म की मां हूँ तथा इसके दुःखों को दूर करूँगी।"

जब रानी ने इस सम्बन्ध में राजा से पूछा तो उन्होंने कहा कि यह पागल है। परन्तु रानी ने बड़ी चतुराई से राजा से मामले की छानबीन करने की अनुमति मांगी। अगले दिन ही रानी ने राजमन्त्री को महल में बुलाया और उससे द्यूति-क्रीड़ा के लिए आग्रह किया। श्रीभूति ने सोचा कि ऐसा अवसर फिर हाथ नहीं आयेगा। और वह मान गया। बस फ़िर क्या था? खेल ही खेल में रानी ने सब कुछ जीत लिया। यहाँ तक कि ससुराल से मिली अंगूठी भी। रानी ने एक दासी को वह अंगूठी देकर मन्त्री के घर भेजा और भद्रमित्र के पांचों रत्न मंगवा लिये और राजा को सौंप दिए।

अगले दिन सभा हुई। भद्रमित्र ने ५०० रत्नों में से अपने पांच रत्न छांट लिए। बस फिर क्या था, सारा दरबार हर्षित हो उठा। तथा राजा ने श्रीभूति को देश निकाला दे दिया। साथ ही भद्रमित्र को उसकी सफलता पर बधाई दी और मन्त्री के पद पर सुशोभित किया।

सभी ने कहा, "मन्त्री भद्रमित्र जिन्दाबाद—आशीर्वाद !"

ब्राह्मण श्रीभूति—"मुर्दाबाद···मुँह न दिखा"

जब भद्रमित्र की दृष्टि हाथ के पांच रत्नों पर पड़ी तब उसे लगा जैसे वो एक-एक करके उससे और संसार से कह रहे हों—

१. "सदा सत्य बोलो।"

२. "दुःख में धैर्य रखो।"

३. "जुआ मत खेलो।"

४. "सम्मान पाकर भी विवेक न खोओ।"

५. "मानव-जीवन विश्व में अद्वितीय रत्न है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञान-वार्ता

दिमागका वजन

भौतिक शास्त्र और शरीर विज्ञानमें जिस तत्त्व को दिमाग या 'ब्रेन' कहते हैं, वह भूरे रंग का एक पदार्थ होता है, जो हमारी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से में हड्डियों के मजबूत घेरे में चारों ओर से सुरक्षित करके रखा होता है। आम तौर पर एक औसत आदमीमें इसका वजन लगभग तीन पौण्ड या सवा किलोग्राम से कुछ अधिक होता है।

पुरुषके दिमाग से स्त्रीका दिमाग ज्यादा वजनदार होता है। लेकिन इस वजनका कम-ज्यादा होना कम बुद्धिमान् और ज्यादा बुद्धिमान् होना सिद्ध नहीं करता। कई बार जड़मूर्ख व्यक्तिके भी दिमागका वजन काफी ज्यादा हुआ करता है।

सौरमंडलमें कितने चाँद?

सूर्यके चारों ओर जो पृथ्वी, मंगल आदि ग्रह चक्कर लगाते हैं, इन सबको मिलाकर सौरमंडल कहते हैं। इन ग्रहोंके चारों ओर भी कई उपग्रह चक्कर काटा करते हैं जिनको चांद या चन्द्रमा कहते हैं।

पूरे सौरमंडलमें ३१ चंद्रमा हैं—कमसे कम हमारी जानकारी में इतने तो हैं ही। बृहस्पति (ज्यूपीटर) सौरमंडलका सबसे बड़ा ग्रह है। इसके चारों ओर १२ चंद्रमा चक्कर काटते हैं, इनमें से एक उल्टी दिशा में घूमता है—अर्थात् यदि बाकी सब चंद्रमा उत्तरसे दक्षिणकी ओर घूमते हैं तो यह दक्षिण से उत्तर की ओर चक्कर काटता है।

शनि नामक ग्रहके साथ भी ९ चंद्रमा हैं। इनमें से एक 'टाइटन' (सबसे बड़ा) चंद्रमा है। सौरमंडलमें यह अकेला चंद्रमा है, जिसका अपना वायुमंडल है।

'यूरेनस' नामक ग्रहके चारों ओर ५ चंद्रमा चक्कर लगाते हैं। वरुण और मंगलके पास दो दो उपग्रह अर्थात् चंद्रमा हैं। बुध, शुक्र और यमके पास कोई चंद्रमा नहीं है।

इस प्रकार ये ३० चंद्रमा हो गये। ३१ वां चंद्रमा हमारी अपनी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करता है—वही जिस पर उतरने का प्रयास अमरीका और रूस के वैज्ञानिक कर रहे हैं और उसके धरातल के चित्र उतारने में सफल हो गये हैं।

—कौशल्यादेवी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जन-ज्ञान" मासिक के नियम

१. "जन-ज्ञान" मासिक पत्रिका है। इसका उद्देश्य—(अ) महर्षि दयानन्द के लक्ष्य को पूर्ण करना, (ब) संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक वेद का पावन संदेश पहुँचाना और (स) अज्ञान, पाखण्ड की समाप्ति के लिए प्रत्येक सम्भव पग उठाना है।

२. "जन-ज्ञान" में व्यक्तिगत राग-द्वेष और पार्टीबाजी के लेख व सूचनायें किसी भी स्थिति में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

३. वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध विज्ञापनों का प्रकाशन भी किसी स्थिति में नहीं होगा।

४. "जन-ज्ञान" का वार्षिक शुल्क दस रुपया, एक प्रति एक रु० है। सदस्यों को विशेषांक वार्षिक मूल्य में ही दिये जायेंगे।

५. प्रत्येक माह की दो-तीन तारीख को 'जन-ज्ञान' भेज दिया जाता है। यदि दस तक भी न मिले तो समझिए कि आपका 'जन-ज्ञान' कोई और पढ़ रहा है। दस तारीख तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो अपने पोस्ट आफिस को पत्र लिखें और उसकी एक प्रति हमें भी भेजें। पत्र प्राप्त होने पर 'जन-ज्ञान' दुबारा बिना टिकट लगाये बैरंग भेजा जाएगा।

६. विशेषांक सुरक्षित मगाने के लिए १ रुपये के टिकट पन्द्रह दिन पूर्व आने चाहिए। विशेषांक किसी भी स्थिति में दुबारा न भेजे जायेंगे।

७. किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

८. समस्त चैक, मनीआर्डर आदि "**जन-ज्ञान प्रकाशन**" के नाम भेजें।

९. नए सदस्य धन भेजते समय '**नया सदस्य**' शब्द अवश्य लिखें और मनीआर्डर कूपन पर पूरा पता अवश्य लिखें।

१०. "जन-ज्ञान के सदस्यों को 'जन-ज्ञान प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य पौने मूल्य में दिया जायेगा।

प्रबन्धक

जन-ज्ञान-प्रकाशन

१५९७, हरध्यानसिंह रोड, करोल बाग,
नई दिल्ली-५

फोन : ५६६६३९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपूर्व-वैदिक साहित्य

1 Light Of Truth : अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द के महान् ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का मास्टर दुर्गा-प्रसाद कृत यह अनुवाद प्रत्येक दृष्टि से अनुपम है। छपाई, काग़ज जिल्द सभी दृष्टि से अत्यन्त आकर्षक यह ग्रंथ लागतमात्र पर दिया जा रहा है।=पृष्ट ५७८। साइज $\frac{१८\times२२}{८}$ मूल्य १०)। कपड़े की जिल्द १२)।

2 Life and Teachings of Swami Dayanand

Rs. 10.00

—महर्षि का अंग्रेजी जीवन चरित्र—

बावा छज्जुसिंह द्वारा लिखित यह अनमोल ग्रंथ महर्षि के जीवन पर अनुपम प्रकाश डालता है। स्व० पं० लेखराम द्वारा संग्रहीत सामग्री के आधार पर तैयार यह जीवन अपने ढंग का अनुपम है। इस में देश विदेश के नेताओं द्वारा दी श्रद्धांजलियां महर्षि के जीवन की प्रमुख घटनाएँ : प्रमुख शास्त्रार्थ और ३४ पृष्ठ आर्ट पेपर चित्र १६ रंगीन चित्र आकर्षक पूरी कपड़े की जिल्द अपने ढंग की आप ही है। भट के लिए सर्वोत्तम पृष्ठ ४२२। साइज़ $\frac{१८\times२२}{८}$ मूल्य १०) मात्र।

3: TEACHINGS OF SWAMI DAYANAND मूल्य ७५ पैसे

महर्षि दयानन्द की विचार धारा और शिक्षाओं से सभी को परिचित कराने के लिए अनुपम पुस्तक।

आषाढ़ संवत् २०२८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

4. TEN COMMANDMENTS **Rs. 1.00**

आर्य समाज के १० नियमों की अभूतपूर्व व्याख्या : स्व० पं० चमूपति जी की लेखनी से। मूल्य १)

5. Message of the Arya Samaj to the Universe

भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार लिखित—आर्य समाज का संदेश फैलाने हेतु प्रभावशाली पुस्तिका—जिसका ८ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। मूल्य ३० पैसे : २५) सैकड़ा

6. VEDIC-PRAYER

संध्या, प्रार्थना मंत्र, हवन, स्वस्तिवाचन, शांतिप्रकरण ईशोपनिषद् आदि सभी की पूर्ण व्याख्या हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ और चुने हुए भजन—भेंट के लिए अत्युत्तम मूल्य २) ५०

7. DAYANAND THE GREAT (दूसरा नया संस्करण)

पं० वेद मित्र ठाकुर लिखित प्रभावशाली ट्रैक्ट मूल्य १५ पैसे

8 An Introduction to the Arya Samaj (दूसरा नया संस्करण)

आर्य समाज से सभी को परिचित कराने के लिए प्रभाव शाली ट्रैक्ट मूल्य १५ पैसे १०) सैकड़ा

9 The Great Gaytri

मूल्य २० पैसे १५) सैकड़ा

गायत्री मंत्र का यह सुन्दर अंग्रेजी अनुवाद प्रत्येक दृष्टि से आकर्षक है। ७५) रिम के सर्वश्रेष्ठ कागज पर रंगीन मोहक छपायी

१०. वैदिक सत्संग पद्धति (हिंदी) नया संस्करण

मूल्य ६० पैसे ५०) सैकड़ा

केवल हिन्दी में इसमें प्रत्येक मंत्र के साथ उसका अर्थ दिया गया है। २८ पौंड बढ़िया कागज, तिरंगा बढ़िया आवरण, महर्षि का तिरंगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
चित्र । चुने हुए भजन । ८४ पृष्ठ । मूल्य ६० पैसे । ५० सैकड़ा ।

११. वैदिक गीता (भाष्य) सजिल्द २.५०

महान् विद्वान् स्व० आत्मानन्द जी का यह गीता भाष्य प्रचार की दृष्टि से अनुपम है । कर्म और प्रेरणा के अद्भुत संगम इस भाष्य की अपनी विशेषता है। योगेश्वर कृष्ण का तिरंगा चित्र और उनका वीर वेश देखकर आप मुग्ध हो जायेंगे ।

१२. योगेश्वर कृष्ण मूल्य ४० पैसे ३०) सै०

३ **योगेश्वर कृष्ण** --भगवान् कृष्ण का यह जीवन चरित्र लाखों व्यक्तियों तक पहुँचाना चाहिए । ब्र. जगदीश विद्यार्थी एम. ए. लिखित

१३. क्रांतिकारी दयानन्द मूल्य ७५ पै०

युग प्रवर्तक दयानन्द के क्रांतिकारी स्वरूप से सभी को परिचित कराने हेतु पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है । प्रोफेसर मंतराम एम०एससी० लिखित ।

१४. यज्ञ–प्रसाद मूल्य ४० पैसे

महात्मा आनन्द स्वामी कृत मूल्य ४० पैसे । ३० रु० सैकड़ा । आप यज्ञ करते होंगे तो यज्ञ के बाद प्रसाद भी बाँटते ही होंगे । यह रचना महात्मा जी का प्रेरक प्रसाद है । इसे मंगाइये और यज्ञ भावना फैलाने हेतु वितरण कीजिए ।

१५. गीत-मंजरी ८० पैसे

ईश्वर भक्ति के गीत और प्रभु से प्रार्थना करते हुए यदि आप सचमुच अपने आप को भुलाना चाहते हैं तो 'गीत-मंजरी" का सहारा लीजिए ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१६. ज्ञान-प्रकाश

—हरिशरण सिद्धांतालकार
—दीनानाथ सिद्धांतालंकार मूल्य १)५० पैसे

आर्य समाज के २ विद्वानों की लेखनी से सत्यार्थ प्रकाश का सार जिस आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है वह प्रचार के लिए अनुपम है। सत्यार्थ प्रकाश के गूढ़ रहस्यों तक पहुँचने के लिए ज्ञान-प्रकाश पढ़िए और प्रसारित कीजिए।

१७. वेद-ज्योति

४०० मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह, मूल्य ३)।

१८. प्रार्थना मंत्र व्याख्या मूल्य ४० पैसे

हरिशरण जी सिद्धांतालंकार लिखित प्रार्थना मन्त्रों की अनुपम व्याख्या।

१९. भारत की अवनति के ७ कारण

ब्र० जगदीश एम० ए० की लोह लेखनी द्वारा लिखित। पृष्ठ ६८। मूल्य ४० पैसे। ३५) सैकड़ा।

३०. वैदिक-अध्यात्म-ज्योति मूल्य २)

स्वं० स्वामी अनुभवानन्द जी महाराज द्वारा वेद के ४०८ मंत्रों का मुग्ध करने वाला अध्यात्म परक भाष्य आप के मन मंदिर में नयी ज्योति प्रदान करेगा आकर्षक आवरण बढ़िया कागज।

२१. योग-जीवन मूल्य २)

योग का हमारे जीवन में जो महत्वपूर्ण स्थान है उस का हृदय ग्राही वर्णन ग्रंथ की अपनी विशेषता है। आसन प्राणायाम, यम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
और नियम का महत्व हृदय पटल पर अंकित करने में सूक्ष्म ग्रंथ प्रत्येक दृष्टि से उपादेय है।

२२ नीति–दोहावली मूल्य ८० पैसे

प्रत्येक आवश्यक विषय पर उपयोगी दोहे–कविताएं और प्रमाण जीवन के प्रत्येक संदर्भ में प्रेरक मार्ग दर्शन आचार्य जगदीश विद्यार्थी द्वारा संग्रहीत

२३ ज्ञान–ज्योति मूल्य ३)

'ज्ञान' मनुष्य को मनुष्य बनाता है। वह ज्ञान वेद की पवित्र ऋचाओं में हमारा मार्ग दर्शन कर रहा है। जीवन के प्रत्येक अंग पर वेद का आदेश स्व० स्वामी सत्यानन्द जी की लेखनी से। उनका माधुर्य वेद की ऋचाओं का हृदय ग्राही स्वरूप प्रस्तुत कर रहा है। १०१ गायत्री मंत्रों सहित—

२४ मां–गायत्री १)

१०१ गायत्री मंत्रों का पाठ आपके मस्तिष्क को भी, बुद्धि बल देगा। स्वाध्याय के लिए अनुपम।

२५ वैदिक–सिद्धान्त २)

वैदिक सिद्धान्त अकाट्य है। यह स्वयं सिद्ध बात ग्रंथ पढ़ कर हृदयंगम हो जाती है। आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान श्रद्धेय पं० यशःपाल सिद्धांन्तालंकार की विद्वत्ता प्रतिभा का चमत्कार देख आप मुग्ध हो जाएंगे। प्रत्येक दृष्टि से अनुपम।

२६ आर्य समाज के नियम ८० पैसे

ज्ञान की अनुपम खोज : महर्षि के प्रिय शिष्य पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या द्वारा लिखित : पहला संस्करण १८९७ में छपा था। आर्य समाज को जानने समझने का अपूर्व साधन है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२७ लाल–आंधी ८० पैसे

कम्यूनिज्म क्या है, कैसा है यह क्या करेगा इस का असली रूप महात्मा नारायण स्वामी, वैद्य गुरुदत्त और श्री चिरंजीलाल प्रेम की प्रभावपूर्ण लेखनी द्वारा प्रचार के लिये प्रस्तुत है।

२८ धर्म–चिंतन २)

धर्म, ईश्वर, आत्मा और परमात्मा का प्रभावपूर्ण सरल चित्रण श्री ओमप्रकाश त्यागी द्वारा लिखित। पहली बार, अपने ढंग की अनूठी पुस्तक

२९ दहला पागल हो गया ८० पैसे

पौराणिकों के प्रलाप का मुंह तोड़ उत्तर पं० शान्तिप्रकाश जी द्वारा प्रस्तुत है

३० वैदिक विचारधारा २० पैसे

३१ मर्यादा पुरुषोत्तम राम ३० पैसे

राम का आदर्श जीवन आकर्षक आवरण और लेखक पं दीनानाथ सिद्धांतालंकार—

३२ वैदिक भक्तिवाद २० पैसे १५) सैकड़ा

भक्ति का रस बरसे तो जीवन सरसे, इसे पीने पिलाने के लिए पुस्तक उपस्थित है।

३३ विश्व को आर्यसमाज का संदेश–१५) सैकड़ा

धर्म, सत्य और मानवता के लिए आर्य समाज की आवश्यकता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
का प्रभावपूर्ण चित्रण : आर्य समाज का सदस्य बनने का निमन्त्रण पं० भारतेन्द्र नाथ द्वारा लिखित अनुपम प्रचार पुस्तक।

१०) सैकड़ा के उपयोगी प्रचार ट्रैक्ट

३४ आर्य समाज क्या मानता है ?	मदन मोहन विद्यासागर
३५ विश्व को वेद का संदेश—	—भारतेन्द्र नाथ
३६ महर्षि दयानन्द की विशेषताएं	—महात्मा नारायण स्वामी
३७ आर्य समाज की विचार धारा—	—गंगा प्रसाद उपाध्याय
३८ आर्य समाज की मान्यताएं—	—पं० राम चन्द्र देहलवी
४० आर्य कौन ?	—रघुनाथ प्रसाद पाठक
४१ आर्य समाज के दस नियम	—रघुनाथ प्रसाद पाठक

४२ **धर्म ग्रन्थावलोकन** १) ५०

संसार के प्रमुख धर्म ग्रंथों का प्रामाणिक विस्तृत अध्ययन करने के लिये प्रो० रत्नचन्द शर्मा का महान्, अनुपम ग्रंथ स्वाध्याय के लिए प्रेरक और खोजपूर्ण : सत्य जानने का मर्म्म दर्शक संग्रह योग्य।

ईसाइयत सम्बन्धी पुस्तकें

४३ ईसाई पादरी उत्तर दें।	—स्वामी श्रद्धानन्द	३) सैकड़ा
४४ A challenge to the Christian Faith		३) सैकड़ा
४५ Bible in the Balance	चार्ल्स स्मिथ	१५) सैकड़ा
४६ ज्ञान विज्ञान का शत्रु ईसाई मत	—ओम्प्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
४७ पोप की सेना का भारत पर हमला	—भारतेन्द्रनाथ	१०) सैकड़ा
४८ ईसाइयों की प्रचार प्रणाली	—जगत्कुमार	१०) सैकड़ा
४९ पादरियों को चुनौती	स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	१०) सैकड़ा
५० बाइबल को चुनौती	—ओम्प्रकाश त्यागी	१५) सैकड़ा
५१ और पादरी भाग गया	—ओम्प्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५१ ईसाइयत की वास्तविकता —शांतिप्रकाश महोपदेशक १०) सैकड़ा
५२ बाइबल कसौटी पर —चार्ल्स स्मिथ १५) सैकड़ा

सम्पूर्ण साहित्य अधिक-से-अधिक मंगाकर बांटें

चौथायी धन अगाऊ भेजें ! रेलवे स्टेशन का नाम लिखें

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

हिन्दी सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त
अभी मिल रहे हैं—

आप केवल यह करें कि जन-ज्ञान के
एक साथ १० नए सदस्य बना कर १००)
हमें भेज दें।

हम उपहार रूप में १० हिन्दी सत्यार्थप्रकाश
आपको भेज देंगे।
शीघ्रता कीजिए :
योजना केवल ५०० सत्यार्थ प्रकाश बाँटने की है।

चारों मूल 'वेद' प्रत्येक आर्य के
घर में होने ही चाहिएं

केवल १२) में चारों वेद शीघ्र मंगाइए,
: देरी न करें : डाक-व्यय पृथक

संपादक जन - ज्ञान - प्रकाशन
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली—५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के सर्वश्रेष्ठ

साप्ताहिक सार्वदेशिक

के सदस्य बनिए

वार्षिक मूल्य १०)—नमूना बिना मूल्य मंगाएं

●

संपूर्ण वैदिक साहित्य के लिए

स्मरण रखिए

सार्वदेशिक पुस्तक भंडार

रामलीला मैदान नई दिल्ली-१

सूची पत्र मंगाईए

●

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा सम्पादित

अंग्रेजी में आर्यसमाज का एक मात्र मासिक

VEDIC-LIGHT

के सदस्य बनिए

नमूना पत्र लिखकर बिना मूल्य मंगाइये

वार्षिक मूल्य १० रु० विदेश में १ पौंड

★

रामगोपाल—मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

रामलीला मैदान नई दिल्ली-१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

केवल जन-ज्ञान के सदस्यों के लिए

संध्या-योग

वैदिक अध्यात्म व योग विद्या का अनुपम ग्रन्थ स्व० ब्र० योगीराज श्री जगन्नाथ जी पथिक लिखित

२०) के स्थान में १०) में

आदेश में ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें : धन अग्रिम भेजें। डाक व्यय २)

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग नई दिल्ली-५

संपादक--मुद्रक - प्रकाशक पंडिता राकेशरानी द्वारा श्री मनमोहन प्रिंटिंग प्रेस दिल्ली में छपवा कर जन-ज्ञान कार्यालय १५६७ हरध्यान सिंह मार्ग नई दिल्ली ५ से प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब अचानक अतिथि पधारें

तो आपको परेशान होने तथा घबराने की
जरूरत नहीं। तत्काल चन्दू की स्वादिष्ट
मिठाइयाँ मंगाइये और बड़ी उदारता
से अल्पाहार तथा खाने पर उनके
सामने पेश कीजिये। अपने
अतिथि को प्रसन्न करने का
यह सबसे मधुर और सहज
उपाय है।

विदाई भेंटों के लिए चमकते-दमकते डिब्बों में

चन्दू की मिठाइयाँ

शुद्ध घी की मिठाइयाँ

पंजाबी चन्दू हलवाई

कराँची वाला

185, Walkeshwar Road, Teen Batti, Bombay-6.
Phone : 363625

BRANCHES :	*Phone :*
(1) Jhaveri	313729
(2) Grant Road	351780
(3) Colaba	213813
(4) Dadar	442012
(5) Worli	372796
(6) Sion	473889
(7) Thakurdwar	355683
(8) Fort	2539212

Factory : **Chandu Bhawan, Grant Road** *Phone No.* 372628

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

R.N. 10711/65 जन-ज्ञान, (मासिक) Regd. No. D. 1631
१५६, हरध्यानसिंह रोड, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi